सोनभद्र की आदिवासी जनजातियों की भाषा का अध्ययन

(इलाहाबाद विश्वविद्यालय में डी० फिल उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध प्रबन्ध)

निर्देशक -

डा० मालती तिवारी

प्रोफेसर एवं अध्यक्ष

हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषायें

इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

२५ जनवरी 2001

प्रस्तोता :

संजय चतुर्वेदी

संजय चतुर्वेदी

शोध छात्र (हिन्दी)

इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

प्राक्कथन

बोली-विज्ञान भाषा-शास्त्र का अद्यतन सदर्भ है। इस विश्लेषण प्रक्रिया को ध्यान में रखकर अमेरिका में दो विधाए विकसित हुई है। एक है बोली-विज्ञान के अन्तर्गत किसी क्षेत्र विशेष अथवा जाति विशेष में प्रचलित भाषिक प्रतीकों का ध्वन्यात्मक (ध्वनिग्रामिक) एवं पदग्रामिक विश्लेषण, और दूसरा है बोलीगत भिन्नताओं के आधार पर एटलस का निर्माण। बोलियों के प्रचलित रूप को आधार बनाकर इलाहाबाद विश्वविद्यालय में कई शोध-प्रबन्ध प्रस्तुत हुए हैं। इनमें डा० रामस्वरूप चतुर्वेदी का **आगरे जिले की बोली,** डा० महावीर शरण जैन का **मेरठ एवं बुलन्दशहर की बोली** तथा डा० मूल शकर शर्मा का **मिर्जापुर की आर्य बोलियों का संकालिक अध्ययन** महत्वपूर्ण हैं। इन प्रबन्धों में भाषाशास्त्र की प्रचलित आधुनिक प्रक्रियाओं और सदर्भों का उपयोग देखा जा सकता है।

उत्तर-प्रदेश के जनपदों में मिर्जापुर और सोनभद्र अपनी खनिज सम्पदा, विद्युत उत्पादन-पारेषण की क्षमता के कारण एशिया में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। प्राचीनतम सभ्यता के अवशेष विश्व में जिन स्थानों में सुरक्षित हैं, सोनभद्र जनपद उनमें एक है। सोननदी की घाटी में विद्यमान गुफा-चित्र आदि मानव के निवास की कहानियों के साक्षी हैं। सोनभद्र जनपद दो बड़े राज्यों की सीमा का संस्पर्श करता है। मगध साम्राज्य की थलवाहिनी का यह मार्ग रहा है। भारशिवों की संकल्पना इस जनपद में विद्यमान शिव मंदिरों में आज भी भग्न मूर्तियां अपने क्रोड़ में छिपाये जीवित हैं। सोनभद्र जनपद उत्तर प्रदेश की लोक संस्कृति का प्राण है, क्योंकि आदिवासी जातियों का जितना बड़ा समूह यहां रहता है, वह अन्यत्र नहीं है। इन आदिवासी जातियों की परम्परायें और प्रथायें जनपद में प्राप्त गुफाचित्रों में अंकित जीवन शैली के बहुत करीब हैं। यह अनुमान किया जा सकता है कि जिन लोगों ने लाखों वर्ष पूर्व सोनघाटी में चित्र बनाये, आज के आदिवासी उन्हीं के वंशज तथा पारिवारिक विकास के प्रमाण हैं। कुछ जातियां यहाँ बाद में आई। इन जातियों की अपनी प्रथायें हैं, परम्परायें हैं व विश्वास हैं। कभी हर जाति अपनी स्वतंत्र भाषा बोलती रही होगी। आज इनकी लोक परम्परा ही लुप्त नहीं हो रही है, इनमें प्रचलित भाषिक प्रतीक भी समाप्त हो रहे हैं। जनपद के आदिवासियों में धांगर, जिसे कुरुख व उरावं भी कहा गया है, आज तक अपनी मौलिकता बचाये हुए हैं। इनकी अपनी भाषा है, जो प्रचलित स्थानीय भाषा से भिन्न है। अतः एक सांस्कृतिक कर्तव्य मानकर इन्हें सुरक्षित रखना सामाजिक दायित्व लगता है।

सोनभद्र जनपद की भाषा के सम्बन्ध में कई काम हुए हैं। इनमें प्रथम है ग्रियर्सन का **भाषा सर्वेक्षण**। डा० ग्रियर्सन ने सोनभद्र की भोजपुरी की भी चर्चा की है तथा सोन के दक्षिण निवास करने वाले लोगों की भाषा को सोनपारी कहते हुए संकेत भर दिया है। इतने पुराने काम में ये अल्प संकेत आज भी प्रकाश-किरण की तरह हैं। इस प्रकरण में डा० बाबू राम सक्सेना ने **अवधी का विकास** नामक शोध प्रबन्ध में प्राप्त अवधी रूपों की भी चर्चा की है। **भोजपुरी का उद्भव व विकास** नामक अपने शोध प्रबन्धों में डा० उदय नारायण तिवारी ने पश्चिमी भोजपुरी का उल्लेख करते हुए मिर्जापुर की भोजपुरी (पहले सोनभद्र इसी में सम्मिलित था) को उसी में रखा है। इस व्याख्या में सोनभद्र की भोजपुरी के रूप छूट गये है। इलाहाबाद विश्वविद्यालय में प्रस्तुत उल्लिखित शोध प्रबन्ध तथा डा० सक्सेना और डा० तिवारी का अध्ययन भाषा शास्त्र के क्षेत्र में मील के पत्थर की तरह है। यहीं से

मिर्जापुर के संबध में एक और कार्य हुआ है – जिसमें भाषिक विश्लेषण की वर्णनात्मक पद्धति को स्वीकार करते हुए मिर्जापुर – सोनभद्र में प्रचलित अवधी, भोजपुरी एवं बघेली रूपों की व्याकरणिक कोटिया निर्धारित की गयी हैं। यह प्रबन्ध है – **मिर्जापुर की आर्य बोलियों का संकालिक अध्ययन।** शोधकर्ता ने अपने प्रबन्ध की भूमिका में जनपद की आदिवासियों का उल्लेख करते हुए उन पर कार्य किया जाय इस बात की आवश्यकता बताई है। उल्लिखित प्रबन्ध में डा० मूल शकर शर्मा ने धांगर जाति में प्रचलित कुछ शब्दों, विशेषणों (सख्यावाची) का विवरण भी दिया है और लिखा है कि यह जाति 6 से अधिक सख्या का प्रयोग नहीं करती। इस प्रबन्ध के लिखे जाने के बाद अन्तर इतना ही आया है कि इस जाति के पढे लिखे लोग सौ तक गिनती बोलने लगे हैं, लेकिन उच्चरित रूप भोजपुरी के हैं। प्रत्येक शोध-प्रबन्ध की अपनी सीमायें थी। इस कारण आदिवासियों की भाषा का विश्लेषण बाकी ही रह गया। आज इन जातियों में अधिकांश अपनी सास्कृतिक परम्परा छोडने की स्थिति में आ गई हैं।

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध को प्रस्तुत करने की प्रेरणा इन्हीं सदर्भो से मिली है। आज की तिथि तक यह विषय अछूता है। सोनभद्र का निवासी होने के कारण मेरे मन में इन चुनौतियों को स्वीकार करने की बात मन में उठती रही है। जब भी समाचारपत्रों में छपता ' अब भी चुनौती है धांगरों की भाषा ' तो लगता कि इस विषय के अध्ययन की अनन्त सभावनाये हैं। मेरे गुरूजनों में डा० टी एन. सिह, एम ए.(हिन्दी, भाषा विज्ञान) से इस प्रकरण पर चर्चा होती। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के भाषा विज्ञान के प्रोफेसर श्री ए एन सिह, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के भाषा विज्ञान के अध्यक्ष प्रोफेसर सत्यव्रत शर्मा एवं डा० विश्वम्बर नाथ दूबे ने इस कार्य के लिए प्रोत्साहित किया। भाषाशास्त्र के शीर्ष विद्वान डा० हरदेव बाहरी उस समय जीवित थे। उनका कहना था कि आदिवासी के किसी एक गांव की भाषा का विश्लेषण डी.फिल. के लिए पर्याप्त है। इन विद्वानों की प्रेरणा ने ही मुझे इस कार्य से जोड़ा।

भाषिक विश्लेषण,वह भी आदिवासियों की भाषा का,एक दुरुह कार्य है। के. एम. इन्स्टीट्यूट आगरा के विद्वानों तथा प्रयोगशाला से कुछ सीखने का अवसर मिला और सोनभद्र जनपद के दुर्गम स्थानों में आदिवासियों के बीच जाकर सामग्री संकलन हुआ। आदिवासियों में आज की तिथि में केवल धागर जाति ही ऐसी मिली,जो अपनी भाषा बोलती है। शेष जातियों ने भोजपुरी के स्थानीय रूप अपना लिये हैं। इस तरह यह प्रबन्ध धांगरी व अन्य जातियों (आदिवासी)की भाषा का तुलनात्मक अध्ययन जैसा हो गया है। इससे यह तो तय है कि अन्य आदिवासी जातियें में कुछ जातीय शब्द ही उनके अपने बचे हैं। धागरी में उधार की शब्दावली बहुत आयी है,पर उनकी भाषा का मौलिक रूप आज भी बचा हुआ है।

प्रस्तुत अध्ययन नौ अध्यायों में विभाजित हैं। पहले अध्याय में आदिवासियों का परिचय है। इसमें उनकी परम्परा, जातीय संस्कार और वर्तमान जीवन पर प्रकाश डाला गया है।

अध्ययन का दूसरा अध्याय जनपद के भाषिक-भूगोल की व्याख्या है। जनपद की प्रमुख भाषा भोजपुरी है,जिसके दक्षिण-पश्चिम में बघेली तथा उत्तर-पश्चिम में अवधी बोली जाती है। आदिवासी इस पूरे क्षेत्र में फैलकर अलग – अलग गाँवों में बसे हैं। किसी एक गांव में कई आदिवासी जातियां एक साथ निवास करती हैं। एक ही गांव में भोजपुरी तथा आदिवासी जातियों की भाषा का अद्भुत

सगम मिलता है। सोनभद्र मुख्यालय से लगभग 20 किमी० दक्षिण पूर्व में पटना, सिलथम, दरमा, दिनारी ऐसे ही गॉव है। बोली-भूगोल में सीमान्त रेखा, विभाजक रेखा (आइसोग्लास लाइन) द्वारा इन भिन्नताओं पर प्रकाश डाला गया है। उन भौगोलिक सदर्भो की भी व्याख्या हुई है। जिसके कारण भाषा रूप प्रभावित होते हैं।

प्रबन्ध का तीसरा अध्याय आदिवासियों में प्रचलित ध्वनियों का ध्वन्यात्मक एव ध्वनिग्रामिक विश्लेषण है। स्वरों एवं व्यंजनों के वितरण की स्थितिया सोदाहरण प्रस्तुत की गयी हैं।

अध्याय 4,5,6,7,8,9 भाषिक रूपों की पदग्रामिक व्याख्या है। अध्याय 4 में संज्ञा रूपों की भिन्नतायें तथा उनकी विभक्तियों की चर्चा है। इसी प्रकरण में धागरों की भाषा का गूढ़ रूप प्रकट होता है। उनकी शब्दावली स्थानीय लोगों के लिए भी दुर्बोध है। धागर जाति की प्रवृत्ति भाषिक गठन में आज भी योगात्मक है।

अध्याय 5 में सर्वनामों के विविध भेद अपने सपरिवर्तको के साथ अंकित हैं।

अध्याय 6 में विशेषणों का वर्णन है। विशेषणों में अद्‌भुत भिन्नतायें है। धागरों में सख्यावाची अपने मूलरूप में आज भी 6 से अधिक नहीं है।

अध्याय 7 क्रिया पदों की व्याख्या है। क्रिया के जितने भेद अन्य जातियों में है, धागरों में नहीं हैं।

अध्याय 8 में क्रिया विशेषणों का विश्लेषण है।

अध्याय 9 आबद्ध रूपों का विश्लेषण है। इस वर्ग में व्युत्पादक एवं व्याकरणिक दोनों श्रेणियों के प्रत्यय विश्लेषित किये गये हैं। अध्याय में अन्य जातियों में प्रचलित आबद्ध रूप अधिक व्यक्त हुए है। प्रस्तुत शोध प्रबन्ध भाषा के पदग्रामिक विश्लेषण तक सीमित है। प्रबन्ध के अन्त में धांगरो तथा अन्य आदिवासी जातियों में प्रचलित शब्दावली तथा वाक्यावली की लंबी सूची दी गई है ताकि विद्धतजन इस सामग्री से प्रबन्धके गुण - दोषों का मूल्याकंन ही न कर सकें, अपितु यह सामग्री आगे भी भाषिक विश्लेषण के काम आये।

लोक साहित्य के मर्मज्ञ विद्वान डा० अर्जुनदास केसरी को डा० विद्या निवास मिश्र ने पत्र लिखते हुए इस अंचल की भाषा के अध्ययन की लिखित प्रेरणा दी है। डा० केसरी सदैव मुझे उद्‌बोधित करते रहे कि मैं आदिवासियों की भाषा पर कार्य करू। प्रथमत मैं इन दोनों विद्वानों के प्रति अपनी श्रद्धा निवेदित करता हूँ, जिनकी सत्प्रेरणा प्रबन्ध में मूर्त हुई।

अपने शोध प्रबन्ध की निर्देशिका, माननीया डा० मालती तिवारी के चरणों की मैं वन्दना करता हूँ, जिनकी ममता और वत्सल भाव मुझे अंधेरे में रास्ता दिखाते रहे। विषय विश्लेषण की गहनताओं में मुझे उन्होंनें राह दिखायी, धांगरों की जटिल शब्द-रचना और अर्थ-प्रक्रिया को सरल करते हुए उसे बोधगम्य बनाया, भाषाशास्त्र की सैद्धान्तिक संरचना दृष्टि उन्होंनें सरल, सहज, बोधगम्य बनायी, मैं उनके आलोक के सन्मुख विनयावनत हूँ। अपनी शैक्षिक तथा प्रशासकीय व्यस्तताओं में भी उन्होंने मुझे पर्याप्त समय दिया, समझाया, मैं बार - बार उनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ।

हिन्दी विभाग के शिक्षकों डा० सत्य प्रकाश मिश्र, डा० राजेन्द्र कुमार वर्मा का भी आभारी हूँ जिन्होंने रास्ता दिखाया। हिन्दी साहित्य के यशस्वी विद्वान डा० रामस्वरूप चतुर्वेदी, डा० जगदीश गुप्त का मैं ऋणी हूँ जिनके ग्रंथों ने प्रकाश-स्तम्भ का कार्य किया।

अपने पिता डा० मूल शंकर शर्मा तथा आदरणीया माता के श्रीचरणों में श्रद्धावनत हूँ। उनकी असीम प्रेरणा और सहयोग की चर्चा करके मैं उनके स्नेह को छोटा नहीं करना चाहता।

बडे भइया विजय शकर चतुर्वेदी, बहनों पुष्पा मिश्रा एव बिन्दु चतुर्वेदी ने प्रबन्ध की जटिलताओं से जूझने की प्रेरणा दी व टकण को सुगम बनाया। बडी बहनों उमा त्रिपाठी व उषा शुक्ला का आशीर्वाद भी प्रबन्ध के साध्य होने का कारक रहा।

मेरी शोध यात्राओं की दुर्गमताओं में जिनके सानिध्य एव सहयोग ने मुझे कहीं भी अकेला नही होने दिया, उनमें भाई सुभाष त्रिपाठी, दीपक केसरवानी, उमा शकर, अनिल पाण्डेय, शिवकुमार, तथा अनुजवत् राजन चतुर्वेदी, सतोष सिंह तथा प्रिय रमाशकर पाण्डेय का स्नेहिल ऋण सदैव मेरे ऊपर रहेगा। आदिवासी जाति के जिन सूचकों ने मुझे सहयोग देकर अध्ययन को सुगम बनाया, उनके प्रति मैं बार - बार कृतज्ञता प्रकट करता हूँ। सिलथम ग्राम के धांगर युवकों भाई रवि शंकर व सम्मतराम का मैं विशेष ऋणी हूँ। क्रिया-पद की जटिलताओं को वे हृदयगम करते, फिर अपनी भाषा का उदाहरण प्रस्तुत करते।

इलाहाबाद विश्वविद्यालय ग्रथागार के पुस्तकालय अध्यक्ष तथा सहायको के प्रति भी मैं कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ।

सोनभद्र जनपद के जिलाधिकारी, सूचना अधिकारी तथा अन्य स्थानीय अधिकारियों ने शोध यात्राओं को सहज बनाया, मैं उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट करता हूँ।

प्रबन्ध के कम्प्यूटर आपरेटर भाई *सर्फराज खान* के प्रति विशेष आभारी हूँ जिनका श्रम सार्थक होकर प्रबन्ध के रूप में खड़ा है।

संजय चतुर्वेदी

संजय चतुर्वेदी

अनुक्रमणिका

अध्याय 1

आदिवासियों का परिचय

सोनभद्र: एक परिचय

सोनभद्र विन्ध्याचल मण्डल का एक जनपद है,जो मण्डल के दक्षिणी परिक्षेत्र में बसा हुआ है। इस मण्डल में तीन जिले हैं- उत्तर में संत रविदास नगर (भदोही), केन्द्र में मिर्जापुर जनपद तथा दक्षिण में सोनभद्र जनपद अवस्थित है। कुछ वर्ष पूर्व यह जनपद मिर्जापुर का ही भाग रहा है। सन् 1989 में उत्तर प्रदेश-शासन की घोषणा के अनुसार मिर्जापुर जनपद की दो तहसीलें- राबर्ट्सगंज व दुद्धी को मिर्जापुर से अलग करके सोनभद्र को एक स्वतंत्र इकाई के रूप में मान्यता प्राप्त हुई है। भौगोलिक दृष्टि से इसका क्षेत्रफल 6819 28 वर्ग किमी है जो 23 52 और 25 32 उत्तरी अक्षांश तथा 82 72 एव 83 33 पूर्वी देशान्तर के बीच स्थित है। आज की तिथि में यह उत्तर प्रदेश का सबसे दक्षिणी जिला है। इस जनपद के पूर्व में बिहार राज्य के दो जिले- रोहतासगढ व पलामऊ सटकर बसे हैं। दक्षिण में मध्य प्रदेश का सरगुजा व सीधी का हिस्सा है। दक्षिण - पश्चिम में है रीवा तथा पश्चिम व उत्तर में मिर्जापुर जनपद का परिक्षेत्र फैला है। सोनभद्र कोई विशेष स्थान नहीं है,न ही इस नाम से कोई गाव, कस्बा या नगर है। इन स्थितियों में सोनभद्र नाम जनपद के पूरे भौगोलिक विस्तार एव परिचय का प्रतीक है।

इस जनपद के लगभग बीच से सोन नदी पश्चिम से पूरब की ओर बहती है,जो पूरब में बिहार के रोहतासगढ जिले से होते हुए आगे निकल जाती है। इस सोन नदी को एक सांस्कृतिक विरासत व गौरव प्राप्त है। पौराणिक अख्यानों में इसे शोण या श्रोणभद्र कहा गया है। देश में जिन नदों का उल्लेख होता है,उनमें शोणभद्र की चर्चा नद के रूप में पौराणिक संदर्भ करते रहे हैं। इतिहास की विश्रुत मान्यताओं, संस्कृति की पुरा्गाथाओं और देश की अचल मर्यादाओं का साक्षी सोनभद्र,इस जनपद के गौरव का प्रतीक है। इतिहास के इसी दायभाग को सार्थक करते हुए शासन ने इस जनपद को इसी अभिधान से गौरव दिया है। अतः सोनभद्र एक विश्रुत परम्परा का साक्षी बनकर आज वर्तमान का एक दस्तावेज बना हुआ है।

अपनी ऐतिहासिक- सास्कृतिक- सामाजिक यात्रा में सोनभद्र विन्ध्यमण्डल में नहीं,अन्य मण्डलों में भी अपनी अलग पहचान व स्वतत्र अस्तित्व रखता है। विश्व सभ्यता के इतिहास में घाटी-सभ्यता को प्राचीनतम माना गया है।क्योंकि इसी से जुडी हुई है गुफा-मानव की आदिम कहानी। सोननदी मध्य प्रदेश के रीवा जनपद से होती हुई इस जिले में आती है और जितनी दूर तक इस परिक्षेत्र से गुजरती है उसके दोनों ओर कैमूर पर्वत की घाटियां फैली हैं। दूर तक फैला है घना जगल, जिसे संस्कृत आचार्यों ने '**विन्ध्याटवी** ' कहा है। नदी के दोनों किनारों की ओर फैले जंगल के बीच पहाड की जो कन्दरायें या गुफायें स्थित हैं,उनमें कभी आदिम मनुष्य का निवास रहा है। इस मनुष्य में इन गुफाओं के भीतर केवल ऋतुओं के झंझावात से ही अपनी रक्षा नहीं की, वह जब भी स्थिर हुआ, पर्वत शिलाओं को फलक बनाकर उस पर कितने ही चित्र उकेरे। इतिहासकारों ने इन चित्रों को प्रागैतिहासिक काल के चित्र माना। इस सोननदी के साथ इस जनपद में दो और बड़ी नदियां हैं,जो सोननदी की पूरक पोषक हैं। ये नदियां है रेण व बीजुल। दोनों जनपद के प्रसिद्ध ऐतिहासिक दुर्ग अगोरी के पास आकर सोन में मिल जाती हैं। इस रेण नदी पर रिहन्द बांध बना है। चूकि ये नदियां भी पहाड़ों के बीच से आती हैं,इस कारण इनकी अपनी घाटिया हैं। सोनभद्र जनपद में एक ऐसी भी नदी है जो पूरब से पश्चिम की ओर बहती है। यह नदी है बेलन। बेलन नदी जनपद की घोरावल तहसील

में कैमूर पर्वत श्रृखला की ऊचाइयों से उतरकर नीचे पश्चिम की ओर मिर्जापुर जनपद की ओर निकल जाती है। बेलन की घाटी में वही प्राचीन गुफा-चित्र बिखरें हैं, जो इस बात का प्रमाण देते हैं कि प्रागैतिहासिक काल का आदिम मनुष्य कभी इन घाटियों में निवास करता रहा है।

जनपद की वर्तमान स्थिति का जातिगत विश्लेषण करने पर जो समाजशास्त्र दिखायी देता है, उसमें इस पूरे परिक्षेत्र में एक वे हैं जिनकी 90 प्रतिशत की जनसंख्या का रग काला है और जो छोटी - छोटी उपजातियों की इकाइयों में बसे हुए हैं। सबकी अपनी - अपनी प्रथायें, परम्परायें, अपने टोटेम हैं। अपने जातिगत विश्वास हैं और उपासना तथा कर्मकाड के अपने तौर तरीके हैं। यह अनुमान किया जा सकता है कि इस पूरे परिक्षेत्र में बसे ये लोग, उसी आदि मानव की विकास गाथा के आधुनिक अवशेष हैं। दूसरा वर्ग, इन सबसे अलग - थलग पौराणिक मान्यताओं व संन्दर्भो से जुड़कर धार्मिक प्रतीकों को साथ लेकर इस परिक्षेत्र में कालान्तर में आकर बस गया है। यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि इनमें पहली श्रेणी के व्यक्ति ही यहाँ के मूल निवासी हैं जिन्हें यहाँ का आदिवासी कहा जा सकता है।

सोनभद्र का राजनैतिक व प्रशासनिक स्वरूप

प्रशासनिक दृष्टि से सोनभद्र को तीन तहसीलों में बाँटा गया है -

1 राबर्ट्सगंज तहसील 2 दुद्धी तहसील 3 घोरावल तहसील

विकास खण्ड की दृष्टि से सोनभद्र राबर्ट्सगंज, चतरा, नगवां, घोरावल, बभनी, दुद्धी, म्योरपुर एवं चोपन आठ भागों में विभाजित है। भूमि की बनावट व प्राकृतिक दृष्टि से इसे दो सम्भागों में बाँटा जा सकता है।

1 मध्यवर्ती पठार- इस सम्भाग का क्षेत्र विन्ध्य पर्वत के अन्तर्गत पठारी हिस्से से होता हुआ कैमूर पर्वत श्रृंखला की अन्तिम सीमा सोननदी तक फैला है जिसमें जनपद का 50 प्रतिशत से अधिक भाग सम्मिलित है। राबर्ट्सगंज, घोरावल, चतरा, नगवा, विकास खण्ड इसमें स्थित है। कर्मनाशा व चन्द्रभागा अनेक छोटी पहाड़ी नदियां बहती हुयी गंगा में मिलती हैं। यह सम्भाग गंगा की घाटी से 400 फुट से लेकर 1000 फुट की ऊचाई पर है।

2 सोनघाटी- राबर्ट्सगंज तहसील का चोपन विकास खण्ड एवं दुद्धी तहसील का दुद्धी, बभनी तथा म्योरपुर विकास खण्ड इस उपसम्भाग में स्थित है जो सोननदी के दक्षिण का इलाका है। सिंगरौली, सोनघाटी एवं दुद्धी घाटी अपनी प्राकृतिक सम्पदा व उपजाऊ भूमि के लिए महत्वपूर्ण है।[1]

भाषिक विश्लेषण के विभेदक आधार व सोनभद्र

प्रसिद्ध भाषा शास्त्री नाइडा अपनी पुस्तक मार्फलाजी में भाषिक सम्बन्धों के निर्माण के लिए परस्पर बोधगम्यता का उल्लेख करता है। साथ ही इस बात की भी चर्चा करता है कि कुछ ऐसी भी इकाइयां हैं, जो इस बोधगम्यता को सहज नहीं रहने देतीं और एक भेदक इकाई के रूप में कार्य करती हैं। इन इकाइयों में भौगोलिक स्थितियों का स्थान सबसे महत्वपूर्ण है। यह पहले ही कहा जा चुका है कि सोननदी इस पूरे जनपद को दो भागों में बाँट देती है, सोननदी का उत्तरी हिस्सा तथा सोन का दक्षिणी हिस्सा। इस दक्षिणी भाग को

1- विकास पुस्तिका सोनभद्र, पृष्ठ संख्या 1 सूचना एंव जनसम्पर्क विभाग, सोनभद्र

मिर्जापुर डिस्ट्रिक्ट गजेटियर में सोनपार क्षेत्र कहा गया है। विश्रुत भाषा शास्त्री जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन भी इस क्षेत्र को सोनपारी क्षेत्र मानते हैं। सोनपार के दक्षिण परिक्षेत्र को, जिसका अधिकाश हिस्सा जगलों से ढका है, तीन बड़ी नदियां छोटे उपखण्डों में विभाजित कर देती है। ये नदिया हैं- कनहर, रेण व बीजुल। वर्षा ऋतु ही नहीं, अन्य समय में भी ये नदिया परस्पर सम्बन्ध स्थापित करने में बडी बाधा रही हैं। इस कारण इस सोनपार के परिक्षेत्र में निवास करने वाले लोगों (आदिवासियों) में आपसी सम्बन्ध बडी कठिनाई से बनते रहे हैं। इस कारण इस भौगोलिक परिक्षेत्र में बड़ी - छोटी इकाइयों ने भाषिक भिन्नता स्थापित करने में बड़ी अहम भूमिका निभायी है।

भौगोलिक इकाइयों में कैमूर पर्वत श्रृखला भी दूसरा महत्वपूर्ण बिन्दु है, जिसके कारण सोनभद्र जनपद दो भागों में बटा स्पप्ट दिखता है। इसमें कैमूर पर्वत के दक्षिण का भाग सबसे महत्वपूर्ण है। इस भाग में उल्लिखित नदिया भी बहती हैं, और इस परिक्षेत्र में खनिज सम्पदा का विपुल भण्डार आज तक सुरक्षित दिखायी पड़ता है, जिसके कारण एशिया के मानचित्र में सोनभद्र अपनी अलग पहचान रखता है। जल ससाधन व खनिज सपदा, विशेषत. कोयला क्षेत्र ने मिलकर सोनभद्र के इस दक्षिणी परिक्षेत्र को आज ऊर्जाचल बना दिया है। घने जंगल से इस दक्षिणी भूभाग की सांस्कृतिक विकास यात्रा के तीन पडाव हैं-

- सभ्यता की प्रारम्भिक स्थिति, जिसमें कभी आदि गुफा मानव रहता था।
- विकास यात्रा की मध्यकालीन स्थिति जब आदिवासी जातियों का अन्य प्रान्तों के आदिवासियों से यहाँ सम्बन्ध हुआ है अथवा चेरो तथा कुरूख या उराव जैसी जनजातियां यहाँ बाहर से आकर बसीं अथवा किसी कारणवश यहाँ की जातियाँ स्थान-स्थान पर विस्थापित हुईं।
- सांस्कृतिक विकास क्रम की तीसरी स्थिति वह है, जब इस परिक्षेत्र में औद्योगिक विकास हुआ है तथा उच्च तकनीक, प्रौद्योगिकी, जल ससाधन अथवा ताप ऊप्मा से यह परिक्षेत्र बिजली क्षेत्र बना है तथा आधुनिकतम सभ्यता के सम्पर्क में यहाँ का आदिवासी भी आया है इस तीसरी स्थिति के कारण यातायात व संचार के साधन भी बढ़े हैं तथा भाषिक सम्बन्ध निर्धारण के पुराने कारण समाप्त हुये हैं। आदिवासियों की भाषा - वेशभूषा व खानपान सब में परिवर्तन हुआ है।

जहाँ तक कैमूर के उत्तरी भाग का सम्बन्ध है सोनभद्र का यह हिस्सा पूरब से पश्चिम की ओर एक समतल मैदान की तरह फैला हुआ है। और इस परिक्षेत्र में आदिवासियों की उपस्थिति गिने - चुने गाँवों में ही मिलती है। शेष स्थानों पर अन्य सवर्ण जातियों का कब्जा है। चूंकि कैमूर के उत्तरी अचल में कोई प्राकृतिक विभाजन नहीं है, इस कारण इस पूरे परिक्षेत्र में भाषिक विविधता के घटक नहीं मिलते। भाषा एक अर्जित उपादान है, जो वशानुगत रूप में परिवारों में क्रमशः आगे बढ़ता है। चूकि सोनभद्र के सोनपारी क्षेत्र अथवा कैमूर के दक्षिणी भूभाग में तमाम आदिवासी जातियाँ निवास करती हैं, इस कारण भाषिक परम्परा की भिन्नता में वंश भिन्नता या जाति भिन्नता भी विभेद का स्वतंत्र घटक है।

यदि आज का सभ्य कहा जाने वाला मानव अपनी सभ्यता की खोज करना चाहे तो उसे असभ्य जातियों का अध्ययन करना पड़ेगा। यदि ये न होते तो हम सभ्य न होते।

— मैक्स मूलर

(पिक्चर्स आन दि ओरजिन एण्ड ग्रोथ आफ रेलिजन से सन्दर्भित)

सोनभद्र जनपद और यहाँ के आदिवासी

जनपद में जो प्राचीनतम जातियाँ निवास करती हैं, उनमें पहली जाति है – अगरिया।

अगरिया

रसेल इसे गोड़ जाति की उपशाखा से जोड़ते हैं और यह मानते हैं कि यह अनार्य जाति है। इस जाति का नामकरण संभवत आग का उपयोग करने के कारण हुआ है। इन्हें लुहार जाति की उपजाति भी माना गया। 1 यह जाति जगलों में निवास करती है तथा तेकम या तेका वृक्ष की उपासना करती है। इनकी अपनी शाखायें – उपशाखायें है तथा जाति का अपना समाजशास्त्र है। इस जाति में सामान्यतया बाल-विवाह की प्रथा नहीं है तथा विवाह लडके का पिता लडकी के पिता के पास संदेश भेजकर करता है। निश्चय होने के बाद 5 सेर उडद गाँव के पुजारी बैगा के पास भेजता है जिसे लड़की एक पइली (बाँस से बना बर्तन) में रखकर फिर से पुजारी के पास पहुचाती है। जन्म- और मृत्यु के संस्कार भी इस जाति में अपने ढंग से मनाये जाते हैं। इस जाति का कुल देवता दूल्हा-देव है, जिसे बकरे की बलि देकर प्रसन्न किया जाता है। एक उपदेवता की भी चर्चा इनमें है जिन्हें लोहा-सुर कहा गया है, जो इनके लौह कर्म या व्यापार में सहायक होता है।2

पश्चिमी विद्वान रसेल ने इस जाति के सबंध में जो वर्णन दिया है, वह विलियम क्रुक्स से मिलता है। वर्तमान समय में सोनभद्र में निवास करने-वाली इन जातियों की मान्यताओं व विश्वास में कोई परिवर्तन नहीं आया है। रसेल ने अगरिया की चर्चा करते हुए लिखा है कि यह मिर्जापुर व बंगाल में पायी जाती है। 3 यहाँ मिर्जापुर से अभिप्राय स्पप्टत. सोनभद्र से है, क्योंकि यह जाति विभाजित मिर्जापुर में नही है। मिर्जापुर डिस्ट्रिक्ट गजेटियर के अनुसार 1971 की जनगणना के अनुरूप इनकी सख्या 6432 थी जो अधिसंख्य दुद्धी में निवास करती है।

बैगा

बैगा सोनभद्र की एक महत्वपूर्ण जाति है। वस्तुत., बैगा शब्द से पुजारी शब्द का भी परिचय होता है। पश्चिमी विद्वान रसेल इससे आदिकालीन द्रविड़ जाति मानता है जिसका मूल निवास सतपुड़ा पर्वत श्रृंखला के पूर्वी हिस्से में रहा है। वहाँ से चलकर यह जाति क्रमशः पूरब बढ़ते हुए सोनभद्र तक पहुँची है। बैगा के कई उपभेद हैं- इनके साथ प्रसिद्ध है एक लोककथा, कि कभी नागा बैगा और

---

1. Tribes & Caste of Central province of India - Russel, Page 3, Part I
2 Tribes & Caste of Central province of India - Russel, Page 6, Part II
3. Tribes & Caste of Central province of India - Russel, Page 3, Part II

नगिन बैगिन ने कजली वन में नृत्य किया और उनसे कितनी उपजातिया विकसित हैं। 1 जहाँ तक इनकी उपजातियों का संबध है इनमें विझवार, मरूतिया, नरोतिया, नाहार, पोंडवान, पुंडी, आदि प्रमुख हैं। बैगा जाति अपने ही कुल में विवाह नहीं करती लेकिन मातृकुल में यह सबध सामान्य है। कभी - कभी यह विवाह बच्चों के जन्म के समय तय हो जाता है, जिसे बरोखी कहा गया है। विवाह के इनके अपने तौर - तरीके पूरे जनपद में अपनी विधि के लिये चर्चित हैं। शिशु के जन्म के बाद इनके यहाँ प्रसूता महीने भर अशुद्ध रहती है। इसके शुद्धिकरण के समय खानपान की व्यवस्था रही है। इनकी जाति में महीनों या शरीर धर्म के आधार पर नाम रखने की परम्परा आज तक रही है जैसे चैतू, फागू, सवनी, लंगड़ा इत्यादि। 2 जहाँ तक इस जाति के धार्मिक सस्कारों का प्रश्न है, यह जाति पूर्णत हिन्दू जाति से संबंधित है। इस जाति के कुल देवता हैं - बूरा या बूढ़ा देव। जिनके सदर्भ में यह विश्वास है कि ये साज के पेड में निवास करते हैं। इन देवता की पूजा जेठ के महीने में बकरे की बलि देकर, महुआ की शराब चढ़ाकर बैगा करता है। बूढा देव के साथ ठाकुर देव, दूल्हा देव, धरती माता, नारायण देव का उल्लेख की इनमें भी मिलता है। भूत प्रेत में इनका विश्वास है। नागदेव से बचने के लिये बैगा कितने ही उपाय रचता है। हर घर की छप्पर पर, उसके आगे - पीछे खेर माता (क्षेत्र माता) की आकृतियाँ दीवारों पर बनी दिखती हैं जो आदि व्याधि से इन परिवारों की रक्षा करती हैं। सोनभद्र की बैगा जाति अपने वेश व पहनावें से भी पहचान में आती है।

बैगा जाति की व्यावसायिक स्थिति की चर्चा करते हुये रसेल ने लिखा है कि इनका मूल व्यवसाय खेती करना है, यह जाति आग लगाकर जंगल के हिस्से को जला देती है और राख से उपजाऊ हो गयी जमीन को पानी बरसने पर बीज बोती और जोतती है। यद्यपि वर्तमान जगल व्यवस्था में दूसरी स्वीकृति नहीं रह गयी है। 3 सोनभद्र में निवास करने वाली बैगा उपजाति, जो भी भूमि उसे पास है, उस पर खेती करती है तथा पुरोहित का कार्य करती है।

भूइयाँ -

भूइयाँ जाति की चर्चा करते हुए विलियम कुक ने इसे द्रविड़ शाखा से उत्पन्न जाति कहा है जो सोनभद्र के दक्षिण पश्चिम क्षेत्र में निवास करती है। मि० हन्टर का उल्लेख करते हुए कुक ने यह लिखा है बंगाल में यह जाति नृशंस एव आक्रामक जाति के रूप में प्रसिद्ध है। 4

विलियम कुक एक किंवदंती का उल्लेख करते हैं और लिखते हैं कि प्राचीन काल में मोमा ऋषि व कुम्भ ऋषि के दो पुत्र भद व भद्र महेश के निकट पहुँचे व उनसे प्रार्थना की। इस बीच भद नीम के पेड़ के नीचे तपस्या करने लगे और उन्हें क्षुधा का अनुभव हुआ। इस कारण भूइया जाति में

1 Tribes & Caste of Central province of India - Russel, Page 79, Part II
2 Tribes & Caste of Central province of India - Russel, Page 85, Part II
3 Tribes & Caste of Central province of India - Russel, Page 90, Part II
4 हन्टर- उड़ीसा भाग - 2, पेज 144, भाग - 2

इन्हें नीम ऋषि कहा गया। भगवान शंकर रोज जगल में लकड़ी इकट्ठा करने जाया करते थे। जिनके वरदान से नीम ऋषि के वशज प्रसिद्ध हुए। क्रुक के अनुसार इस कथा का प्रचलन भूहियार व मुसहर में आज भी प्रसिद्ध है। 1

इस प्रजाति के शरीर रचना के संबंध में कर्नल डाल्टन की रिपोर्ट महत्वपूर्ण है। वे लिखते है – ' इस जाति के लोग काले भूरे रंग के होते हैं। आनुपातिक रूप में यह जाति थोड़े चपटे चेहरे वाली होती है। लम्बाई मध्यम कद की, उगुलिया कठोर तथा पहाड़ी जाति के लोगों की तरह कठोर मांसपेशियो वाली। जहाँ तक मिर्जापुर एवं सोनभद्र में इस जाति का संबंध है यह आठ कुलों में विभाजित है-

1	तिरवाह	2	मगहिया	3	दंदवार	4	महतवार
5.	महतेक	6	मुसहर	7	भूइहार	8	भूइयार

Sir H Risley says - the1re is a well known distinction between a Bhuiya by tribe and a Bhuiya by title The Bhuiyas of Bonani and Keonjhar described by Colonel Daltan belong to farmar category The Bhuiya, Mundas & Oraons to the latter The distinction will be made some what clearer if it is explained that every ' tribal Bhuiya ' will as a matter of course describe himself as Bhuiya, while a member of another tribe will only do so if he is sepaking with reference to a question of land or desires for some special reason to lay stress on his status as a land holder or agriculturist

इस जाति की अपनी एक जाति-पंचायत है, जो भइयारी नाम से प्रसिद्ध है तथा इस पंचायत का अध्यक्ष पारिवारिक उत्तराधिकार के क्रम में एक व्यक्ति होता है, जिसे महतो कहते है। सामान्यतया खानपान जैसे प्रकरणों के लिए ही यह पंचायत बैठती है, या जब किसी सहजातीय के बीच में यौन संबंध की शिकायत पंचायत में कोई करता है। क्रुक का कहना है कि यह जाति विवाह के लिए लडकी ढूंढने कभी दूर नहीं जाती। इस सदर्भ में इस जाति की सारी उपजातियां वैवाहिक सदर्भो में समान स्तर की हैं। यदि कोई व्यक्ति एक से अधिक पत्नियों का भरण-पोषण कर सकता है और उसका मूल्य चुकाने में सक्षम है, तो वह पत्नियाँ रख सकता है जो एक ही घर में अलग – अलग कमरों में निवास करती है। 2 सोनभद्र के आज के समाज में यह विभेद संकीर्ण हो गये हैं तथा बहुपत्नीत्व की प्रथा सामान्य नहीं है। इस जाति में तलाक, विधवा विवाह जैसी प्रथायें भी प्रचलित हैं। पुत्र के जन्म के समय नार काटना, सउर, छठी, बरही जैसी प्रथायें इनमें स्थानीय सवर्णो की तरह आज प्रचलित हैं। विवाह के प्रकरण में लड़की की खोज लडके का पिता करता है, जिसे जाति का प्रधान महतो अपने साथ कुछ लोगों को लिवा जाकर स्वीकृति प्रदान करता है। चौक पूरने की प्रथा इनमें भी है। विवाह तय होने पर अक्षत छिड़क कर उसे समर्थन दिया जाता है। विवाह के समय मटमंगरा, टीका, तेल – हरदी, पोखरी, मांगर जैसी लोक प्रथायें इस जाति में सामान्य हैं। विवाह में सिद्ध के पेड़ का मंडप में होना आवश्यक है। भुइयां धार्मिक रूप

---

1 Tribes & Caste of the North West India - Crooke, Page 71, Part II

2 Tribes & Caste of North West India - Crooke, Page 74, Part II

से अपने को हिन्दू ही कहता है। इनका मुख्य उपास्य काली माँ हैं, जिसे क्रुक आदिवासियों की प्रसिद्ध देवी या पहाड़ी देवी से जोड़ता है। इस तरह का प्रचलन सिहभूमि में है, जिसका उल्लेख डाल्टन ने अपनी पुस्तक ' **'एथनालॉजी '** के पृष्ठ सख्या 179 पर किया है। इसके अलावा डीह बाबा या डिहवार की पूजा तथा चैत के महीने में धरती माता की पूजा भुइयां नाच गाकर करता है। विलियम क्रुक ने इस जाति के प्रसिद्ध जातीय नायक नादूवीर का उल्लेख किया है। 1 उसके लिये उसनें लम्बीकथा भी उल्लिखित की है। इस कथा को थोडा घुमाकर सोनभद्र में निवास करने वाला भुइयां सुनाता है। इसमें गगाराम और गजाधर तथा उसकी बहन बारिज सोमती और उसके सौन्दर्य की चर्चा है। भुइया जाति की उपासना पद्धति व सास्कृतिक परम्परा में एक दुर्लभ प्रथा आज तक प्रचलित है। यह प्रथा इसी रूप में सोनभद्र मै दुसाध जाति के लोगों में भी प्रचलित है। जमीन में 6 या 7 फुट लम्बी तथा तीन - चार फुट लम्बी मिट्टी निकाल कर आग जला दी जाती है और भुइयाँ इस जलती आग पर नंगे पांव चलता है। 2 इस जाति में यह मान्यता है कि जिस व्यक्ति के भीतर इनके आराध्य वीर की कृपा रहती है, यह आग उनका कुछ भी नहीं बिगाड पाती। भुइयाँ हिन्दू त्यौहार ही मनाता है। खासकर अनन्त चतुर्दशी, भाद्रपद। इस दिन यह जाति उपवास करती है। अपने दाहिने हाथ पर एक मगल सूत्र बाधती है। फिर जंगल में जाकर करम वृक्ष की डाल काटकर अपने आंगन में लाकर गाडती है। पुरूष इस डालकर को झुककर प्रणाम करते हैं। स्त्रियां इसे लाल रग से सजाती हैं। प्रसाद रूप में मदिरा पीकर इस वृक्ष के हर ओर मण्डलाकार इस जाति के लोग नाचते हैं। यह भी प्रथा है कि इस वश की कोई कन्या किसी पुरूष को चाहती है तो इस नाच के समय पुरूष को उसके घुटने पर नृत्य के समय हल्के से मार देती है और उसके माता-पिता अपनी कन्या का विवाह पुरूष से सुनिश्चित कर देते हैं।

इनमें यह मान्यता है कि इस जाति का कोई आदमी बाघ या चीते द्वारा मारा गया है तो वह भयानक भूत-प्रेत बनता है। भुइयाँ जाति का पुरोहित बैगा शराब चढ़ाकर इस आत्मा को तृप्ति देता है। विलियम क्रुक द्वारा किये गये सर्वेक्षण के प्राप्त निष्कर्ष एक शताब्दी बाद भी इस जाति में ज्यों के त्यों प्रचलित हैं। इससे पता चलता है कि जातिगत प्रथायें, रूढियाँ और उनसे जुड़ने वाली मान्यतायें अब भी कितनी जटिल हैं।

चेरो

सोनभद्र के सोनपार क्षेत्र की मुख्य जातियाँ, जो या तो यहाँ की मूल निवासी रही हैं या बिहार, बंगाल से आकर यहाँ बसी हैं; .. के उद्भव के संबंध में विलियम क्रुक व कर्नल डाल्टन की मान्यतायें अलग - अलग हैं। विलियम क्रुक के अनुसार चेरो एक द्राविड जाति है जो या तो श्रमिक वर्ग से संबंधित रही है या खेतिहर वर्ग से तथा मिर्जापुर जनपद के पहाड़ी क्षेत्र में पाई जाती हैं। 3 मिर्जापुर का यह पहाड़ी परिक्षेत्र वर्तमान सोनभद्र है। विलियम क्रुक ने चेरो शब्द को अनार्य जाति का शब्द कहा। साथ ही इसे हिन्दी - चेल तथा संस्कृत चेतक अथक चेदक शब्द से जोड़ा है, जिसका अर्थ दास होता है। चेरो जाति को

---

1. Tribes & Caste of North West India - Crooke, Page 80, Part - II
2 Tribes & Caste of North West India - Crooke, Page 80, Part - II
3 Tribes & Caste of North West India - Crooke, Page 214, Part - II

कर्नल डाल्टन कोलारियन शाखा से जोडते हैं जो गागेय प्रान्त में फैली दिखायी पड़ती है। 1 चेरों का विवरण देते हुए श्री देव कुमार मिश्र नेसफिल्ड को उधृत करते हुए शबर जाति की चर्चा करते हैं तथा यह मानते है चेरों या शबरों की शाखा मुसहर है। 2 चेरों के सबध में मिस्टर फोब्स द्वारा संग्रहित तथा कलकत्ता रिव्यू के 37 वें खण्ड के पेज 351 पर प्रकाशित एक अर्न्तकथा की चर्चा करते हुये विलियम कुक ने लिखा है कि बुदेलखण्ड के एक राजा केशवनारायण सिंह की एकमात्र कन्या के भविप्यफल को जानने के लिये जब उसके कुंडली चक्र का निरीक्षण कराया गया तो पता चला कि यह कन्या किसी ऋषि से ब्याही जायेगी। उसके अतिरिक्त जिससे इसका विवाह होगा, उसका विनाश हो जायेगा। राजा अपनी कन्या को लेकर नेपाल क्षेत्र के मोरांग क्षेत्र तक पहुँचे जहाँ उनकी भेंट चमन (सभवन च्यवन) ऋषि से हुई। लड़की का विवाह इसी ऋषि से हुआ जिससे चेरो अथवा चौहान वशी राजपूत पैदा हुये। इनके पुत्रों में चेतराव ने राठौर राज्य की स्थापना की। चेरो राजाओं में उदित राय, उदद राय और छौण राय ने कुमायूँ प्रदेश में राज्य किया और उनके पुत्र फूलचद ने बिहार के भोजपुर क्षेत्र पर अधिकार किया। 1612 ई० में चेरो पलामू जिले तक पहुँचे तथा ब्रिटिश सत्ता के आने तक पलामू तक इन्हीं चेरो वशजों का शासन रहा। 3

ब्राम्हण परम्पराओं से प्रभावित होते हुये भी इस जाति को डा० बुचनन हैमिल्टन ने इन्हें द्रविड़ जाति से जोड़ा है। छोटा नागपुर के चेरों को हिन्दू परम्परा से संबद्ध करने के बाद भी कर्नल डाल्टन इन्हें मगोलियन, कोलारियन व द्रविड जातियों के निकट अधिक स्वीकार करते हैं। कर्नल डाल्टन की इस मान्यता के पीछे शरीर रचना का आग्रह है। इस प्रजाति के लोग मोटी हड्डियों वाले, छोटी ऑख वाले, छितराई भौहों वाले, नीची चपटी नांक, लम्बे चेहरे वाले तथा मोटे छितरायें ओंठ वाले दिखायी पडते हैं। 4 इसी कारण विलियम कुक कर्नल डाल्टन के अभिमत का समर्थन करते हुये चेरों जाति को सोनभद्र जनपद के कोल, मझवार जातियों की तरह द्रविड़ जाति से उत्पन्न ही मानते हैं। कुक का यह मानना है कि चेरों भूत-प्रेत झांडने वाले ओझाओं में मिर्जापुर (वर्तमान सोनभद्र) में सर्वोपरि हैं। इसी कारण इन्हें बैगा भी कहा जाता है। सोन के दक्षिणी भाग में इन बैगा पुरोहितों को महतो और चौधरी दो प्रभेदों में देखा जा सकता है। यही लोग नागवंशी तथा पांडववशी नाम से भी चर्चित हैं। विवाह इत्यादि में कन्या पक्ष की ओर से बहनों में विवाह में प्रतिबध नहीं, लेकिन लड़के के चचेरा, फुफेरा, मौसेरा संबंधों में विवाह वर्जित है। विवाह में जाति के बाहर विवाह की स्वीकृति नहीं है। विधवा विवाह मान्य है। लडकियों को विवाह पूर्व सबधों की स्वीकृति इनमें है, जो भोजभात देकर सामान्य बना ली जाती है। कुक के अनुसार मिर्जापुर के चेरों दस वर्ष की आयु में विवाह करते हैं। बहू का मूल्य चुकता कर विवाह सामान्यतया तय हो जाता है। घर जमाई बनकर, बहू के पिता के घर में ही रहकर परिवार चलाने की प्रथा इनमें सामान्य है। विलियम कुक ने बाबा, दादा, भौजी, दुलहिन, काका, काकी, पतोहिया, महतो, महतोआइन

---

1 Discriptive ethnology - Dolton , Page 125

2. सोन के पानी के रंग - देव कुमार मिश्र पेज 54.

3 Tribes & Caste of North West India - Crooke, Page 215, Part - II

4 Discriptive ethnology - Dolton , Page 126

लल्लू, जवान भाई, जैसे शब्दों का उल्लेख किया है जो इनमें प्रचलित रहे हैं। 1 इससे यह सिद्ध होता है कि यह जाति शताब्दी के पूर्व ही स्थानीय भोजपुरी का व्यवहार करती आ रही है। 1971 की जगगणना के अनुसार जिले में इनकी जनसंख्या 11,916 व्यक्ति थी।

धागर

सोनभद्र जनपद में निवास करने वाली जातियों में धागर जाति अकेली है जो अपनी परम्पराओं और भाषिक प्रयोगों के लिये आज की चुनौती बनी है। धांगर के सबध में चर्चा करते हुये विलियम कुक का यह मानना है कि मध्य भारत में इस जाति को हटकर कहा जाता रहा है। इस प्रकरण में बरार गजेटियर पृष्ठ सख्या 200, तथा बाम्बे गजेटियर खण्ड 16, पृष्ठ - 56 में एक मुगल शासक से सबंधित कथा का उल्लेख करते हुये धांगर की चर्चा हुई है।

डाल्टन के सदर्भ को उधृत करते हुये विलियम कुक का यह मानना है कि छुटिया नागपुर के आसपास रहने वाले कुरूख या उरॉव देश के अन्य भागों में धांगर के नाम से चर्चित हैं। कर्नल डाल्टन, धांगर की उत्पत्ति डाग या धाग से मानते हैं, जिसका अर्थ है पहाड़ी। डाल्टन धागर की चर्चा दक्षिणी प्रान्त के परिक्षेत्र में निवास करने वाले कुछ विशिष्टजनों के प्रकरण में भी करते हैं।2 रिस्ले के अनुसार बर्दवान जिले के पहरिया लोगों को, जो योद्धा मनःस्थिति के होते हैं, धॉगर या धगरिया कहा गया है। छोटा नागपुर में जिन्हें उरॉव कहा गया है, कुक की दृष्टि में वे भी धांगर ही हैं। कुक मानते हैं कि कार्य के बदले में जो लोग बिना कुटा चावल (धान) पारिश्रमिक के रूप में लेते हैं, ऐसे लोग धागर नाम से प्रसिद्ध हैं। विलासपुर में इन्हें कनवार कहा गया तथा आदिवासी जनसंख्या में गोडों के बाद कनवार (धागर) की ही संख्या है। कुक डा० जे० विल्सन का संदर्भ देते हुये दक्षिण में रहने वाले इन लोगों को संस्कृत के धेनुकार से जोड़ते हैं, जो अपना मूल स्थान छोड़कर देश के अन्य कोनों में निकले हैं। 3 रिस्ले की पुस्तक ट्राइब्स एण्ड कास्ट के पृष्ठ सं० 466 पर प्राप्त विवरण का संदर्भ देते हुये विलियम कुक इस जाति को मालवा के होल्कर परिवार से जोड़ते हैं जो देश के अन्य भागों में फैली है। धांगर प्रजाति के संबध में एक मान्यता की चर्चा कुक करते हैं और ये मानते हैं कि छोटा नागपुर के लकड़ा सबडिवीजन से जो उरॉव अन्यत्र फैले हैं, उनमें मिर्जापुर के धॉगर भी आते हैं। मिर्जापुर में रहने वाले धॉगर बरगद का पेड नहीं काटते। इसके पीछे यह मान्यता है कि बरगद का वृक्ष उनके पुरखों में एक है। सोनभद्र के धॉगरों में एक्का नाम की एक उपजाति है जिसका अर्थ तेंदुआ होता है। इस कारण इसे कुल

---

1 Tribes & Caste of North West India - Crooke, Page 218, Part - II
South of the Son it is generally assested that the Bhuiya and Chero or the same - Tribes & Caste of North West India - Crooke, Page 448, Part - III

2. Discriptive ethnology - Dolton , Page 245
3 Tribes & Caste of North West India - Crooke, Page 264, Part - II

देवता मानकर यह उपजाति उसका शिकार नहीं करती। एक दूसरी उपजाति है तिगा। इसका सबध धाँगर जंगल की एक जड़ी से जोड़ते हैं, जिसे वे नहीं खाते। भागलपुर के धागरों में तिग का अर्थ बदर है। सोनभद्र में धागरों की एक उपशाखा है, जिसे खाहा कहा गया है, जिसका शब्दार्थ है कौआ। इस कारण इस उपशाखा के लोग इस पक्षी का सम्मान करते हैं और इसे आहत नहीं करते। इनकी प्रवृत्तियों और समरूपताओं के कारण क्रुक इन्हें बंगाल के धागरों के अधिक करीब मानते हैं। 1 जहाँ तक इन आदिवासियों द्रविडजनों की शरीर रचना का संबध है ,कर्नल डाल्टन द्वारा प्रस्तुत विवरण और विलियम क्रुक के संदर्भ एक जैसे हैं। इनकी दृष्टि में धागर हसमुख, गाढ़ें, काले रंगवाले, तथा शान्त प्रकृति के होते हैं। इनकी मुखाकृति तथा जबड़े का गठन समूह में भी इन्हें अलग प्रकट करता है। मोटे ओठ, भारी जबडों से जुडे हुये जो आयु के साथ बढ़ता जाता है, इन्हें अन्यों से अलग कर देता है। माथा नीचा और सकरा, आँखे छोटी व चमकती हुई, इनके सतेज चरित्र का परिचायक हैं। इनका रग बहुसंख्यक रूप में गाढ़ा भूरा, कालिमा की ओर बढता दिखाई देता है। रिस्ले इन गुणों का सादृश्य होते हुये भी इन्हें मगोल जातियों के बहुत निकट नहीं मानते। जहाँ तक मिर्जापुर (वर्तमान सोनभद्र) में निवास करने वाले धागरों का संबंध है, इनका मानना है कि लगभग दस पीढी पूर्व दक्षिण के बखई नामक स्थान से वे इस क्षेत्र में आये। यहाँ आकर एक पतली घाटी पर कब्जा जमाया, जिसे सथोखा कहते हैं, जहाँ ये अपने पशु चराते थे। इनमें जूरा और बुद्धू महतो की बडी प्रशसा है, जिनके कारण इन्हें साधन और सम्मान प्राप्त है। क्रुक इनकी जातीय पचायत का उल्लेख करते हैं। यह प्रथा आज भी है। जातीय अपव्यवहार के समय अपनी जाति बिरादरी से निष्कासित धांगर को भोज-भात देना पड़ता है, जिसमें एक या दो बकरे और दस बोतल मदिरा आवश्यक है। किसी लडकी के भागने पर लड़की के पिता को दो बार यह दावत देनी पडती है, तब उसे बिरादरी में शामिल करते हैं। अगर किसी अविवाहित कन्या के साथ कोई अप्रासंगिक घटना घटती है, तो पुरूष को भी यह दावत देनी पड़ती है और उनका विवाह स्वीकृत हो जाता है। अगर जाति के बाहर किसी व्यक्ति से किसी स्त्री के संबंध की सूचना मिलती है, तो वह स्थायी रूप से जाति बहिस्कृत हो जाती है। सामान्यतया विवाह की आयु दस से बारह वर्ष है। जाति परम्परा के अनुसार बधु का मूल्य कुल दो रूपया है। कोई शारीरिक दोष व्यवधान का कारण नहीं होता, लेकिन विवाह पूर्व इसकी जाँच पडताल दोनों वर्ग कर लेता है। यदि कोई स्त्री प्रमाणित दुराचार का सिद्ध दोषी मानी जाती है, तो पुरूष को तलाक का अधिकार है।

तलाक शुदा स्त्री को पुनर्विवाह की जातीय अनुमति कुछ शर्तो पर मिल जाती है। क्रुक का यह मानना है कि छोटा नागपुर में प्रचलित घोटुल की प्रथा जिसका उल्लेख कर्नल डाल्टन करते हैं, मिर्जापुर के धांगरों में नहीं है। 2 विवाह इत्यादि प्रकरणों में विलियम क्रुक राम रहाई दिन धरना, मानर, खिचरी, सोहर,

---

1 Tribes & Caste of North West India - Crooke, Page 265, Part - II

2 " The institution of the Bachelor hall, describe by Colonel Dolton among the oraons (Discribe Ethonology Page _ 247) does not prevail among the Mirzapur Dhangers.-" Tribes & Caste of the North West India - Crooke, Page 267, Part II

तोहार, अहिवात बढे जैसे शब्दों का उल्लेख करते हैं। 1 ऐसा प्रतीत होता है जैसे उनका सूचक स्थानीय भोजपुरी भाषी रहा है अन्यथा सोनभद्र के धांगरों में इन प्रकरणों में इन शब्दों का प्रयोग नहीं होता। जहाँ तक धार्मिक-चेतना का सबध है, सोनभद्र के धागर हिन्दू हैं, लेकिन किसी भी हिन्दू देवी-देवता की पूजा ये नहीं करते। इनकी आराध्या हैं- वरूणा भवानी, जिनके सबध में वरूणा अथवा और वरूण देव की कल्पना क्रुक करते हैं। भवानी की पूजा धागर वर्ष में एक बार करते हैं, और इस समय बकरे की बलि देते हैं अथवा सूअर चढाकर पूजा पूरी करते हैं। एक दूसरे देवता का उल्लेख है जिसका संबध पशुओं से है। वे देवता हैं - गौरेया, जिनकी पूजा कार्तिक पूर्णिमा को होती है। पशुओ में सुअर तथा सफेद व काले काक की बलि दी जाती है तथा जमीन पर मदिरा चढाई जाती है। इनका बैगा गॉव के डीह बाबा की पूजा करता है। यदि गॉव में चेचक का प्रकोप हो तो स्त्रियां शीतला भवानी, की पूजा करती हैं। किसी बच्चे की बीमारी में हलुआ पूरी चढ़ाकर पूजा करती हैं तथा शीतला की चॉदी की मूर्ति बनाकर पूजा करते हैं। गॉव के डीह के अलावा यह पूजा गॉव के बडे - बूढो द्वारा सपादित होती है। धांगर होली नहीं जलाते, लेकिन फगुआ मनाते हैं। 2 महिलाओं में गोदना गुदाने की प्रथा है। धागर स्त्रियॉ तीन लकीरों में गोदना गुदाती हैं। उनमें विश्वास है, कि अगर मदिरा का व्यवहार किया जाय तो मलेरिया का प्रयोग नहीं होता। क्रुक का मानना है कि जनपद की अन्य निरीह जनजातियों की तुलना में मिर्जापुर (सोनभद्र) के धांगर उतनी दयनीय स्थिति में नहीं हैं। धांगरों के सबंध में रसेल मध्य प्रान्त के बरार क्षेत्र के धांगरों की विस्तार से चर्चा करते हैं, जो निश्चित रूप से सोनभद्र के धागरों से भिन्न है।

धरकार

धरकार शब्द की उत्पत्ति की चर्चा करते हुये क्रुक सस्कृत के धारा जिसका अर्थ रस्सी होता है, से जोड़ते हैं। कार का अर्थ है कर्ता या बनाने वाला। क्रुक यह मानते हैं कि रिस्ले महोदय द्वारा चर्चित बिहार के धरकारों में मिर्जापुर (सोनभद्र) के धरकार एकदम अलग हैं। 3 क्रुक के अनुसार सोन के दक्षिण रहने वाले धरकारों की चार प्रशाखायें हैं, जिन्हें कूरी कहा जाता है। अरिल, नेवरिया, दउरिहा और नगरहा। ये उपशाखायें समान महत्व की हैं, लेकिन वैवाहिक सबधों में कुछ को छोड़कर बाकी प्रतिबंधित हैं। जिन विवाहों की स्वीकृति प्राप्त है उन्हें क्रुक महोदय गरवट कहते हैं, जिसे आज गुरउट कहा जाता है। इसका अभिप्राय है कि पारस्परिक रूप में एक कूरी के लोगों का दूसरी कूरी के भीतर विवाह संबध। सोन के दक्षिण में इनका तीन उपखण्ड और मिलता है बेनवंश, बरूआ और डोम, जितनी दो उपशाखायें है बेलखरिया और मतार।

---

1 Tribes & Caste of the North West India - Crooke, Page 268, Part II

2 "They do not light the holy fire but they celbrate the Phagua " Tribes & Caste of the North West India - Crooke, Page 270, Part II

3 Tribes & Caste of the North West India - Crooke, Page 279, Part II.

सोनभद्र के धरकारों का मानना है कि उनके पूर्वजों को परमेश्वर ने जब बनाया तो उन्हें एक झांपी से ढक दिया और हाथ में बांकी (एक तरह का चाकू) दे दिया। इस तरह यह जाति आज भी अपने धर्म का निर्वाह करती है।

धरकारों की अपनी पचायत होती है जिसका एक स्थायी प्रधान होता है, जिसे महतो कहते हैं। इसके सहयोग के लिये एक और व्यक्ति होता है, जिसे दीवान कहते हैं। पचायत में दीवान सारी बातें रखता है, जिस पर सारा निर्णय महतो का होता है। किसी गभीर दण्ड के रूप में पूरे गोत्र को दो दिन तक भात और मास खिलाना पडता है। यदि किसी का जाति से निष्कासन हो जाय तो पंचायत से बिना क्षमा पाये, उस घर में विवाह नहीं होता।

इस जाति में बहुपत्नीत्व की भी प्रथा है, लेकिन स्त्री एक से अधिक सबध रखने पर दडित होती है। जिन घरों में एक से अधिक स्त्रियाँ हैं, उनमें बड़ी स्त्री सब पर शासन करती है। किसी अनैतिक सबंध में आठ रूपया नगद तथा सबको मास-भात खिलाने का दण्ड दिया जाता है। सामान्यतया धरकारों में बाल विवाह नहीं है। विवाह अधिकतर फूफा तय करते हैं। दुल्हन को आठ रूपया शुल्क देना निर्धारित है। एक धोती तथा पूड़ी देकर विवाह तय होता है। यदि लडकी किसी कारण किसी घर में रहना स्वीकार नहीं करती, तो उसके पिता को बधू मूल्य वापस करना पडता है। यदि पुरूष मना करता है तो बिरादरी उस पर ऐसा न करने का दबाब डालती है। यदि दोनों ही व्यभिचार के आदी हैं, तो महतो की स्वीकृति से तलाक की अनुमति है। यदि ऐसी स्त्री जाति में रहना चाहती है तो इनमें पुनर्विवाह नहीं होता, लेकिन एक विकल्प है, जिसे धरौना कहते हैं। पिता को दउआ, माँ को दाई, दादी को नडकी दाई, पिता के बड़े भाई को बडका आदि नामों से बुलाया जाता है। इस जाति में लगभग सस्कार वही प्रचलित हैं, जो आस-पास के हिन्दुओं में दिखायी पड़ते हैं। विलियम कुक इनके सबध में कहते हैं कि एक शताब्दी बाद भी धरकार थोडी उच्चारण भिन्नता के साथ वही बोलते हैं। मुर्दो के जलाने व गाडने दोनों की प्रथा है। ये अपने को हिन्दू कहते हैं। इनके स्थानीय देवता है पहाड़ पांडव, बहिया वीर और देवनाथ, साथ ही दूल्हादेव भी इनके पूज्य हैं। स्त्रियां पैरी, चूडी और चुरला पहनती हैं। टिकुली, तरकी इत्यादि इनके प्रिय आभूषण हैं। चूंकि यह जाति बास की टोकरी आदि बनाने का कार्य करती है; इसलिये उससे जुडने वाली शब्दावली भी इनमें प्रयुक्त होती है।

गोंड़

गोड़ों के संबंध में चर्चा करते हुये कुक एक सभावना प्रकट करते हैं और मानते हैं कि गोंड़ जाति का संबंध गउड देश से है। 1 कुक का मानना है कि मध्य भारत तथा झांसी और ललितपुर में निवास करने वाले गोड़ों से भिन्न सोनभद्र के गोड, मांझीं और खरवार की तरह उस महान गोड़ जाति के प्रतिनिधि हैं, जिनमें अपने जातीय गुण अब भी सुरक्षित हैं। यह जाति बारह उपशाखाओं में विभाजित

---

1. Tribes & Caste of the North West India - Crooke, Page 430, Part II

है। इनमें राजगोड, रघुवाल, दादव, कटुल्य, पादाल, धोरी, ओमीचाल, धोत्याल, कोलाघुटाल, कोयकोपाल, कोलाम और माद्याल प्रमुख हैं। 1 कुछ विद्वान इस जाति को पुलस्त्य ऋषि का वंशज कहते हैं तथा यह मानते है कि मध्यकालीन साम्राज्यों के पतन के बाद इस जाति का प्रभुत्व सोनभद्र में स्थापित हुआ। सोन क्षेत्र की भीतरी और बाहरी सीमा पर जब अनके जातियों - जनजातियों के बीच एक दूसरे को पीछे ढकेलने के लिये द्वद मचा था और प्रबल जन अपने आधिपत्य विस्तार में लगे थे, और केन्द्रीय शक्ति कमजोर पड गयी थी, त्रिपुरी के कलचुरी वंश का अत हो रहा था और चंदेल वश पनप रहा था, तब तेरहवी सदी के प्रारम्भ में पश्चिमी सीमा पर एक नयी जनजाति ने दस्तक देना शुरू किया। अपने को पुलस्व्य के वशज कहने वाले ये गोंड़, द्रविड़, आदि जन थे; जिनकी राजनैतिक छाया धीरे - धीरे सोन क्षेत्र के दक्षिण - पश्चिमी क्षितिज पर छा गयी। 2 गोंड जाति की शारीरिक सरचना के संबंध में विद्वानों ने जो लिखा है, उसमें आज की तिथि तक कोई अन्तर नहीं आया। विलियम क्रुक हिसलप महोदय को उनके संदर्भ मे Islands of Central India Page 156 के आधार पर यह लिखते हैं कि यूरोपियन की तुलना में इनका रंग सामान्यतया काला है। इनकी शारीरिक रचना का सतुलन थोड़ा ठीक है लेकिन इनका स्वरूप बहुत आकर्षक नहीं है। गोला सिर, नीचे दबी नाक, फैले ओठ, लंबा तना शरीर, काले बाल और चेहरे पर विरल दाढी - मूंछ। यह अनुमान है कि मध्य भारत के आदिवासी गोड़ों का शरीर विशेषत सिर घने बालों से ढका है। हिसलप स्पष्टत. यह कहते हैं कि इस तरह के घुघरालें बालों वाले गोंड को उन्होंने हजारों में भी नहीं पाया है। मिस्टर हिसलप निश्चयपूर्वक यह मानते हैं कि गोडों के केश और उनकी आकृति मंगोलों से मिलती है। कैप्टन फोरसिथ ने इस जाति की महिलाओं का विवरण अलग से दिया है। 3 उनका यह मानना है कि गोंड स्त्रियां अपने निचले हिस्से और ऑखों की संरचना में बदरों के अधिक निकट हैं यद्यपि कम उम्र की लड़कियों में प्रथम दृप्टतया आकर्षण दिखता है, लेकिन आयु के बढने के साथ कठोर शारीरिक परिश्रम के कारण इनका आकर्षण उतना नहीं रहता।

स्त्रियों में विवाह की आयु आने के साथ गोदना का प्रचलन है, जो शरीर के अधिकांश भाग में गोदा जाता है। अपने दोनों हाथ व पांव में ये स्त्रियाँ मोटे कडे पहनती हैं। संभव हुआ तो चांदी के, नहीं तो गिलट के। 4 गोड़ जाति में विवाह तथा अन्य संस्कार अन्य आदिवासी जातियों की तुलना में थोडे भिन्न हैं। इनमें विवाह की सात विधियाँ प्रचलित हैं। विवाह का निश्चय होने पर अपनी बहन के बच्चों में लड़की के वर का चुनाव सबसे पहले किया जाता है। सभव न होने पर गोंड़ किसी अन्य की बात करता है। ऐसा न होने पर स्थिति उल्टी होने पर बहन भाई के लड़के को प्राथमिकता देती है। इसके पीछे खर्च कम हो, यह प्रवृत्ति रहती है। लड़के जब दस वर्ष की आयु होते हैं तो गाँव के व्यक्तियों की पंचायत बैठती है तथा व्यवहार का निर्णय होता है। यदि कोई निर्धन परिवार का व्यक्ति रहता है, तो लड़की के पिता के घर 6 महीने से लेकर तीन वर्ष तक उसका काम करता है। इसे पंचायत परीक्षण अवधि मानती है, तथा इस अवधि में सफल न होने पर विवाह टूट भी जाता है। एक दूसरी विधि यह भी है कि महिला अपने लिये पुरूष स्वयं चुनती

1 Tribes & Caste of the North West India - Crooke, Page 431, Part II

2. सोन के पानी के रंग - देव कुमार मिश्र पेज 63

3 Tribes & Caste of the North West India - Crooke, Page 432, Part II.

4. Island of Central India - Hislap, Page 276.

है और घर से भाग जाती है।लेकिन ऐसा कम ही होता है। जाति पचायत को यह हक है कि लडकी के चाहने पर भी वह जबरदस्ती उसे प्रेमी के घर से लाये व भांजे या भतीजे से विवाह कर दें। किसी - किसी निर्धन परिवार में यदि इस तरह के संबंध नहीं मिलते,तो पचायत के सदस्यों को भोज - भात देकर इसकी अनुमति मिल जाती है। विधवा - विवाह का इनमें चलन है तथा गोड़ों की प्रथायें प्रकरण में दो स्थितियों का सकेत देती है:-

1 देवर से विवाह की,जो जाति पचायत से स्वीकृति होता है।

2 इस जाति की स्त्री जिस परिवार में जाकर रहना पंसद करती है,जाति के लोग उसकी अनुमति दे देते हैं।

गोड़ जाति में मृतक के बड़े भाई से विधवा का विवाह पूर्णतः वर्जित है। परिवार में पत्नी की सख्या गौड के ससाधन पर निर्भर है, इसमें कोई कठोरता नहीं है। गोड में मृतक व्यक्ति का बड़ा आदर है और सम्मान के साथ उसकी अन्तयोप्टि क्रिया की जाती है। इनमें वृद्ध को जलाने तथा बालकों और स्त्रियों को दफनाने की प्रथा है। 1 प्रारम्भ में गौड जाति मृतक को उसी घर में दफना देती थी, जिसमें मृत्यु होती थी।बाद में इस तरह गॉव के निकट,कब्रगाह में लाशों को गाडने का प्रचलन हुआ। इनमें दाह कर्म कभी - कभी होता है। कब्र इस तरह खोदी जाती है कि मृतक का सिर उत्तर की तरफ हो। यह मान्यता है कि पिता की मृत्यु के बाद यह संभावना रहती है कि घर के शेष लोगों का कुशल नहीं होगा। इसलिये कब्र के सिरहाने दो वर्ष तक प्रतिदिन भोजन चढ़ाया जाता है। वस्त्र के खूट में हल्दी की गाद बाधकर बैगा घर के चारों ओर घूमता है। भेड़ या सुअर के मांस को लाश के सिरहाने चढाता है, ग्राम देवता की पूजा करता है। गॉव के बड़ों व सबधियों को भोजन दिया जाता है, इस तरह यह क्रिया समाप्त होती है। इस जाति में अलग - अलग स्थानों पर अलग - अलग स्थानीय देवताओं का प्रचलन है। दूल्हा देव, नारायण देव, माता, देवी, खैरमाता, घनश्याम देव इनके उपास्य हैं। कहने की आवश्यकता नहीं है कि ये सारे देवी देवता हिन्दुओं से संबंधित हैं,जो इनमें भी समान रूप से प्रचलित हो गये हैं।

खरवार

खरवार के सबंध में यह मान्यता है कि यह कृषि व्यवसाय से सबंधित है तथा स्वयं की भूमि की मालिक द्रविड़ परम्परा की एक जाति है जो सोनभद्र में निवास करती है। चूंकि इस जाति के लोगों के पास पर्याप्त भूमि हैं,इस कारण इनके प्रभेदों की सामाजिक स्थिति का वर्णन सरल नहीं है तथा इनकी स्थिति अन्य लोगों की तुलना में ऊंची है। कर्नल डाल्टन का अभिमत है - इस जाति की टोटेम पद्धति के विश्लेषण ये यह सिद्ध है कि इसका सबंध द्रविड़ परम्परा से है तथा ये जिसके सर्वाधिक निकट हैं, वे हैं चेरो जनजाति के लोग। 2 इनके संबध में संथालों में प्रचलित एक लोक कथा का उल्लेख आवश्यक है। कथा है, एक जंगली जीव समुद्र से निकलकर प्रकाशवान दीप अहीरी - पिपरी में पहुँचा और वहाँ दो अण्डे दिये। इनसे

---

1. " The Male is that, if possible, men over 50 should be burned Old man always burnt, women are always burried" Tribes & Caste of the North West India - Crooke, Page 435, Part II.

2. Discriptive Ethonology - Dalton - Page 127

एक नर का जन्म हुआ दूसरे से मादा का। ये दोनों ही सथाल जाति के आदि पुरूष बने। अहीर पिपरी से एक शाखा हरदत्ती की ओर प्रस्थान कर गयी, जिसने कालान्तर में बड़ा विकास किया। इन्हीं को खरवार कहा गया है। कर्नल डाल्टन इस कथा का समर्थन करते हैं। 1 डाल्टन यह मानतें है कि जिन्हें हम सथाल कहते हैं, उन्हें प्रारम्भ में खरवार कहा जाता था। 2 मिस्टर रिस्ले दक्षिण के लोहार डागा स्थान का उल्लेख करते हुये इनकी उत्पत्ति के सबध में खर घास का उल्लेख करते हैं, जो इनका टोटेम है। इस कारण ये बढती खर (घास) को नहीं काटते। जहाँ तक सोनभद्र में रहने वाले खरवारों का प्रश्न है, विलियम क्रुक के शताब्दी पूर्व किये गये विश्लेषण के अनुसार ही ये लोग अपनी टोटेम परम्परा भूल गये थे तथा अपने जाति के नामकरण के संबध में ये मानते हैं कि खर बनाने के कारण इन्हें ये नाम मिला। इस जाति के लोग अपना मूल स्थान खैरागढ बताते हैं। कर्नल डाल्टन ने खैरागढ़ को बिहार के हजारीबाग से जोडा है, जबकि सोनभद्र के खैरवार खैरागढ़ को छत्तीसगढ से जोडते हैं। खैरवार यह भी मानते हैं कि ये रींवा तथा सिंगरौली से विस्थापित होकर सोनपार क्षेत्र में आये। इस जाति का जातीय प्रतीक चिन्ह कोट कहा जाता है जो पुराने मिर्जापुर जनपद के सिगरौली परगना का हिस्सा रहा है। यहाँ ज्वालामुखी देवी का मंदिर है, जहाँ चैत रामनवमी को खैरवार इकट्ठे होते हैं तथा पूजा करते हैं। इनके पुरोहित ऐसे अवसरों पर ब्राम्हण होतें हैं, जो सिगरौली तथा पलामू जिले से आते हैं। 3

सोन नदी के दक्षिण बसे हुए खैरवारों की एक दूसरे से सबंद्ध चार उप शाखायें हैं - 4

I	सूरजवंशी -	जिनकी व्युत्पत्ति सूर्य से बताई जाती है।
II	दुआलबंधी-	इनका दूसरा वर्ग, जो दुआल शब्द से सबंधित है जिसका अर्थ सिपाही होता है।
III	पातबधी-	इसके पीछे यह मान्यता है कि कभी ये बहुत धनी थे और ये रेशमी वस्त्र पहना करते थे।

IV बेनवंशी- इनका संबंध राजा बेन से बताते हैं। विलियम क्रुक ने इनमें से एक को सिंगरौली रियासत का राजा बताया है। जहाँ तक इनकी शरीर रचना का प्रश्न है, इस जाति से सबंधित लोग यहाँ के अन्य आदिवासियों से भिन्न हैं। कर्नल डाल्टन इनकी तुलना संथालों से करते हैं और लिखते हैं कि ये लोग काले, दबी नाक वाले, मोटे तथा चौड़े होठं वाले, चपटी हड्डी वाले हुआ करते हैं। क्रुक के अनुसार दक्षिणी मिर्जापुर अर्थात वर्तमान सोनभद्र में अन्य द्रविड जातियों के साथ रहते हुये इस जाति के लोग आसानी से अलग नहीं होते, लेकिन खैरवार अपने नाम की बनावट और भुइयार अपनी नासिक्य ध्वनियों के उच्चारण के कारण सहज रूप से अलग दिखते हैं। 5 सोनभद्र के दुद्धी क्षेत्र में तीन जातीय पंचायते है जो गौडा, बजिया और बभनी में केन्द्रित हैं। जाति का मुखिया या महतो जाति के किसी व्यक्ति के संबंध में सूचना मिलने पर पहले

---

1 Discriptive Ethonology - Dalton - Page 209
2 Discriptive Ethonology - Dalton - Page 210
3 Tribes & Caste of the North West India - Crooke, Page 238, Part II. (Published - 1886)
4. Tribes & Caste of the North West India - Crooke, Page 238, Part III
5 Tribes & Caste of the North West India - Crooke, Page 240, Part III

स्वय जानकारी लेता है, जब भी किसी पर आरोप लगता है तो सही बोलने की शपथ ली जाती है। यदि पंचायत को साक्ष्य पर विश्वास नहीं रहता तो पाच लोगों की उपसमिति बनती है, जिसे पचकुटी कहते हैं। सिगरौली में पर्याप्त भोजन और मदिरापान की व्यवस्था करके पंचायत बुलाने की व्यवस्था है। गॉव के मुखिया को गवहॉं कहतें है। किसी अभियोग के समय एक गवहॉं कई गॉव में गवहॉं लोगों को बुलाकर निर्णय करता है। जहॉं तक वैवाहिक संबंधों की बात है, खैरहा उपशाखा के अलावा अन्य शाखाओं में आपस में विवाह की अनुमति है, लेकिन मामा और फूफा के परिवार में सबध निषिद्ध है। इस जाति में बहुपत्नीत्व की प्रथा प्रचलित है। विधवा-विवाह भी स्वीकृत है। अन्य हिन्दू परिवारों की तरह अन्य परम्परायें इनमें प्राप्त हैं। आदिम जातियों की तरह मिर्जापुर के खैरवारों में कुछ अति प्राचीन प्रथायें भी प्राप्त हैं। मगनी अथवा बरेखी के लिये एक दिन निश्चित होने पर लड़के का पिता तीन या चार हडिया शराब तथा पॉच रूपये नकद के साथ पूआ (खाद्य) लेकर जाता है। उसके साथ बिरादरी के चार - पॉच लोगों का होना जरूरी है। लड़के और लडकी का पिता आमने - सामने बैठते हैं तथा लड़के का पिता लड़की के मूल्य को थाली में रखकर लडकी के पिता को देता है, फिर थाली शराब से भर दी जाती है तथा उसका आदान - प्रदान किया जाता है। यह काम चार बार और होता है। इसके बाद वर पक्ष के लोग घर से बाहर जाकर जमीन पर बैठ जाते हैं फिर लड़की की एक या दो सहेलियॉं उनके पास आती हैं और कहती हैं कि लडकी का पिता आपका सम्पूर्ण सत्कार नहीं कर सकता, इसलिये उसने चौराई का साग भेजा है। उन्हें उत्तर मिलता है कि हमारा संबंध हर तरह से समधी के साथ है, फिर साथ में लाये बकरे को, लड़की के पिता को दे दिया जाता है जो इससे मांसाहार बनवाता है, जिसे सभी स्वीकार करते हैं। इनमें कलश, दूब, महावर जैसे प्रसाधन अन्य जातियों की तरह प्रयुक्त हैं। द्वारपूजा, टीका, जनवासा, कोहबर जैसी प्रथाये अन्य हिन्दू जातियां के समान प्रचलित मिलती हैं। जहॉं तक अन्त्येष्टि क्रिया का सबध है मरणासन्न व्यक्ति को मरते समय खुली हवा में इस जाति के लोग रख देते हैं तथा मृत्यु के दिन, घर व आगन में कोई नहीं सोता। विलियम क्रुक पश्चिमी लेखक टाइमर की पुस्तक **Primitive Culture भाग — 1** में उल्लिखित एक उदाहरण के आधार पर मानते हैं कि यह प्रथा कांगो के नीग्रो जाति से मिलती जुलती है। 1 मृत्यु के दसवें दिन मृतक के नाम पर बकरे की बलि देने की प्रथा इनमें प्रचलित है। खरवार अपने को हिन्दू कहते हैं, लेकिन सूर्य के अतिरिक्त अन्य देवता की पूजा नहीं करते। इनके जातीय देवता है - राजा लाखन तथा कोटा की ज्वालामुखी देवी। विलियम क्रुक यह मानते हैं कि कांगडा घाटी में नारकोट स्थान परप्राप्त ज्वालामुखी देवी से खैरवारों की देवी भिन्न हैं। लाखन की पूजा सावन में होती है। जहॉं हवन करते हैं और बकरे की बलि दी जाती है। ज्वालामुखी देवी की भी पूजा सावन में होती है। इसके अतिरिक्त डिहवार बाबा, धरती माई तथा महादेव की भी उपासना खैरवार करते हैं तथा बैसाख महीने में बैगा बकरे की बलि देकर इन्हें प्रसन्न करता है। यदि किसी खैरवार को एक से अधिक पत्नियॉं हैं तो सबसे ज्येष्ठ को ही इस तरह की पूजा में सम्मिलित होने का अधिकार है। घर के दक्षिण- पश्चिम कोने का घर इनका देवथर (देवगृह) होता है, जिस घर पर भूलकर भी कोई बात नहीं चलाता। घर में नई दुल्हन के आने पर रसोई-घर के सामने दूल्हा देव की पूजा होती है। इस जाति में मूछक रानी नाम की एक स्थानीय देवी का भी उल्लेख है जो जाति से चमाइन थी, लेकिन इस परिवार में पूज्य है। इस जाति का मुख्य पर्व भादों

---

1 **Tribes & Caste of the North West India - Crooke, Page 246, Part III**

महीने में मनाया जाता है, जब करम वृक्ष की डाल काटकर इस जाति के लोग आगन में गाड़ते हैं। धागर जाति के ही लोगों की तरह इस जाति के लोग रगीन वस्त्र पहनते हैं तथा पुरूष व स्त्री आमने - सामने पक्तिवद्ध होकर खडे हो जाते हैं। उस समय मादर बजाकर ये लोग मडलाकार नृत्य करते हैं। इस बीच इनमें से ही कोई दैवीय शक्ति से प्रभावित हो जाता है, और रूक - रूक कर, अस्फुट रूप में शब्दों का उच्चारण करता है। इस समय इनके कृषि देवता वघेसर की पूजा बैगा करता है। मुर्गा तथा एक उजली मुर्गी की बलि आदि चण्डी देवी के नाम से अर्पित करता है। विलियम क्रुक बगाल के मुण्डा परिवार के लोगों से इसकी तुलना करते हुये इस प्रथा को उसी प्रकरण से जोडते है। 1 इस जाति के लोगों में एक स्थानीय सगठन मिलता है जिसे एका कहा गया है।

कोल

विन्ध्य-श्रृंखला की कैमूर शाखा के आसपास कोल जाति के लोगों का पर्याप्त सख्या में निवास है। विलियम क्रुक के अनुसार यह जाति द्रविड़ कुल से संबध रखती है। 2 कोल का शाब्दिक अर्थ है सूअर। लोहार डागा के मुण्डाओं से आकृति सादृश्य का उल्लेख करते हुये कर्नल डाल्टन मिर्जापुर (वर्तमान सोनभद्र) में निवास करने वाली कोलों की शरीर रचना के प्रति टिप्पणी करते हैं और यह मानकर चलते हैं कि इनकी लबाई लगभग 5 5 फीट की होती है और और आर्यों के रक्त से इनका काफी संकरण हो गया है। कुछ कोलों की नाक लम्बी भी मिलने लगी है। स्त्रियाँ आकर्षक दिखती हैं, पुरूषों में मगोल जाति का सादृश्य अधिक है तथा अपने काले घुघराले वालों के कारण कोल संथालों के निकट दिखायी पडते हैं। इनका रंग ताबई है। माथा आगे की ओर उभरा हुआ। सोनभद्र में निवास करने वाले कोल गाढ़े रंग के है और इनकी देह रचना खैरवारों के करीब है।

इनकी वश उत्पत्ति को लेकर जनश्रुति है कि चन्द्रवश के राजा ययाति ने अपने राज्य को पाँच बेटों मे बाँट दिया तथा उनकी दसवीं पीढी के चार भाई पाण्डय कोरल, चोल व कोल ने मिलकर वंशानुक्रम में राज्य बाट लिया। वर्तमान कोल इसी कोल वंश के वशज है। 3 इस क्रम में सिंगबोंगा की भी चर्चा है जिन्होंने पुरूष - स्त्री के रूप में युग्मों को पैदा किया जो इस जाति के आदि पुरूष थे। 4 मिर्जापुर (वर्तमान सोनभद्र) में निवास करने वाले कोल रीवा राज्य के समीपवर्ती छोटे राज्य वर्दी के क्यूतली नामक स्थान से विस्थापित होकर आकर बसे। इस बात का उल्लेख विलियम क्रुक करते हैं। 5 आने वालों में नान्हू नामक कोई व्यक्ति था, जो इनका पूर्वज था जिसने चुनार के निकट अपना उपासना क्षेत्र बनाया, जिनकी देवी थी विरन्हा देवी। कुआर अथवा चैत के महीने में हवन द्वारा इनकी पूजा होती है तथा बकरे की बलि दी जाती है।

---

1 Tribes & Caste of the North West India - Crooke, Page 252, Part III.
2 Tribes & Caste of the North West India - Crooke, Page 294, Part III.
3. Asiatic Researches Page 91, Part IX "- K. Willford. " Reference - Ethnology - K Dolton Page - 161
4 Mirzapur District Gaztaier Page 101
5. Tribes & Caste of the North West India - Crooke, Page 296, Part III

कर्नल डाल्टन के अनुसार इनके जातीय उपास्य हैं राजा लाखन अथवा लाखन देव। मिर्जापुर डिस्ट्रिक गजेटियर के अनुसार भी इनके मुख्य देवता राजा लाखन हैं। यह चर्चा है कि सक्तेसगढ़ और कोलना परगना (दोनों चुनार तहसील के महत्वपूर्ण स्थान) के शासक थे ये कोल। बनारस में एक परगना है कोलअसला। यह इन्हीं कोलों के नाम पर है। मिर्जापुर में यह सन्दर्भ इसी रूप में प्राप्त हैं। सोनभद्र में निवास करने वाले कोल अपना अलग टोटेम मानने वाले लोग हैं। गाँव में इन्हें दहइत भी कहते हैं, जिसका एक अलग ही रूप है - महतियान या महतो। थाकुरिया, बनज, बरवार बिन, बिन्द, हरबरिया, रजबरिया इनकी उपशाखायें हैं। कोलों में ये लोग अपने को चेरों भी कहते हैं लेकिन सोनभद्र में दोनों में भिन्नतायें है। इनकी अपनी जातीय पचायत है जिसमें परिवार का मुखिया और इनका मुखिया बैठता है जो विवाह और नैतिकता के प्रकरणों में निर्णय करता है। पचायत का चौधरी आनुवंशिक रूप में निर्धारित होता हैं। गमीर अपराधों में सबंधित व्यक्ति को जाति से बाहर कर दिया जाता है, जिसे एक निश्चित खान-पान की व्यवस्था के बाद शामिल कर लिया जाता है। इनमें वैवाहिक संबध अपनी कूरी में होता है, लेकिन नाना और बुआ के निकट सबधों पर विचार करने के बाद ही निर्णय होता है। शताब्दी पूर्व विलियम कुक के सर्वेक्षण के समय वधु का मूल्य कुल चार आना तय था। आज वह केवल प्रतीक भर रह गया है। खरवाँस को छोडकर बाकी महीनों में इनमें विवाह का प्रचलन है। दूल्हे के मित्र दुल्हन द्वारा बनाई खिचरी खाते हैं तथा उसे भेंट देते हैं। स्त्रियाँ कठिन परिश्रम करती हैं। परिवार में बहुपत्नीत्व की प्रथा है जिसमें अन्य पत्नियों के चुनाव अथवा अन्य प्रकरण में बड़ी पत्नी ही निर्णय करती है। इनमें जो लोग बधू मूल्य नहीं दे पाते, उनमें अपवाद रूप में कुछ अविवाहित भी मिल जाते हैं। जाति से बाहर देह संबध वर्जित है। बाल विवाह इनकी प्रथा में नहीं है। लड़की जब तक सयानी नहीं होती, इस जाति के लोग सामान्यतया उसका विवाह नहीं करते। इनमें तलाक के संबंध में एक निश्चित धारणा है। कोई भी पुरूष तथा स्त्री जो किसी कारणवश जाति से बाहर कर दिया गया है, उसे तलाक दिया जा सकता है। जिन स्त्रियों के बच्चे हैं, बिना प्रमाण के उन्हें तलाक नहीं दिया जाता। यदि किसी महिला को अभिचार के कारण तलाक मिलता है तो वह स्थायी रूप में जाति से निष्कासित होती है और उसे पुर्नविवाह का अवसर नहीं मिलता। बच्चे के जन्म अथवा अन्य प्रकरणों में इनमें स्थानीय अन्य सवर्णों की तरह अन्य प्रथायें प्रचलित हैं। कुक ने मिर्जापुर (वर्तमान सोनभद्र) के वर्तमान सदर्भ को उधृत करते कहा है कि चूंकि इस क्षेत्र में वधू मूल्य बढ़ गया है, इसलिए इन प्रकरणों में थोड़ा अन्तर आया है। विवाह में सुग्गा, मांनर, मटमंगरा, कोहबर जैसे प्रकरण सामान्य हैं। मृत्यु के समय कोल व्यक्ति को जमीन पर लिटा देते हैं। इनमें शवदाह की प्रथा हो गयी है। केवल छोटे बच्चे जमीन में दफनायें जाते हैं। सोन नदी के उत्तर रहने वाले कोल मृतक को गाडते भी है। शवदाह के बाद घर लौटकर सभी थोड़ा - थोड़ा दूध पीते हैं। कुश से जल छिड़कते हैं। कुक ने लोहे के एक टुकड़े को लोटे में रखकर पीपल के वृक्ष में घण्ट बाधने की बात मिर्जापुर के कोलों के संबंध में लिखी है।

कोल अपने मृत पुरखों की भी पूजा करते है। जिनमें सिंगबोंगा प्रमुख है। बंगाल के मुण्डा लोगों की तरह ये सूर्य की भी पूजा करते हैं। 1 कोल भूत - प्रेत भी मानते हैं, उनसे डरते भी हैं। डिहवार बाबा, बड़ा देव या बड़का देव की भी पूजा इनमें होती है। पूजा घर के अगल - बगल ये लाल भांग गाड़ते हैं तथा बलि देकर देवता को प्रसन्न करते है। इनके पर्व त्यौहारों के संबंध में रिस्ले को उधृत करते हुये

1 Mirzapur District Gazttleer Page 101

कुक का मानना है कि मिर्जापुर सोनभद्र के कोल मुण्डा लोगों की तरह त्यौहार मनाते हैं। लेकिन नवरात्र, खिचड़ी, नागपचमी जैसे पर्व भी इनमें प्रचलित हैं। स्त्रियाँ गोदना गुदाती हैं। इनकी दृष्टि में गाय का हर रोआ देवता है। इस कारण कोलारियन शाखा के अन्य जातियों की तरह दूध के प्रयोग के प्रति इनमें पूर्वाग्रह है। ये सबका छुआ नहीं खाते। माँसाहार इनमें प्रचलित है। कृषि इनका मूल व्यवसाय है और खेती से जुड़े ये लोग जगल जलाकर भूमि तैयार करते हैं और खेती करते हैं।

कोरवा

कोरवा का उल्लेख मिर्जापुर के दक्षिणाचल अथवा वर्तमान सोनभद्र के लिये होता आ रहा है, लेकिन दुद्धी तहसील के कुछ स्थानों के अतिरिक्त इस जाति के लोग अन्यत्र प्राप्त नहीं हैं। कुक ने सोन के दक्षिण सरगुजा के आस - पास इनका निवास बताया है और यह कहा है कि दो पीढ़ी पहले ये सरगुजा से आकर दुद्धी के पठार में आकर बसे थे। 1 कुक के बाद लगभग 100 वर्ष की अवधि बीत गई है। इसमें चार पीढ़ी और की सभावना की जा सकती है। इस जाति की उत्पत्ति के संबध में कई तरह की अन्तर्कथायें मिलती हैं। छोटा नागपुर के कूर लोगों से भी इनका संबध जोड़ा गया है। कुक इन्हें कोल से भी जोडते हैं। कोरवा की जो अन्य उपशाखायें बगाल में मिलती हैं जैसे अगरिया कोरवा, दंद कोरवा, डीह कोरवा, पहरिया कोरवा, उनका कोई भी चिन्ह सोनभद्र में नहीं है। सोनभद्र (पुराना मिर्जापुर) में प्राप्त इस जाति की दो उपशाखायें, कोरवा और कोराक का उल्लेख विलियम कुक ने कर्नल डाल्टन के आधार पर किया है। उनके अनुसार कोरवा - दुद्धी तथा सरगुजा के दक्षिणी हिस्से में रहते हैं तथा कोराक सरगुजा की घाटियों में। कोरवा सदैव धनुष बाण लिये रहते हैं। कुक का यह मानना है कि मिर्जापुर के कोरवा पुरूषों की कोराकु व महिलाओं को कोरिक बोलते है। 2 जाति के लोग खेती नहीं करते। जंगली पशुओं की तरह निवास करते हैं। चूंकि महिलायें अधिक परिश्रमी हैं इसलियें इनकी प्रभुता परिवार में अधिक है। कुक ने इनकी जातीय पंचायत को भइयारी कहा है। कोरवा जाति के दो प्रधानों सोमचन्द्र कोरवा का उल्लेख विलियम कुक ने किया है। जब भी किसी अभिचार के सबंध में निर्णय करने के लिये जाति पंचायत बैठती है तो इस जाति की प्रत्येक बालिग स्त्री को उसके बैठने का अधिकार प्राप्त है। यहाँ दण्ड के रूप में केवल दावत देने की व्यवस्था है और यदि कोई आज्ञा नहीं मानता तो उसे दावत देने तक जाति से बाहर रखा जाता है। मिर्जापुर - सोनभद्र की चर्चा करते हुये कुक का मानना है कि इस जाति में उपशाखा नहीं है। मामा व फूफा को छोड़ विवाह की स्वीकृति है लेकिन कभी - 2 चार पीढ़ी तक यह संबंध नहीं बनाया जाता। जनजातियों की यह अकेली जाति है जिसमें एक पत्नी-व्रत की बात की जाती है। लड़के के विवाह की आयु तथा लड़की की दस वर्ष स्वीकृत है। पत्नी के चयन में उसके रूप की तुलना में उसकी कार्य-क्षमता को अधिक महत्व है। 3 बहू का मूल्य एक मन चावल और पॉंच मन चावल तय है। विवाह तय होने के बाद किसी शारीरिक कारण या अन्य कारणों से विवाह नहीं तोड़ा जा सकता। जहाँ तक तलाक का संबंध है, इस

---

1 Tribes & Caste of the North West India - Crooke, Page 322, Part III

2 Tribes & Caste of the North West India - Crooke, Page 323, Part III

3 There is in Mirzapur no Exogamons subdivision selecting the wife working capability are more refered then beauty. - Tribes & Caste of the North West India - Crooke, Page 323, Part III

जाति का व्यक्ति डोम, चमार या धरकार के हाथ का छुआ खा लेता है तो पुरूष या स्त्री किसी को भी तलाक पाने का अधिकार है। तलाकशुदा स्त्री को पुनर्विवाह का अधिकार नहीं है। इनमें विधवा विवाह स्वीकृत है। सवा रूपये देकर विधवा को पत्नी के रूप में रखा जा सकता है यदि मृतक का छोटा भाई विधवा से विवाह का इच्छुक है तो वह स्त्री किसी बाहरी व्यक्ति में विवाह नहीं कर सकती। यदि विधवा का कोई दूध पीता बच्चा है तो उसे वह अपने नये पति के यहाँ ले जाती है। बडे बच्चे पति के यहाँ ही रहते हैं। किस घर में लड़का अथवा लडकी ब्याही जाय इसके अतिरिक्त यह जाति अन्य सबध नहीं जानती। विलियम क्रुक ने सबध सूचक कुछ शब्दों का उल्लेख किया है जो आज भी प्रचलित हैं। पिता को आया, दादा को तदन्ता, परदादा को दादी पुत्र को धेपोन, नाती को कुटी और पुत्र के नाती को बघेतु कहा जाता है। वैवाहिक प्रकरणों में लड़के का पिता जाकर लड़की देखता है और जब विवाह तय करता है। वधू जब घर आती है तो घर का बुजुर्ग उसे समझाता है कि तुम इसकी पत्नी व इसकी पतोहू हो गयी हो। इसमें मृतक को जलाने व गाडने दोनों की प्रथायें है। मृत्यु के दिन ये पूरे समूह को खबर देतें हैं जिसे खोइया या खउर देतें हैं। ये न तो अपने को हिन्दू कहते है न ही इनकी धार्मिक क्रिया में किसी ब्राहम्ण का संबंध है। फागुन के महीने में मुर्गा, सिन्दूर व फूल चढ़ाकर ये अपने जातीय देवता राजा चंडोल की पूजा करते हैं। यह क्रिया इनका बैगा सम्पन्न कराता है। बैगा बूंद – बूद मदिरा गिराते हुए गाँव से बाहर जाता है ताकि गाँव के भूत गाँव से बाहर चले जाँय। गभीर अस्वस्थता के अतिरिक्त कोरवा अपने पूर्वज की पूजा नहीं करता। स्थानीय देवताओं में डीह देवता, ग्राम देवता और गृह देवता की पूजा करते है। गाँव में यदि चेचक व कालरा का प्रभाव होता है तो गुड व घी से बैगा हवन करता है। यह जाति शिकारी व मांसाहारी है लेकिन ये सबका मांस नहीं खाते। भालू, बदर सूअर की मास इन्हें प्रिय है। ये मदिरा गाजा, तबाकू लेते हैं। महुआ इनका प्रिय भोजन है। जंगली फलों में पियार जिससे चिरोंजी बनती है, अधिक खातें हैं। जड़े खोदकर उनका व्यवहार भोजन के रूप में अधिक है। जगली बस्तुओं को आस-पड़ोस से विनिमय कर ये अन्य वस्तुयें भी ले लेते हैं। कम से कम कपड़ा इनके शरीर पर देखा जा सकता है। कोरवा स्त्री हाँथ में गिलट का कडा व पैर में पैरी पहनती है। ये टांगी व भाला चलाने मे निपुण होते हैं। सूखे बांस को रगड़कर उससे आग निकाल लेना इनकी मुख्य कला है। क्रुक कोरवा को प्राचीन जनजाति मानते हुये यह कहते है कि प्रान्त की यह सबसे असहाय निर्धन जाति है। 1 क्रुक अथवा कर्नल डाल्टन ने गुलाम भारत में इस जाति का सर्वेक्षण किया था लेकिन एक शताब्दी बाद भी कोरवा के स्वभाव, सस्कार तथा सामाजिक, आर्थिक स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं आया है।

मझवार

मझवार, माझीं अथवा गोड़ द्रविड जाति से संबंधित एक ऐसी परम्परा है जो दक्षिण सोनभद्र में निवास करती है। 2 माझी अथवा मझवार की उत्पत्ति विद्वानों ने संस्कृत मद्य शब्द से की है,जिसका संथालों अथवा मुण्डा जाति में अर्थ होता है मुखिया। . जिला गजेटियर मिर्जापुर के अनुसार मझवार गोड जाति की उपशाखा है।[3] प्रथम दृष्टतया मझवार गोंड़ की तरह दिखाई पड़ता है। इनका विवरण प्रस्तुत करते

---

1. Tribes & Caste of the North West India - Crooke, Page 334, Part III
2. Tribes & Caste of the North West India - Crooke, Page 413, Part III.
3 Mirzapur District Gaztaier Page 102

हुए क्रुक ने कैप्टन फोरसीथ को उधृत किया है,जिनके अनुसार माझी पूर्णतः नंगा ,-. तथा कभी - कभी शरीर के मध्य भाग में एक पतली पट्टी लपेटे दिखायी पड़ता है जिससे इसे आदिवासी मानने में कोई कठिनाई नहीं है। इनका गठन सामान्य तथा छोटे कद का है। इनमें कोई - कोई पाच फुट दो इच से बड़ा मिलता है। इनका रंग काला - भूरा है। अधिकाशत काला लेकिन यह काला रग नीग्रो प्रजाति के लोगों के निकट नहीं है। इनका चेहरा चौडा है माथा नीचा। नाक चपटी व दबी हुई ओठ भारी, लम्बे,लेकिन जबड़ा नीग्रो जाति की तरह नहीं है। चेहरे परबाल न के बराबर तथा सिर पर घने बाल कंधे चौड़े, नीचे की तरफ पाव पतला दिखने में हंसमुख। इनमें अधिकाश एक छोटी कुल्हाड़ी लेकर चलते हैं, जिसके बिना मझवार जगल में जाते ही नहीं। 1 इस सदर्भ के साथ सोनभद्र के मझवारों का सिर थोडा बड़ा, नाक थोडी दबी,जो कोल व पनिका से उन्हें भिन्न करती है। माझी लोगों की नाक विशेष बड़ी, आकार में पतली तथा नुकीली दिखती है, जो इन्हें गोड़ों से अलग करती है। जहाँ तक वस्त्र का सबध है सोनभद्र में निवास करने वाले माझियों का वेश मध्य भारत के गोंड़ माझियों से अच्छा है। 2 वर्तमान समयमेंमाझीं पूरे शरीर में कपडा पहनता है। क्रुक के अनुसार मिर्जापुर के दक्षिणाचल (वर्तमान सोनभद्र) में निवास करने वाला मझंवार पांच उपशाखाओं में विभाजित है,जिनमें अलग - अलग जातीय टोटेम की प्रथायें प्रचलित हैं। इनका मानना है कि कभी गोंड़ मझवार के किसी पूर्व पुरूष की पांच संताने थीं जिसकी ये वशज हैं। ये पाच उपशाखायें हैं-

1 पोइया 2 तेकाम या तेकमा 3 भराई 4 ओईका या वाइका 5 ओल्कु

मिर्जापुर डिस्ट्रिक गजेटियर में इसका उल्लेख है। इनकी दूसरी उपशाखा तेकाम अथवा तेकमा मरपची नेताम्, पोसाम, बरियाम, सेन्ट्रल, ओइमा, दादाइची, कोआइची, उलगावती और कारगोती हैं। इन मझवारों की परम्परायें तथा टोटेम पश्चिमी पर्वत श्रृंखला के जबलपुर के आसपास सोननदी और नर्मदा से जुडे हैं। इनका मानना है कि ये इन नदियों के आसपास के गढ़ों से होकर पश्चिमी विन्ध्य श्रृखला और पहाड़ियों में आये। इनके पांच भाइयों में भराइ महानतम था जिसने मण्डलगढ़ या मण्डला पर शासन किया और किले का निर्माण कराया। 3

तमाम अन्त- साक्ष्यों से प्रमाणित है कि यह जाति एक ही टोटेम से जुडी है। एक अर्न्तकथा है- इनके पूर्वजों में पांच भाई नदी पार कर रहे थे,जिनमें दो नदी नहीं पार कर पाये। एक कछुये ने पीठ पर बैठा कर उन्हें नदी पार कराई। यही दो लोग पोइया व तेकाम उपशाखा के आदि पुरूष थे। इस कारण इस शाखा के मझवार कछुये की पूजा करते हैं तथा न तो कछुआ मारते हैं न घायल करते हैं। इनका मानना है कि दस पीढ़ी पहले ये सरगुजा से सोनभद्र के सिंगरौली या दुद्धी आये। अपनी आदि भूमि से, अपना सबध जोड़ने के लिये ये मझवार सारंगगढ़ तथा मरूआगढ़ में स्थापित प्रतिमाओं की पूजा करने जाते हैं। इनमे एक कथा है कि जब राम ने जनक के प्रसिद्ध धनुष को तोड़ा,उसका एक टुकड़ा नर्मदा के तट पर भी गिरा। यह स्थान मझवारों की तीर्थ भूमि है। मझवार जहाँ भी हैं, इनके जातीय देवता हैं बूढ़ा देव या मिगो और उसकायह स्थान मझवारों की तीर्थ भूमि है। मझवार जहाँ भी हैं इनके जातीय देवता है बूढ़ा देव या मिगो और

---

1 Island of Central India- Capitan Forsyth- Page 125
2. Tribes & Caste of the North West India - Crooke, Page 414, Part III
3. Central Province Gazetteer - Dalton - Page 191.

उसका सेवक बाधीया। इनका मानना है कि नर्मदा के तट पर इनके भी मंदिर हैं। साल वृक्ष में माझी बूढ़ादेव का निवास मानते हैं।इसलिये ये साल का वृक्ष नहीं काटते। टोटेम से जुड़ा होने के कारण इनके वैवाहिक संबंध आपस में नहीं होते। इनमें पोइया वश के लोग अपने को श्रेष्ठतम मानते हैं।इसलिये दूसरों में ये विवाह नहीं करते। इनकी अपनी जातीय पंचायत है, जो विवाह या अन्त्यकर्म के समय जुटती है। विवाह, ब्यभिचार, भोजन जैसे प्रकरणों में इस जाति का गौंहा (या मुखिया) निर्णय करता है। इनमें बाल-विवाह प्रचलित नहीं है। किसी निर्धन व्यक्ति को, यदि वह विवाह का मूल्य नहीं दे पाता, तो घर जवाई बनकर ससुराल में रहना पड़ता है। विवाह तय होने पर दोनों पक्ष के पिता हाथ में दोना भर मदिरा लेकर विवाह निर्णय की घोषणा करते हैं। इस जाति में भी दुल्हन खरीदी जाती है। सोनभद्र में लडकी के लिये धोती या साड़ी तथा तीन मन चावल देकर यह निर्णय किया जाता है। लड़के की ओर से एक कुण्डा (मिट्टी का बर्तन) पूड़ियों से भरा तथा पाच रूपया नकद भेजकर यह क्रिया पूरी होती है। एक प्रकरण यहाँ उल्लेखनीय है कि विवाह में दूल्हा उजले कपड़े पहनकर ही जाता है। रंगीन कपडो का प्रयोग निषिद्ध है। 1 इनमें दूल्हा उठाकर विवाह करने की प्रथा है। विवाह के बाद कोहबर की प्रथा इनमें प्रचलित है। मझवारों में हिन्दू विवाह पद्धति की सामान्य क्रियायें भी अपनायी जाती हैं। विवाह के देवताहैंदूल्हादेव, जिनकी उपासना माझीं उत्सव की तरह करता है। इनमें विधवा-विवाह का भी प्रचलन है, जिसमें मृतक के छोटे भाई का विधवा से विवाह का पहला अधिकार प्राप्त है। ऐसा न होने पर कुरी के भीतर दूसरा व्यक्ति उससे विवाह कर सकता है। ऐसा व्यक्ति धागे से बनी पहुँची, पान का पत्ता दो मन चावल तथा धोती या साड़ी भेजता है। फिर विवाह का निर्णय होता है। इनमें तलाक की भी प्रथा होती है। आदिवासियों में मंझवार ऐसी जाति है जिनमें उत्तराधिकार के नियम बताये गये हैं। विधवा के साथ ही लडकी के उत्तराधिकार की चर्चा यहाँ है। यह जाति अन्यों की तुलना में थोड़ी अधिक विकसित है। जहाँ तक अन्य क्रियाओं का संबध है, माझी भी मृतक को जलाने या दफनानें का कार्य करता है। चेचक में मरे व्यक्ति कोजलाया जाता। अविवाहित बच्चों को भी नहीं जलाते। मरने वाले व्यक्ति के मुँह में चावल, दही और चाँदी का टुकड़ा मंझवार डाल देता है। मृत्यु की सध्या को घर से बाहर पत्तल में खाना निकाला जाता है, जिसके पीछे विश्वास है कि मृतात्मा इस दिन आती है। मझवारों की क्रियायें पठारी जाति के लोग कराते हैं अथवा ब्राहम्ण। इनमें महादेव, बड़ादेव, निर्गोबाधिया, बूढ़ादेव की उपासना प्रचलित है। माझी भूत प्रेत पर पूरा विश्वास करता है। मझवार का प्रिय नृत्य है करमा, जो करम वृक्ष की डाल को आगन में डालकर सपन्न होता है। पुरूष तथा स्त्रियों का समूह पंक्तिबद्ध आगे जाकर फिर पीछे जाकर नृत्य करता है। इनका एक वाद्य है जिसे ये मादर कहते है, जिसे बजाते हुये समवेत रूप में ये करमा गाते हैं। जब भी कोई महिला पीपल के वृक्ष के नीचे से गुजरती है तो अपना सिर झुका देती है। साल वृक्ष से मिलते किसी वृक्ष को माझी नहीं काटता। इनके कुछ विश्वास, इनकी प्रचलित प्रथायें हैं। कृषि इनका मुख्य व्यवसाय है। इनमें पारिवारिक एकता दिखाई पड़ती है। जहाँ तक मझवार के आधुनिक जीवन का प्रश्न है, सोनभद्र में इन जातियों में अन्य की तरह काफी परिवर्तन हो गया है तथा स्थानीय औद्योगिक विकास ने इनके वेश और पहनावे को पूरा बदल दिया है, चूंकि आरक्षण के नियम इन पर लागू हैं, इसलिये ग्राम पंचायत, विधायक आदि पदो पर इस जाति वर्ग के लोग चुने जाने लगे हैं।

1. **Tribes & Caste of the North West India - Crooke, Page 421, Part III**

जनजातियो के सबध मे प्रचलित विचार तथा आधुनिक सदर्भ.–

सोनभद्र जनपद में निवास करने वाली जातियों को लेकर जो भी मान्यतायें आज प्रचलित हैं, उनमें कुछ बातें बडी स्पष्ट हैं : –

- जिन्हें हम आदिवासी कहते हैं,आज की भाषा में उन्हें अनुसूचित जाति अथवा अनुसूचित जनजाति कहा जाता है।
- इन आदिवासियों जातियों में अधिकांश का सबध सोनभद्र के दक्षिणांचल से है तथा इनकी बहुसंख्यक आबादी कैमूर घाटी के ऊपर, नीचे तथा सोनपार क्षेत्र में निवास करती है।
- इस क्षेत्र में निवास करने वाली प्राय सभी जातियों के संबध में पश्चिमी विद्वानों विशेषतः **रिस्ले** व **कुक** ने इनकी सामाजिक संरचना पर सम्पूर्ण प्रकाश डालाहै भारतीय विद्वानों में **प्रोफेसर मजमूदार** विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। **डाल्टन** का नाम भी इस प्रकरण में लिया जा सकता है। यहॉ यह सूचना योग्य है कि 19 वीं शती में इन विद्वानों ने इन जातियों के सबंध में जो भी विवरण दिया है, एक शताब्दी बाद उनमें पर्याप्त परिवर्तन आ गया है और केवल भाषा ही नहीं,अपने जनजातीय आचार व व्यवहार भी ये जातियॉ भूलने लगी हैं।
- पश्चिमी विद्वानों के निष्कर्ष के अनुसार इन जातियों में अधिकांश की उत्पत्ति द्रविड़ियन कही गयी है। इससे यह पता लगता है कि सोनभद्र के दक्षिणाचंल में आर्य जातियों से सबंधित सवर्ण जातियों का निवास अपनी प्रारम्भिक स्थिति में नहीं के बराबर रहा है।

वर्तमान अवधि में सर्वेक्षणों के उपरान्त इन जातियों से संबंधित लोग अपनी उत्पत्ति के संबंध में न तो यह बता पाते हैं कि ये द्रविड हैं,न ही इनका जनजातीय मूल क्या है? अतः आज इन जातियों में पारस्परिक मिश्रण अथवा सकरता भले ही नहीं है,लेकिन शुद्ध रूप की पहचान उतनी सरल नहीं रह गई है। जहॉ तक इनमें प्रचलित प्रथाओं की बात है,कुछ जातियों की अपनी विशिष्ट पहचान ही है।जैसे-विलियम कुक के अनुसार मझवार जाति के लोग मृतक पुरूषों को जलाते थे तथा स्त्रियों को दफन किया करते थे। आज यह भिन्नता नहीं है। वर्तमान समय में मृतक पुरूष हो या स्त्री दोनों ही जलाये जाते हैं। आज के वर्तमान में इनके पर्व – त्यौहार, प्रथायें व विश्वास काफी कुछ स्थानीय आर्य-जाति की परम्पराओं के निकट आ रहे हैं और एक सास्कृतिक संक्रमण देखा जा सकता है।

जनपद-सोनभद्र

अध्याय 2

भाषिक भूगोल

सोनभद्र का भाषिक भूगोल

भाषिक भूगोल की प्रस्तावना पश्चिम की है। बीसवीं शती के पूर्वाद्ध में ही अमेरिका में भाषिक सर्वेक्षण का जो स्वरूप तैयार किया गया उसमें दो बिन्दु स्पष्ट होकर सामने आये। एक था डाइलेक्ट ज्यागर्फी का और दूसरा था डाइलेक्ट एटलस का। डाइलेक्ट एटलस के अन्तर्गत अमेरिका के सुदूर क्षेत्र में बसे अफ्रीकन मूल तथा रेड इंडियन के आवासों को चिन्हित करते हुये नक्शें तैयार किये गये और उनसे भाषिक रूपों की विविधतायें तय की गईं। बोली और भूगोल का कार्य तुलनात्मक रूप में जटिल होता है और भाषिक अध्ययन की वह प्रक्रिया अथवा स्थिति है जिसमें एक क्षेत्र विशेष की सारी सीमाओं को, साथ ही भाषिक भिन्नता और शब्दकोश की विविधताओं अथवा गठनात्मक संदर्भों को, अनेकता को, स्पष्ट आकार के माध्यम से व्यक्त किया जाता है।

जहाँ तक भारतीय अध्ययनों का प्रश्न है इस दिशा में किये जाने वालें कार्य उंगली पर गिने जा सकते हैं। इस प्रकरण में जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन का प्रथम उल्लेख हो सकता है, जिन्होंने भारतीय भाषाओं का सर्वेक्षण करते हुये मिर्जापुर जनपद (वर्तमान सोनभद्र) की भाषाओं का भी विश्लेषण प्रस्तुत किया है, और सोनभद्र **जनपद** के सोनपार की भी चर्चा की है। इस प्रकरण में इलाहाबाद विश्वविद्यालय में प्रस्तुत दो शोध-प्रबन्धों का उल्लेख प्रासंगिक है। एक है **" अवधी व भोजपुरी की संक्रान्ति भाषा का अध्ययन "** प्रस्तोता - डा० अमर बहादुर सिंह और दूसरा है **" मिर्जापुर की आर्य बोलियों का संकालिक अध्ययन "** प्रस्तोता - डा० मूलशंकर शर्मा। इन दोनों शोध प्रबन्धों में मिर्जापुर के सम्पूर्ण परिक्षेत्र तथा उसके दक्षिणांचल (वर्तमान सोनभद्र) की विस्तृत चर्चा हुई है तथा आर्य बोलियों की सीमा रेखा तय करते हुये उन पर प्रकाश डाला गया है।

जहाँ तक सोनभद्र का प्रश्न है, इसका भाषिक-संदर्भ बहुरगी तथा जटिल भाषिक प्रयोगों से युक्त है। कारण बहुत स्पष्ट है, इस पूरे परिक्षेत्र के वक्ताओं को तीन वर्गो में बाँटा जा सकता है-

1 पहला वर्ग उन वक्ताओं का है, जो सोनभद्र के विकास के मध्य काल में इस क्षेत्र में उत्तर की ओर से पहुँचे हैं और सोनभद्र में या तो भोजपुरी बोलते हैं, या अवधी। इसी श्रेणी में उन वक्ताओं को भी लिया जा सकता है, जो रीवा सम्भाग से प्रभावित होने के कारण बघेली बोलते हैं।

2 दूसरा वर्ग सोनभद्र में निवास करने वाले उन बोलने वालों का है जो इस जनपद के या तो आदिवासी हैं या आदिवासी वर्ग से संबंधित हैं और विस्थापित होकर सोनभद्र में बसे हैं। इनकी जनसंख्या का वितरण अपने ढंग का है। कहीं पूरे गाँव में एक ही जाति के मूल से जुड़ने वाले लोग बसे हैं, कहीं एक गाँव में कई आदिवासियों का मूल बसा है। इस तरह इन आदिवासियों का निवास अवधी क्षेत्र में भी है, बघेली क्षेत्र में भी है

व भोजपुरी क्षेत्र में भी है। इन अलग - अलग क्षेत्रों में निवास करने वाला आदिवासी या तो भाषिक संक्रमण से प्रभावित है या अपनी भाषा का मूल रूप भूल चुका है। फिर भी ऐसी जातियों का निवास सोनभद्र में अब भी है, जिनकी मूल भाषा अब भी सुरक्षित है। इस तरह बोलने वाले इस वर्ग को वक्ताओं के स्वभाव के आधार पर तीन उपवर्ग में बाँटा जा सकता है-

(क) वे वक्ता, जो अपनी मूल भाषा पूरी तरह भूल चुकें हैं।

(ख) वे वक्ता, जो अपनी मूल भाषा के साथ उस भाषा का भी प्रयोग करतें हैं जो उनके क्षेत्र में बोली जाती है। जैसे . भोजपुरी क्षेत्र में निवास करने वाला अपनी मूल भाषा के कुछ शब्दों के साथ भोजपुरी बोलता है। उसी जाति का आदिवासी यदि बघेली क्षेत्र में है, तो अपनी मूल भाषा के साथ बघेली बोलता है।

(ग) तीसरा उपवर्ग आदिवासी समूह से संबंधित उन बोलने वालों का है, जो अपने बीच अपने मूल जातीय भाषा का प्रयोग करते हैं। दूसरे शब्दों में यह समूह द्विभाषी है। अपने बीच में यह अपनी मूल जातीय-भाषा बोलता है तथा दूसरों से सम्पर्क भाषा के रूप में यह भोजपुरी, बघेली अथवा अवधी का व्यवहार करता है।

3 तीसरा वर्ग सोनभद्र का आधुनिक समाज है। औद्योगिक विकास के कारण देश के अलग - अलग प्रान्तों से बहुत बड़ी जनसख्या सोन के दक्षिणाचल में आकर बसी है तथा संयुक्त भाषिक आकार का एक उदाहरण सोनभद्र का दक्षिणी परिक्षेत्र बन गया है।

सोनभद्र जनपद के आदिवासियों के बोली भूगोल की पहचान करने से पूर्व इस जनपद में बोली जाने वाली आर्य भाषाओं का परिचय देना आवश्यक है। क्योंकि आर्यभाषायें ही आज की तिथि में यहाँ की मुख्य भाषा हो गयी हैं और आदिवासी परिवारों के साथ इनकी भाषायें पूरे परिक्षेत्र में बिखर गई हैं। इन आर्य-भाषाओं की विवेचना के दो प्राचीनतम सदर्भ प्राप्त हैं - एक है, जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन का भाषा सर्वेक्षण जिसमें खण्ड 6 व 8 में अविभाजित मिर्जापुर तथा सोनभद्र के दक्षिणांचल सोनपार की आदिवासी भाषाओं पर टिप्पणी की गयी है। डा० ग्रियर्सन ने सोन के दक्षिणी क्षेत्र को सोनपार कहा है तथा इधर बोली जाने वाली भाषा को सोनपारी नाम दिया है। डा० ग्रियर्सन इसे कोलारियन नाम भी देते हैं। इसके साथ ही उन्होंने जनपद में बोली जाने वाली अवधी, भोजपुरी तथा बघेली का भी उल्लेख किया है। इन प्राचीन सदर्भों में मिर्जापुर डिस्ट्रिक गजेटियर भी उल्लेखनीय है जिसमें 62 प्रतिशत से अधिक जनसख्या को भोजपुरी भाषी बताया गया है। 1 गजेटियर में 56 ऐसे व्यक्तियों का उल्लेख किया गया है जो मुण्डा या कोलारियन परिवार की भाषा बोलते हैं। इनकें लिये जिप्सी शब्द का प्रयोग किया गया है। 2 ग्रियर्सन का अभिमत डिस्ट्रिक गजेटियर से थोड़ा अधिक स्पष्ट है। वे लिखते हैं ' सोनपारी क्षेत्र की भाषा बघेली है। यह क्षेत्र बहुत विलम्ब से आर्यों के सम्पर्क में आया। यहाँ की आदिवासी जातियाँ अपनी बोली का प्रयोग अब छोड़ चुकी हैं। उनमें से कुछ आज भी कोरवारी बोलती हैं लेकिन यहाँ रहने वाली जाति कोल, जैसा कि अध्ययन से स्पष्ट हैं, बघेली भाषा का ही व्यवहार करती हैं। 3

---

1. Mirzapur District Gaztteer Page 116.
2 Mirzapur District Gaztteer Page 116.
3. भारत का भाषा सर्वेक्षण - ग्रियर्सन, भाग - 6, पेज - 116

जिन भारतीय विद्वानों अथवा प्रशासनिक एजेंसी के माध्यम से इस क्षेत्र के भाषा की विवेचना हुई है, उनके अध्ययन की भी बडी निर्णायक भूमिका है। भारतीय जनगणना प्रतिवेदन का नियमित एवं क्रमबद्ध प्रकाशन इधर नहीं हो रहा है। इसका आखिरी क्रमबद्ध रूप 1961 का है जिसमें दो महत्वपूर्ण आदिवासी बोलियों का सकेत किया गया है- वे बोलियाँ हैं धागरी व गोंड़ी। 1 धागरी भाषा आदिवासियों में महत्वपूर्ण जाति धागरों की अपनी भाषा है,जबकि गोंड़ी का सम्बन्ध गोंड जाति के लोगों से हैं।

इस प्रकरण में भारतीय विद्वानों में जिनका उल्लेख हो सकता है, वे हैं डा० बाबूराम सक्सेना,जिन्होंने अपने शोध प्रबन्ध ' Evolution of Avadhi ' में सोनभद्र में बोली जाने वाली बघेली का परिचय दिया है। दूसरे विद्वान हैं,डा० उदय नारायण तिवारी,जिन्होंने अपने शोध प्रबन्ध ' भोजपुरी का उद्भव व विकास ' (मूल अंग्रेजी) में भोजपुरी का उल्लेख करते हुये सोनभद्र के दक्षिणाचंल तक फैले उसके संदर्भों को उल्लिखित करना चाहा है। इस प्रकरण में तीसरा नाम डा० अमर बहादुर सिह का है। डा० सिह ने अवधी व भोजपुरी की संक्रान्ति रेखा पर प्रयुक्त होने वाले व्याकराणिक रूपों की विवेचना की है।

इलाहाबाद विश्वविद्यालय में इस दिशा में किया गया आखिरी कार्य डा० मूल शंकर शर्मा का है,जिन्होंने अपने शोध प्रबंध ***' मिर्जापुर की आर्य बोलियों का संकालिक अध्ययन '*** में न केवल अवधी, बघेली और सोनभद्र की मुख्य भाषा भोजपुरी पर प्रकाश डाला है अपितु आदिवासियों में प्रयुक्त होने वाली भाषाओं पर भी संक्षिप्त निष्कर्ष दिया है।

इतनी विवेचनाओं के बाद भी केवल आर्य बोलियों का ही बोली भूगोल निर्धारित हो सका है। आदिवासियों के जनसंख्या वितरण और भाषिक-प्रयोगों की पहचान आज भी गंभीर रूप से अपेक्षित है। इस स्थिति में,आर्य भाषाओं के भूगोल की विवेचना के बिना इस परिक्षेत्र में प्रचलित आदिवासियों के भाषिक क्षेत्र की पहचान कराना एक जटिल कार्य है। विद्वानों द्वारा अपनी विवेचनाओं के माध्यम से यह स्पष्ट है कि आर्य परिवार की भाषाओं में अवधी तथा बघेली के साथ भोजपुरी सोनभद्र जनपद की प्रमुख भाषा है। इस संबध में डा० अमर बहादुर सिंह के विचार एक स्पष्ट दृष्टि का परिचय देते हैं- " मध्य प्रदेश के सरगुजा जिले में 83 अंश पूर्वी देशान्तर पर मिर्जापुर (वर्तमान सोनभद्र) की सीमा से 5 मील दक्षिण में ग्राम- सरना, पो०-पड़री से उत्तर-दक्षिण में रीवां और मिर्जापुर की सीमा के सहारे उत्तर में सोननदी की सीमा का अनुगमन करती यह रेखा 82 अश पूर्वी देशान्तर तक पहुँचती है। सरना के पूर्व में बघेली बोली जाती है। " 2 इस संदर्भ से स्पष्ट है कि सोनभद्र जनपद की तीन प्रमुख भाषायें हैं-

1. पश्चिमी भोजपुरी 2. बघेली 3 अवधी

अपने शोध प्रबन्ध में डा० मूलशंकर शर्मा इस जनपद का भाषिक मानचित्र प्रस्तुत करते हुये और स्पष्ट करते हैं। वे लिखते हैं " जिले में भोजपुरी भाषा कन्हर नदी के दोनों किनारों के सहारे सोन नदी के किनारे तक पहुँचती है। सोन नदी के उत्तरी भाग को छूती हुई यह पूरब की ओर बहती है जहाँ से पश्चिम मुड़कर ग्राम-मंदहा के

---

1. भारतीय जनगणना प्रतिवेदन- 1961, पेज - 8,
2. अवधी व भोजपुरी की सीमावर्ती बोलियों का अध्ययन- डा० अमर बहादुर सिंह पेज - 8, (इलाहाबाद विश्वविद्यालय में डी० फिल उपाधि के लिए स्वीकृत शोध प्रबन्ध)

आसपास से उत्तर की ओर निकलने लगती है तथा राजगढ़ के पास होती हुई सीधे उत्तर हो जाती है। इसी के सहारे वह बनारस जिले तक आती है। इस रेखा के उत्तर - पश्चिम में अवधी, दक्षिण - पूर्व में भोजपुरी तथा दक्षिण में बघेली बोली जाती है। **घोरावल** तहसील के भदहा के पास से यह रेखा चुनार तहसील के खटखरिया ग्राम तक आती है और वहाँ से पश्चिम में चुनार तहसील की सीमा के सहारे उत्तर की ओर बढती है। इस रेखा के पास बस्ती बड़ी सामान्य है। इसी सीमा के सहारे भोजपुरी की सीमा गंगा नदी को स्पर्श करती है और पश्चिम की ओर बढ़ती है तथा विकास क्षेत्र मझवा के पास से जिले की उत्तरी सीमा तक जा मिलती है। " 1

इस तरह सम्पूर्ण सोनभद्र जनपद में भोजपुरी के दो रूप प्राप्त है -

(क) भोजपुरी का वह रूप, जो अपने दक्षिणवर्ती क्षेत्र में पलामऊ और रोहतासगढ के भाषा रूप से प्रभावित है।

(ख) वह रूप, जो अपने क्रिया-पदों तथा अन्य रूपों में इससे भिन्न है तथा इसके लिये डा० मूल शकर शर्मा द्वारा केन्द्रीय भोजपुरी नाम दिया गया है।

सोनभद्र के उत्तरी परिक्षेत्र में प्रचलित रूप बनारस में प्रचलित भोजपुरी के निकट हैं, जिसमें सम्पूर्ण चुनार तहसील में जनपद मिर्जापुर का भाग है।

जहाँ तक बघेली का संबंध है, यह सोन से दक्षिणी क्षेत्र में सोनभद्र जनपद के दक्षिणी पश्चिमी क्षेत्र में प्रचलित है जो सोनभद्र जनपद में घोरावल तहसील के पश्चिमी - उत्तरी अंचल तक फैला है।

आर्य-भाषाओं के इस सीमांकन का वर्तमान सदर्भ में और सरल रूप प्रस्तुत किया जा सकता है। सम्पूर्ण जनपद तीन तहसीलों में विभाजित है।

1 राबर्ट्सगंज तहसील
2 दुद्धी तहसील
3 घोरावल तहसील

इनमें प्रथम दो तहसीलें अविभाजित मिर्जापुर का हिस्सा रहीं। इनमें घोरावल तहसील का सृजन सोनभद्र की स्वतंत्र घोषणा के बाद हुआ है। इसमें सोननदी से दक्षिण जनपद की आखिरी सीमा तक दुद्धी की सीमा फैली है। इस तहसील में, इसके दक्षिण - पूर्वी एव उत्तर पूर्वी क्षेत्र में एक ही आर्य-भाषा बोली जाती है वह है पश्चिमी भोजपुरी। तहसील के पश्चिम - दक्षिण भाग में एव पश्चिम-उत्तर भाग में बघेली का व्यवहार होता है। यही स्थिति घोरावल तहसील की है। घोरावल तहसील में उसके सुदुर दक्षिण - पश्चिम में बघेली व अवधी का संक्रान्ति क्षेत्र है तथा तहसील के उत्तर पश्चिमी भाग में अवधी तथा पूर्वी भाग में भोजपुरी बोली जाती है।

---

1 मिर्जापुर की आर्य बोलियों का संकालिक अध्ययन- डा० मूल शंकर शर्मा, पेज - 11, (इलाहाबाद विश्वविद्यालय में डी० फिल उपाधि के लिए स्वीकृत शोध प्रबन्ध)

सोनभद्र की भाषिक विवेचना का सघन व गभीर क्षेत्र है- सोन नदी के दक्षिण का क्षेत्र, जिसे ग्रियर्सन महोदय ने सोनपारी क्षेत्र कहा है। इस क्षेत्र में दो भारतीय आर्य भाषायें बोली जाती हैं। सोनपार के पूर्वी क्षेत्र की भाषा है भोजपुरी तथा पश्चिमी क्षेत्र की भाषा है बघेली। डा० ग्रियर्सन इसी क्षेत्र में कोलारियन समूह की भाषा का उल्लेख करते हुये केवल बघेली का उल्लेख करते हैं। लेकिन अपने शोध प्रबन्धों में डा० अमर बहादुर सिंह तथा डा० मूलशकर शर्मा भोजपुरी की चर्चा इन क्षेत्रों में करते हैं। वर्तमान सर्वेक्षण से यह अभिमत पुष्ट है कि बघेली के साथ भोजपुरी भी सोनपार की भाषा है। ग्रियर्सन साहब के निष्कर्ष से यह स्पष्ट होता है कि बघेली सोन के उत्तर नहीं बोली जाती है। अपने शोध प्रबध के पृठ सख्या 13 पर चार सूचकों द्वारा प्राप्त सामग्री का विश्लेषण करते हुये डा० मूल शंकर शर्मा ने यह सिद्ध करना चाहा है, कि बघेली सोन के उत्तर भी बोली जाती है, तथा सोनपारी क्षेत्र, भाषिक विविधता का एक अद्भुद उदाहरण है। वे लिखते हैं, इससे यही निष्कर्ष निकलता है कि ये जातियां (आदिवासी) जो सोनपारी क्षेत्र में राबर्ट्सगंज तहसील में निवास करती हैं, वे पूर्णतया अथवा आशिक रूप से भोजपुरी से प्रभावित हैं। इन गाँवों में रहने वाले ब्राहमण भोजपुरी भाषा के उसी रूप का प्रयोग करते हैं, जो सोन के उत्तर की भाषा है, किन्तु यहाँ की आदिवासी जातियाँ अपने सहज रूप से जिस भाषा को बोलती हैं, उसमें भोजपुरी का पुट नहीं रहता। 1 भोजपुरी के साथ बघेली की चर्चा करते उन्होंने लिखा है - ' सामान्य रूप से प्रचलित धारणा है कि बघेली सोनपार की ही भाषा है। बघेली भाषा सोन के दक्षिण में ही नहीं, उत्तर में भी बोली जाती है, जब कि उसके चारों ओर भोजपुरी का प्रचलन है। विकास खण्ड राबर्ट्सगंज में खैरवार, गोंड़, पठारी, तुरिया तथा विकास खण्ड नगवा में यहीं जातियाँ जिसमें धसिया, बियार और अगरिया भी सम्मिलित हैं, बघेली बोलती हैं। इन तथ्यों से यह निष्कर्ष साफ निकलता है कि बघेली मुख्य रूप से सोनपार की बोली है विशेषतया आदिवासी जातियों की। ये आदिवासी जातियाँ सोन के उत्तर जहाँ भी जाकर बसी हैं, वहीं अपने साथ बघेली ले गई हैं। 2 सोनपार क्षेत्र जंगल और पहाड़ों से भरा हुआ है। इसमें समतल मैदान खोजना सरल नहीं है। रिहन्द बाँध के बधने के बाद आदिवासी जातियों का बहुत बडा समूह विस्थापित होकर इसी क्षेत्र में जगलों में आकर बस गया है। इस कारण रेलमार्ग से यात्रा करते समय घोर जगल के बीच दो-चार घरों की बस्ती साफ दिखाई पड़ती है। इस परिक्षेत्र में जिन जातियों का निवास है, उनमें सबसे महत्वपूर्ण है कोरवा जाति, जो दुद्धी क्षेत्र के सुदूर दक्षिण मे कभी रहती थी। अब तक की सूचनाओं के अनुसार, यह मध्य-प्रदेश राज्य की सीमा के सरगुजा क्षेत्र में निवास करने लगी हैं। इस क्षेत्र में निवास करने वाली अन्य आदिवासी जातियें में पनिका, गोंड, पठारी, अगरिया, मझंवार, बसवार, खरवार, कोल प्रमुख हैं। ये जातियां जहाँ बसी हैं, आज के भाषिक सर्वेक्षणों से यह ज्ञात होता है, कि इनके मूल रूप न तो अपने सांस्कृतिक संदर्भ में विद्यमान हैं, न ही भाषिक सदर्भ में। इनके बीच या तो इनका टोटेम से संबंधित आचार - विचार बचा है या तो कुछ शब्द। ये आदिवासी सोनपार के पूर्वी - दक्षिणी क्षेत्र में भोजपुरी से प्रभावित हो गये हैं तथा दक्षिण - पश्चिमी क्षेत्र में बघेली से। फिर भी इनके जो भी सदर्भ उपलब्ध हैं, उन्हें अगले अध्यायों में प्रस्तुत किया गया है।

---

1 मिर्जापुर की आर्य बोलियों का संकालिक अध्ययन- डा० मूल शंकर शर्मा, पेज - 14, (इलाहाबाद विश्वविद्यालय में डी० फिल उपाधि के लिए स्वीकृत शोध-प्रबन्ध)

2. मिर्जापुर की आर्य बोलियों का संकालिक अध्ययन- डा० मूल शंकर शर्मा, पेज - 15, (इलाहाबाद विश्वविद्यालय में डी० फिल उपाधि के लिए स्वीकृत शोध-प्रबन्ध)

सोनभद्र की भाषिक स्थिति और आदिवासियो का वर्तमानः-

सोनभद्र में निवास करनेवाले आदिवासियों में धागर अकेली ऐसी जाति है,जो अपने भाषिक-संदर्भ के कारण आज भी चुनौती बनी हुई है। धांगर जाति राबर्ट्सगज एवं दुद्धी तहसील के कुछ गॉवों में निवास करती है। प्राप्त विवेचनाओं के आधार पर यह सिद्ध है कि यह छोटा नागपुर के कुरूक्षेत्र अथवा उरॉव जाति से ही सबधित है जो सोनभद्र में धागर नाम से जानी जाती है। दुद्धी तहसील में इस जाति से संबंधित लोगों को उरांव तथा राबर्ट्सगंज में इन्हें धागर कहा गया है। पूरे जनपद में यह अकेली ऐसी जाति है जिसके सदर्भ चाहे वे सस्कृति से संबंधित हों,या लोक परम्परा के,या भाषा रूपों के, आज भी सुरक्षित मिल रहे हैं। इस जाति की दो मौलिक भाषिक प्रवृतियॉ दिखाई पड़ती हैं -

1 आपस में यह जाति धांगरी भाषा का प्रयोग करती है।

2 दुद्धी क्षेत्र में निवास करने वाला उरांव या तो स्थानीय लोगों के बीच में या तो भोजपुरी बोलता है या बघेली, तथा राबर्ट्सगज क्षेत्र में यह भोजपुरी के माध्यम से अन्य लोगों से सम्पर्क स्थापित करता है। धागर के सबंध में जार्ज ग्रियर्सन ने स्वतत्र उल्लेख नहीं किया है, इससे यह लगता है यदि उन्हें धागर के सबंध में कोई सूचना प्राप्त हुई थी तो इस जाति की भाषा को उन्होंने कोलारियन नाम देकर अपना मतव्य प्रकट कर लिया है। धांगरों के संबंध में विवरण देते हुए देते हुये अपने शोध-प्रबन्ध में डा० मूलशंकर शर्मा ने इन्हें द्रविड जाति की एक शाखा से जोड़ा है तथा अपने तथ्य के समर्थन में उन्होंने विलियम क्रुक की उधृत किया हे। जो शब्दावली उन्होंने शोध प्रबन्ध में दी है,उसमें पॉच वाक्य उधृत हैं-

आस अंसमा मोक्खादस - वह रोटी खाता है।
आस असमा माला मोक्खना - उसने रोटी नहीं खाई।
निंगहा एड़पा निकइया रइ- तुम्हारा घर कहॉ है ?
बाबुस बरादस - लड़का आता है।
मार्यो बरालगी - लड़की आती है।

और यह निष्कर्ष दिया है कि लड़की के लिये प्रचलित /मार्यो/ शब्द में भोजपुरी क्षेत्र में प्रचलित /मइयॉ/ शब्द का सकेत अवश्य है। 1 इस प्रकरण में उन्होंने इस जाति में प्राप्त जिन संख्या वाची विशेषणों का प्रयोग किया है,वें कुल एक से छ तक हैं। इससे यह सिद्ध है कि यह जाति इससे अधिक संख्यावाचियों का प्रयोग नहीं करती। डा० उदय नारायण तिवारी धांगरी या कुरूख भाषा को द्रविड परिवार की बोली मानते हैं। 2 धांगरी का

---

1 मिर्जापुर की आर्य बोलियों का संकालिक अध्ययन- डा० मूल शंकर शर्मा, पेज - 16, (इलाहाबाद विश्वविद्यालय में डी० फिल उपाधि के लिए स्वीकृत शोध प्रबन्ध)

2 Indian lingustive- Volume - 26, 1955 - Dr Uday Narayan Tiwari

स्वभाव योगात्मक है। प्रकृति - प्रत्यय को स्वतत्र रूप में पहचानना सरल नहीं है। भाषा में 1/2 व 1/4 के लिये /ओनकोचा/ व /ओनटूका/ प्रयोग प्राप्त हैं। इसमें दोनों ही शब्दों में ओन - पद समान है तथा - उपसर्ग की तरह प्रयुक्त हुआ है। - टूका, टुकडे की प्रतीति करा रहा है। भोजपुरी क्षेत्र में इसे /टुक्का/ कहा जाता है। आधे के लिये /कोचा/ शब्द प्रयुक्त है। प्रत्येक संख्यावाची में ट इस बात का प्रतीक है कि इस पर द्रविड़ प्रभाव अधिक है। एक लिये /ओन्टा/, दो के लिये, /एन्टाड/ तीन के लिये /मूंटाड/ शब्दों में -टा- तीनों में है। यानी ओ-, ए-, और मून- ही संख्या की भिन्नता प्रकट करते हैं। सख्यावाची विशेषण पांच के लिये प्रयुक्त शब्द पचे स्पप्टत आर्य भाषा का शब्द है। इन प्रयोगों से यह पता चलता है कि जो जाति 6 से अधिक सख्या का प्रयोग करना जानती ही नहीं थी, वह कितनी प्राचीन हो सकती है। इस जाति में परिमाणवाची, कमवाची अथवा आवृत्तिवाची विशेषण हैं ही नहीं। साथ ही यह जाति जिस शब्दावली का प्रयोग करती है, उसका प्रचलन जनपद की किसी अन्य जनजाति में नहीं है। इसकी शब्दावली आर्य-बोलियों (स्थानीय भोजपुरी तथा बघेली) से एकदम भिन्न है। सर्वनामों में कुछ ऐसे भी प्रयोग हैं, जिनसे इनके सास्कृतिक-समाजशास्त्र का परिचय मिलता है, पुरूषवाची सर्वनाम में दो प्रयोग एक साथ दिखाई पडते हैं।

आस - वह
आद - वह

दोनों ही प्रयोग एक ही अर्थ में हैं, लेकिन /आस/ का प्रयोग केवल पुरूषों के लिये होता है, जबकि /आद/ का प्रयोग स्त्री तथा तथा पशुओं के लिए किया जाता है। इसी तरह पुरूषवाची सर्वनामों के अन्य रूपों को देखा जाय तो यह स्पप्ट है कि इनका प्रयोग न तो किसी अन्य स्थानीय जाति में है, न ही आर्य भाषा - भाषी लोगों में।

यथा -

पुरूषवाची सर्वनाम		एकवचन	बहुबचन
	उत्तम पुरूष	एन (मैं)	एम (हम)
	मध्यम पुरूष	नीन (तुम/तू)	नीम (तुम सब)
	अन्य पुरूष	आस (वह)	आर (वे)

इस तरह स्पष्ट है कि /म/ धांगरों के बीच में बहुबचन बोधक प्रव्यय है और /न/ एकबचन बोधक। ए-, नी-, और आस - प्रातिपदिक की तरह प्रयुक्त हैं। बहुबचन बनाने के लिए प्रयुक्त होने वाला प्रत्यय - म प्रातिपादिक से जुड़कर, यानी योगात्मक स्थिति में प्रयुक्त हुआ है। विभक्ति की इस योगात्मकता की प्रकृति धाँगरी भाषा के अतिरिक्त जनपद की न तो किसी आदिवासी भाषा में है, न ही अन्य आर्य भाषा में। भोजपुरी में - न प्रत्यय का व्यवहार बहुबचन बोधक के रूप में होता है।

जैसे -

हमन।

तोहन।

ओन्हन।

लेकिन यह स्थिति अपवाद ही है। इस तरह सोनभद्र की भाषायी स्थिति में धांगरी अकेली ऐसी भाषा है, जो भाषिक सकरण से मुक्त है तथा अपनी स्वतंत्र पहचान रखती है।

धागरी का वर्तमान अब मिश्रण की ओर बढने लगा है और उसमें स्थानीय भोजपुरी के शब्द भी घुसने लगे हैं। भाषा में उधार ग्रहण करने की प्रवृत्ति बहुत पुरानी है। इस प्रवृत्ति के कारण धागरी में कुछ ऐसे शब्द भी मिलते हैं जो, स्थानीय भोजपुरी में भी प्रचलित हैं। जैसे स्त्री के अर्थ में /कनियॉ/, बूढे व्यक्ति के लिये /बुढरा/, वस्त्रों को /नरखा/, और /माडी/ ऐसे ही प्रयोग हैं। /नरखा/ मूलत- भोजपुरी का शब्द नहीं है, लेकिन यह कुर्ताकेआकार का कुछ होना चाहिये। भोजपुरी क्षेत्र में नरखा, कुर्ता शब्द का प्रयोग एक साथ होता हैं। यह या तो समानार्थी है या अधोवस्त्र। सामान्य प्रयोगों से लगता है कि नरखा कमर के ऊपर पहनने वाला कोई वस्त्र है। निश्चित रूप से यह कहना कठिन है कि इन शब्दों का प्रयोग धांगर किस भाषा से उधार लेकर करतें हैं। जहॉ तक /कनियॉ/ का प्रश्न है, यह उच्चारण में कन्या के निकट है, लेकिन अर्थ समानता नहीं है।

धांगर जाति के अतिरिक्त इस जनपद में निवास करने वाली अन्य आदिवासी जातियों में गोड़ और बसवार प्रमुख हैं। गोडों की जातीय भाषा गोंडी है। गोड़ों की बहुत बड़ी सख्या दुध्दी तहसील में है तथा एक छोटा सा समूह राबर्ट्सगज तहसील में भी मिलता है। इस जाति के लोग अपनी भाषा भूल चुके हैं लेकिन कुछ ऐसे शब्द यहॉं प्रचलित हैं, जो इनकी स्वतंत्र पहचान कराते हैं। खैरवारों में लड़का व लडकी के लिये /डौका/ व /डौकी/ शब्द प्रचलित है। गोड़ /डौका लकिरा/ व /डौकी लरिका/ का प्रयोग करतें हैं। /ढेकना/ खटमल के अर्थ में, /बिड़रा/ गिलहरी के अर्थ में, /बेंगचा/ नेवले के अर्थ में। बड़ी बहन के पति को /माटो/, अरवी के लिये /पेकची/ और रूपये को /ढीवा/ बोलते हैं। ये शब्द स्थानीय किसी अन्य आदिवासियों में प्रयुक्त नहीं हैं।

गोड़ किसी भी मृतक को चारपाई से नीचे नहीं उतारते और उसे उसी चारपाई पर श्मशान ले जाते हैं जिस पर उसकी मृत्यु होती है। अर्थी की तरह प्रयुक्त होने वाली इस चारपाई को गौंड़ /रथी/ कहतें है। रथी शब्द का प्रयोग किसी अन्य स्थानीय भाषा में नहीं है। 1

गोड़ी में एक ऐसा शब्द प्रयुक्त है जिसका प्रचलन न तो कोई आदिवासी करता है न ही आर्यभाषी। शब्द है /खोंपा/ जिसका अर्थ है स्त्री केशपाश या जूड़ा। इस शब्द का प्रयोग सबसे ऊंचे स्थान के रूप में भोजपुरी क्षेत्र में है, लेकिन केशपाश के अर्थ में नहीं। (पद्‌मावत के मानसरोदक

---

1 मिर्जापुर की आर्य बोलियों का संकालिक अध्ययन- डा० मूल शंकर शर्मा, पेज - 20, (इलाहाबाद विश्वविद्यालय में डी० फिल उपाधि के लिए स्वीकृत शोध-प्रबन्ध)

खण्ड में जायसी इस शब्द का प्रयोग करते हैं। उन्हें यह शब्द कहाँ से मिला, यह विचारणीय है।) 1 गोंड़ मोर के लिये /मजूर/ अथवा /झलया मजूर/ शब्द का प्रयोग करते हैं। पूरे हिन्दी भाषी क्षेत्र में इस पक्षी को मोर कहा जाता है। गोड़ उसे मोर नहीं कहता /मजूर/ कहता है। स्पप्टत यह सस्कृत मयूर का परिवर्तित रूप है। /य/ के स्थान पर /ज/ के प्रयोग की प्रवृत्ति मध्यकालीन भाषाओं की रही है। इस तरह के प्रयोग गोंड जाति के गौरवपूर्ण सांस्कृतिक अतीत का परिचय देते हैं।

गोंड जाति के उल्लिखित शब्दों को छोड़ दिया जाय तो इनकी व्याकरणिक सरचना भोजपुरी अथवा बघेली से भिन्न नहीं है। गोडों की ही तरह पठारी में भी कुछ शब्द मिलते हैं। जैसे कंघी के लिये पठारी - /चिरनी/ बोलता है, खरवार - /बागुर,/ बसवार - /घाप/। धागर को छोड़कर अन्य आदिवासी जातिया /ककही/ या /ककई/ का प्रयोग करती हैं। ककही शब्द का प्रयोग भोजपुरी या बघेली में भी है, लेकिन शेष का प्रयोग इन आर्य-भाषाओं में नहीं है। खरवार खटमल को /ढेकुना/ बोलता है। यह उसका अपना शब्द है। भोजपुरी में इसे /खटकिरवा/ तथा बघेली बोलने वाले आदिवासी इसे /खरगोडा/ कहते हैं। इनमें खरवारों में प्रचलित /ढेकुना/ ही अप्रचलित है। खैरवार भोजपुरी के कुछ अल्पप्राण प्रयोगों को महाप्राण के रूप में उच्चरित करता है।

यथा -

नाक - नाख

इस तरह आदिवासियों का बोलीगत सदर्भ तीन स्थितियों का परिचय देता है -

1 पहली स्थिति धांगरों की है, जिनकी अपनी मूल-भाषा पूर्णतः सुरक्षित है तथा दूसरी स्थानीय आर्यभाषा चाहे भोजपुरी हो चाहे बघेली, इनके लिये सपर्क भाषा है।

2 दूसरी स्थिति खैरवार और गौंड जैसी जातियों की है, जिनकी मौलिक शब्दावली के कुछ रूप ही उनमें बचे हैं तथा जो स्थानीय भोजपुरी या बघेली में इन्हें समाहित करके बोलते हैं।

जैसे-

" एक अदमी के चारि लइका रहईं। जब वह अदमी मरइ लागिस त वह आपन चारो बेटवन के बलाइ के कहिसि कि जवन खेत के तुहरे जोतत बाह, खेत में एक बहुत बड़ा रूपया क हडा गाड़ल हवे। "

(सूचक - रामधनी, जाति - पठारी)

---

1 सरवरि तीर पद्मिनि आई। खोंपा छोरि केस मुकुलाई।
पदमावत् - मानसरोदक खण्ड - जायसी, दोहा -५ , चौपाई -1

(एक आदमी को चार लड़के थे। जब वह आदमी मरने लगा तब उसने अपने चारों बेटों को बुलाकर कहा कि जिस खेत को तुम जोतते - बोते हो, उसमें रूपये का बडा खजाना है।)

यदि गोंड व खैरवार की भाषा को देखा जाय तो भोजपुरी और बघेली का एक मिश्रित भाषायी रूप इनकें प्रयोगों में विद्यमान दिखता है -

" एक ठे नमहा रहे, अ एक ठे बाघ रहे। त दूनउ जोरी मीत, तँबघवा कहेसि के भाई महू जाब बने।"

(सूचक - हरिया, जाति - गोड, ग्राम पनारी - चोपन से 10 मील दक्षिण पश्चिम।)

यदि इस वाक्य पर विचार किया जाय तो साफ है कि इसमें एक सख्यावाची विशेषण भोजपुरी की ही तरह प्रयुक्त है। चोपन के आसपास का भोजपुरी भाषी सख्यावाची विशेषण के बाद /ठे/ लगाता है। जबकि सोन के दक्षिण तथा दुद्धी तहसील का भोजपुरीभाषी /गो/ का प्रयोग करता है।

एक गो।

दू गो।

अगर यह खैरवार दुद्धी का होता तो निश्चित रूप से गो का प्रयोग करता। भोजपुरी भाषी खरगोश को लमहा कहता है। गोंड़ /ल/ की जगह /न/ का उच्चारण करता है। यह उसकी जातीय प्रवृत्ति है। तीनों वाक्यों में /रहे/ /जोरी/ और /कहिस/ तीनों ही क्रियायें बघेली की हैं। इससे स्पप्ट है कि गोड की अपनी जातीय स्वतंत्र भाषा नहीं है।

इसी तरह खैरवार को भी लिया जा सकता है। चोपन के पास ही एक गाँव है सिन्दूरिया। उसमें रहने वाला खैरवार बोलता है -

" एक चिरई रहे, त खोतों छावल रहे। "

(एक चिडिया भी, उसका घोंसला छाया हुआ था)

दोनों ही वाक्यों में /रहे/ बघेली की क्रिया है,लेकिन छावल शब्द भोजपुरी में भी इसी रूप में प्राप्त है। इससे यह प्रतीत होता है कि सोनभद्र का आदिवासी स्थानीय आर्य भाषाओं के मिश्रित रूप को बोलने लगा है। इस स्थिति को और स्पप्ट करने के लिये कुछ सबंधवाची शब्द अथवा अन्य शब्दों के उदाहरण अलग - अलग जातियों में उच्चरित रूपों की भिन्नता के साथ प्रस्तुत किये जा रहे हैं,जिनसे तथ्यों के समर्थन में सरलता हो सकती है।

खड़ी बोली रूप	**धागर जाति में उच्चारित रूप**	**धरकार जाति में उच्चारित रूप**	**अगरिया जाति में उच्चारित रूप**
माँ	आयो	दाई	दाई
	एंगियों		
बाप	बहोय	दादा	दउआ
भाई	एंदादस	भइया	भाई
	ऐगड़िस (छोटा भाई)		

खड़ी बोली रूप	थागर जाति में उच्चारित रूप	धरकार जाति में उच्चारित रूप	अगरिया जाति में उच्चारित रूप
बहन	एगडी (छोटी बहन) एगदीदी (बडी वहन)	बहिन	बहिन
लडका	कुक्कोस	बिहटेना	लडिका
लडकी	कुके	बिहटिनी	लडकी
स्त्री	एखई	डौकी /डउकी	डौकी / डउकी
पुरूष	मेटर	डौका /डउका	डौका / डउका
भाजा	भाजा	भाचा	भाचा
दुल्हन	खईद	कनया	दुलहिन
मुँह	मोच्चा	मुँह	मूँह
कल	चेरो	कालि	कालू
आज	इन्ना	आजू	आजू
चावल	तीखिल	चाउर	चाउर
भात	मडी	भात	भात
रोटी	असमा	रोटी	रोटी
पानी	अम्म	पानी	पानी
हाथ	खेख	हॉथ	हाथ
पैर	खेद	गोड	गोड़

खड़ी बोली	गोंड़ जाति में उच्चारित रूप	खरवार जाति में उच्चारित रूप	भुइया जाति में रूप उच्चारित रूप
माँ	दाई	माई	मइया
बाप	दादा	बाबू	दादा
भाई	भाई	भइया	भाई
बहन	बहिन	बहिन	बहिन
लडका	बाबू	लेरका	डौका / डउका
लड़की	मइया	लेरकी	डौकी / डउकी
स्त्री	डौकी	डौकी / डउकी	मेंहरारू
पुरूष	डौका	डौका / डउका	अदमी
भाजा	भाचा	भाचा	भैने
दुल्हन	कनया	कनया	दुलही
मुँह	मूँह	मूँह	मूँह
कल	काल्हू	कालू	कालि
आज	आजू	आजू	आजु
चावल	चाउर	चाउर	चाउर
भात	भात	भात	भात
रोटी	रोटी	रोटी	रोटी
पानी	पानी	पानी	पानी
हाथ	हाँथ	हाँथ	हाँथ
पैर	गोड	गोड	गोड

इन तुलनात्मक संदर्भो की समानान्तर विवेचना से यह बात सुस्पष्ट है कि जनपद में अकेली जाति जो केवल अपनी भाषा बोलती है, वह धागर है। बाकी आदिवासियों में आज की तिथि में स्थानीय भोजपुरी या बघेली का प्रयोग प्रारम्भ कर दिया है। यहाँ विशेष उल्लेखनीय यह है कि भोजपुरी और बघेली बोलती हुई भी ये जातियाँ अन्य सवर्ण वक्ताओं की तरह इस भाषा का प्रयोग नहीं करतीं। इनके उच्चारण व प्रयोग अपनी - अपनी जातियों में अलग - अलग हैं। जैसे - लड़का को धांगर कुक्कोस/ बोलता है जो उसकी जाति का अपना शब्द है। इसे धरकार। /बिहटेना/ कहता है जो भोजपुरी क्षेत्र में /बेहना/ रूप में भी बोला जाता है। व्यंजन ध्वनि का जो विपर्यय धरकार जाति में है,वह उसका अपना जातीय प्रयोग है। अगरिया इसे /लड़िका/ बोलता है। गोंड़ /बाबू/ खरवार लेरका/ तथा भुइयां या चेरों /डौका/ कहते हैं। इन शब्दों में /कुक्कोस/ और /डौका/ जातीय शब्द हैं,लेकिन शेष भोजपुरी के ही प्रयोग हैं जो उच्चारणगत भिन्नता के साथ प्रयुक्त हैं। इससे स्पष्ट है कि आदिवासियों के बीच में भोजपुरी भी उसी रूप में नहीं बोली जाती जिस तरह अन्य स्थानीय सवर्णो में प्रयुक्त है।

भोजपुरी के संदर्भ और आदिवासियो मे प्रयुक्त भोजपुरी के रूपः–

अध्याय के प्रारम्भ में जनपद में बोली जाने वाली भोजपुरी की सीमा रेखा की चर्चा की गयी है। भोजपुरी - भाषी क्षेत्र पूरे सोनभद्र जनपद में अपनी उत्तरी सीमा से दक्षिणी छोर तक फैला हुआ है। प्राकृतिक तथा भौगोलिक स्थितियों के कारण इस परिक्षेत्र में दो स्पप्ट विभाजक बिन्दु दिखाई पडते हैं। एक है, सोन नदी और दूसरा है कैमूर पर्वत श्रृखला का विस्तार और फैलाव जो घने जगलों से अटा पड़ा है। जनपद का भोजपुरी - भाषी क्षेत्र दो सुदूर क्षेत्रों में बिखरा है। एक है सोननदी के उत्तर का परिक्षेत्र, दूसरा है, सोन के दक्षिण का वह भाग जो कोटा, कोन की तरफ से बढ़ता हुआ दुद्धी तहसील की ओर पहुँचता है। दुद्धी तहसील का बभनी, म्योरपुर ब्लाक और दुद्धी, सघन आबादी का क्षेत्र कहा जा सकता है। बाकी अन्य हिस्सा घने जंगलों से सटा है। भौगोलिक परिस्थिति तथा जनसम्पर्क के अभावों के कारण सोनभद्र में बोली जाने वाली भोजपुरी एक जैसी नहीं है।

डा० उदय नारायण तिवारी अविभाजित मिर्जापुर की भाषा (जिसमें सोनभद्र भी सम्मिलित है) पश्चिमी भोजपुरी मानते हैं। भोजपुरी के जो उदाहरण उन्होंने दिये हैं, वे आज की तिथि में प्राप्त नहीं हैं, लेकिन इसे पश्चिमी भोजपुरी कहने में कोई कठिनाई नहीं है।

डा० मूलशकर शर्मा, डा० उदयनारायण तिवारी को उधृत करते हुये लिखते हैं- " भोजपुरी भाषा का अध्ययन करते हुये डा० उदयनारायण तिवारी ने जनपद की भोजपुरी के सबंध में विस्तार से परिचय दिया है। आपने अवधी एव भोजपुरी की सीमा भी निर्धारित की है, जो डा० ग्रियर्सन के मतानुकूल है। आदरणीय तिवारी जी ने भोजपुरी के अध्ययन में बलिया की भोजपुरी को आदर्श माना है और उसी का आधार मानकर शेष रूपों पर प्रकाश डाला है। यह अध्ययन काफी पुराना है और आज बोली रूपों में परिवर्तन हो गया है। डा० तिवारी ने जनपद की भोजपुरी के सबंध में जो भी उदाहरण दिये हैं, वे आज कहीं भी प्राप्त नहीं होते हैं। " 1

डा० शर्मा ने सोनभद्र जनपद में बोली जाने वाली भोजपुरी को दो नाम दिया है। वे दुद्धी तहसील में बोली जाने वाली भोजपुरी को दक्षिणी, राबर्ट्सगंज में बोली जाने वाली भोजपुरी को केन्द्रीय भोजपुरी तथा चुनार तहसील (जनपद मिर्जापुर) में बोली जाने वाली भोजपुरी को उत्तरी भोजपुरी कहते हैं। मिर्जापुर जनपद से सोनभद्र जनपद के अलग होने के बाद इसे केवल दो नामों से सदर्भित करना उचित हैं। एक सोन नदी के उत्तर बोली जाने वाली भोजपुरी (यानि उत्तरी भोजपुरी) और दो-

---

1 मिर्जापुर की आर्य बोलियों का समकालिक अध्ययन- डा० मूल शंकर शर्मा, भूमिका भाग, (इलाहाबाद विश्वविद्यालय में डी० फिल उपाधि के लिए स्वीकृत शोध-प्रबन्ध)

सोन नदी के दक्षिण बोली जाने वाली भोजपुरी (दक्षिणी भोजपुरी)। भोजपुरी के दोनों रूपों के सदर्भ सज्ञा रूपों, सर्वनाम रूपों तथा क्रिया रूपों के साथ अन्य व्याकरणिक कोटियों में सोन के उत्तर एवं दक्षिण अलग - अलग है।

1 सोन के उत्तर लडका - लडकी के लिये /लइका/ - /लइकी/ पद प्रयुक्त होता है। इस पद के दीर्घ रूप भी उत्तरी क्षेत्र में प्राप्त हैं। जैसे - लइकवा, लइकिया, जबकि दक्षिणी में इसके लिये बाबू और मइयाँ शब्द का प्रयोग होता है तथा इस सज्ञा-पद का दीर्घ रूप दक्षिणी भोजपुरी में प्रचलित नहीं है। यही कारण है, कि सोनभद्र की दुद्धी तहसील में निवास करने वाला आदिवासी लडका व लडकी के लिये बाबू और मइयाँ पद का प्रयोग करता है, जबकि सोन के उत्तर का आदिवासी लइका, लरिका पद का प्रयोग संपरिवर्तक रूप में करता दिखाई पड़ता है।

सज्ञा रूपों के साथ यदि अन्य पदों को लिया जाय तो यह भिन्नता उभयपक्षी दिखाई पडती है। उत्तरी भाग में माँ को माई, मतवा, मतारी शब्दों से व्यक्त करते हैं ,जबकि दक्षिणी में इसके लिये /मइया। शब्द का प्रयोग होता है। उत्तरी खण्ड में /मइया/ माँ के अर्थ में नहीं है।

2 उत्तरी क्षेत्र में बोली जाने वाली भोजपुरी में खड़ी-बोली में प्रचलित अकारन्त सज्ञायें इकरान्त रूप में बोली जाती है।

जैसे - आँखि, (आँख)
नाकि, (नाक)

दक्षिणी क्षेत्र में सज्ञा के ये इकारान्त रूप अकारान्त रूप में ही प्रयुक्त हैं। इसी कारण दुद्धी तहसील में निवास करने वाला आदिवासी भी इन सज्ञाओं का प्रयोग अकारान्त ही करता है।

3 इस क्रम में संख्यावाची विशेषणों का प्रयोग महत्वपूर्ण है।

सोन के उत्तरी क्षेत्र में -

एक (1)
दूइ (2)
तीनि (3)
चारि (4)

बोलते हैं, यानि खड़ी बोली के ये विशेषण सोनभद्र के उत्तरी खण्ड में इकारान्त रूप में उच्चरित हैं, जबकि दक्षिणी में ये अकारान्त रूप में ही बोले जाते हैं।

एक (1)
दू (2)
तीन (3)
चार (4)

इन सख्याओं का व्यवहार करते हुये उत्तरी क्षेत्र में।ठे। पद का व्यवहार विशेषण के बाद होता है।

जैसे - एक ठे।

दूइ ठे।

तीनि ठे।

चारि ठे।

उत्तरी क्षेत्र में बोलने वाला बिना /ठ/ लगाये सख्यावाचियों का प्रयोग नहीं करता। यह प्रयोग तभी होता है, जब कभी कोई जीवधारी विशेष्य आगे प्रयुक्त होता है। लेकिन यह प्रवृत्ति सामान्य नहीं है। इस सदर्भ में जब हम सोन के दक्षिण में बोली जाने वाली भोजपुरी पर विचार करते हैं, तो -ठे पूर्णतया लुप्त दिखाई पड़ता है तथा सख्यावाची के बाद - गो - का प्रयोग प्रचलित मिलता है।

जैसे - एक गो।

दू गो।

तीन गो।

चार गो।

सम्पूर्ण जनपद में प्रयुक्त होने वाले भाषा-संदर्भों में सार्वनामिक पद-रचना केवल भौगोलिक अन्तराल के कारण ही भिन्न नहीं है, आदिवासी जातियों में इनके प्रयोग की अलग स्थिति एक स्वतत्र सदर्भ का निर्माण भी करती है। सार्वनामिक पद-रचना में लिग, वचन तथा कारक का अपना महत्व है। पूरे परिक्षेत्र में पुल्लिग एव स्त्रीलिंग के दो ही रूप प्राप्त हैं। वचन भी दो हैं, तथा कारकीय सरचना विकारी एव अविकारी रूपों के साथ अपना रूप बनाती है। पूरे परिक्षेत्र में पुरूषवाची, निश्चयवाची, सबधवाची, अनिश्चयवाची एव निजवाची रूप प्राप्त हैं। पुरूषवाची सर्वनामों में उत्तम पुरूष में /म/ का प्रयोग कहीं नहीं है लेकिन /म/, /मा/, /मय/, /महूँ/ जैसे रूप प्रयोग में हैं। जिन्हें मैं का ही सक्षिप्त अथवा विकृत रूप कहा जा सकता है। इन रूपों का प्रयोग गोड, खैरवार, बसवार तथा अन्य आदिवासी करते हैं। सोन के उत्तर एव दक्षिण दोनों ही भाग में /हम/ उत्तम पुरूष, बहुवचन के रूप में प्राप्त है। लेकिन इस रूप का बहुबचन बनाने में सोन के उत्तर की भोजपुरी तथा दक्षिण की भोजपुरी में अन्तर है। उत्तरी भोजपुरी में /म/ का द्वित्व करके तथा बहुबचन बोधक प्रत्यय /न/ को जोडकर पदगठन की प्रवृत्ति दिखाई पडती है।

जैसे - हमन, हम्मन

इसके समानान्तर सोन के दक्षिण में केवल एक ही रूप प्राप्त है, वह है - /हमहने/। इस क्षेत्र में निवास करने वाला आदिवासी /हमरन/ शब्द का भी प्रयोग बहुबचन अर्थ में करता है।

मध्यम-पुरूष में आदरवाची और अनादरवाची अथवा सामान्य, दो रूप प्राप्त हैं। अनादरवाची सर्वनाम है - /तोंय/, जो /तैं/, /तूं/, /तय/, /तू/, /तहूँ/ रूप में भी बोला जाता है। इस सर्वनाम का बहुबचन बनाने में उत्तरी क्षेत्र में दो विकल्प प्राप्त है - /तोहन/ अथवा /तोन्हन/, जबकि दक्षिणी क्षेत्र में /तू लोगन/, /तुहरे/ /तुहरने/ /तू पचे/ रूप भी प्राप्त हैं। गोंड इसके स्थान पर /तइये/ रूप का भी प्रयोग करते हैं।

आदिवासियों में प्रयुक्त कृदन्तों तथा क्रिया-रूपों के अध्ययन से भी यह बात स्पष्ट है, कि परिक्षेत्र की दृष्टि से चाहे सोन का उत्तरी अचल हो, या सोन के दक्षिण फैला-हुआ लम्बा भूभाग, इस परिक्षेत्र में प्रचलित भोजपुरी रूपों में आदिवासी समान भाषाधर्मी नहीं हैं। उसमें दो प्रवृत्तियों स्पष्ट हैं - पहली यह है, कि आदिवासी भोजपुरी के कुछ रूपों को ज्यों का त्यों प्रयुक्त करता है, तथा दूसरी यह है, कि कभी वह मूल-रूप बदल के बोलता है और कभी प्रत्यय में परिवर्तन कर देता है। भोजपुरी की कालरचना, उसका कारकीय-प्रयोग, उसमें प्रयुक्त क्रियार्थक-संज्ञायें, साथ ही सहायक क्रियायें व समापिका क्रियायें कभी प्रचलित रूप में और कभी सामान्य अन्तर के साथ प्रयुक्त हैं। विशेष परिवर्तन क्षेत्र का स्पष्ट दिखता है। सोन के उत्तरी अंचल में खड़ी बोली के/हैं/रूप के लिये /ह/, /हवइ/, /बा/, /बाइ/ रूप प्रचलित हैं, जबकि सोन के दक्षिण में /बा/ के स्थान पर /बडइ/ तथा /ह/ के स्थान पर /होंखस/ रूप मिलता है। अपने मूल उच्चारण के साथ थोड़ा ध्वंयात्मक परिवर्तन करके

आदिवासी इन क्रियाओं को अपने ढग से बोलता है। यह क्रिया पुरूष एवं वचन की दृष्टि से भिन्न होकर पूरे क्षेत्र में बोली जाती है।

उत्तरी क्षेत्र		एकवचन	बहुबचन
	उत्तम पुरूष	हई	हई
(मैं हूँ)			
दक्षिणी क्षेत्र		हियें	हियें

आदिवासियों में /अही/ /ही/ तथा /हों/ रूप उल्लिखित प्रचलित भोजपुरी क्रियाओं के समानान्तर प्राप्त हैं। मध्यम पुरूष, एकवचन, आदरार्थ एव निरादरार्थ, दोनों में काल-बोधक प्रत्यय जोड़कर रूप बनायें जाते हैं।

उत्तरी क्षेत्र		एकवचन	बहुबचन
	मध्यम पुरूष		
	अनादरार्थ	हए	हवें
	आदरार्थ	हवें	हवें
दक्षिणी क्षेत्र			
	मध्यम पुरूष		
	अनादरार्थ	होंरवें	होंरवन
	आदरार्थ	होंरवें	होंरवन

आदिवासियों का समूह उत्तरी परिक्षेत्र में उत्तरी रूप का तथा दक्षिणी क्षेत्र में उल्लिखित दक्षिणी रूप का प्रयोग बिना किसी परिवर्तन से करता है। यह परिवर्तन लिग भेद के साथ भूत निश्चायार्थ में और भी स्पप्ट हैं।

	अन्य पुरूष	एकवचन	बहबचन
उत्तरी क्षेत्र	पुल्लिंग -	रहल्	रहनें
	स्त्रीलिंग-	रहनी/रहलि	रहनी
दक्षिणी क्षेत्र	पुल्लिंग -	रहलन्	रहलन्
	स्त्रीलिंग	रहलिन	रहलिन

उल्लिखित दोनों रूपों के समानान्तर दक्षिणी क्षेत्र में निवास करने वाला आदिवासी - /रहे/, /रहें/ का पुल्लिग प्रयोग तथा /रहिल/, /रही/ का स्त्रीवाची रूप सुविधानुसार व्यवहार में ले आता है। इससे यह पता लगता है कि ये क्रियायें आदिवासियों में ज्यों की त्यों भी प्रयुक्त हैं और जातीय परिवर्तनों के साथ भी प्रचलित मिलती हैं,लेकिन पूरे जनपद में धागर जाति के अतिरिक्त आदिवासियों में कोई दूसरी ऐसी जाति नहीं है,जो भोजपुरी या बघेली से भिन्न,व्याकरणिक कोटियों को प्रयोग मे ले आती है।

सोनभद्र का भाषिक-भूगोल स्पष्टत तीन खण्डों में विभाजित देखा जा सकता है - एक है, बघेली प्रभावित क्षेत्र,जो जनपद के दक्षिणी - पश्चिमी हिस्से से सबंधित है। रिहन्द जलाशय के बनने के बाद इस क्षेत्र का बहुत बडा भाग स्थायी रूप से जलमग्न हो गया है। इस तरह इस क्षेत्र में निवास करने वाले आदिवासी जब विस्थापित हुये हैं,तो अपनी जातीय-शब्दावली स्थानीय बघेली भाषा को लेकर दूर तक फैले हैं। लेकिन तब भी एक सीधी विभाजक रेखा देखी जा सकती है। यह रेखा है,रेण नदी की,जो रिहन्द जलाशय से निकल कर सोन में आकर गिरती है। इस तरह सोन से दक्षिण व रेण नदी से पश्चिम का भूभाग,जो कैमूर की छोटी पहाड़ियों और जगल से सटा है, आदिवासियों का निवास बना है। बघेली इसी पूरे क्षेत्र को आपस में जोडे हुये है। इस पूरे क्षेत्र में निवास करने वाला आदिवासी,जो जगल में बीच - बीच में घर बनाकर बसा हुआ है, बघेली भाषा का सम्पर्क भाषा के रूप में व्यवहार करता है।

सोन नदी के दक्षिण तथा रेण नदी के पूर्व का भूभाग भी काफी लम्बा चौड़ा है। यह क्षेत्र भी दुर्गम है। एक ही मुख्य मार्ग है,जो इस क्षेत्र में आपसी सम्पर्क का माध्यम है। वाराणसी - शक्तिनगर राजमार्ग से एक दूसरा उपमार्ग दुद्धी तहसील मुख्यालय तक ले जाता है। दुद्धी तहसील की स्थिति को केन्द्रीय कहा जा सकता है। दुद्धी ब्लाक, बभनी ब्लाक तथा म्योरपुर ब्लाक घने जगलों से भरा है तथा जगल का यह विस्तार सोन नदी तक चला आता है। ऊँची - नीची पहाडियाँ, छोटे नाले, तथा अपनी प्रखर धारा के लिये प्रसिद्ध कनहर नदी,जो उत्तराभिमुख होकर सोन में आकर गिरती है, इस क्षेत्र को आज की तिथि में भी दुगर्म बनायें हुए है। कुछ अपवादो को छोड़,शेष गाँवों में आदिवासी बसे हुये हैं। गोड, पठारी, धांगर (जिन्हें इस क्षेत्र में उराँव कहा जाता है) घसिया, अगरिया, कोल और अपनी अल्प जनसख्या में ही सही कोरवा,इसी क्षेत्र के निवासी हैं। यह सारा क्षेत्र सोनभद्र में बोली जाने वाली दक्षिणी भोजपुरी का प्रयोग करता है, क्योंकि सोनभद्र से सटे बिहार प्रान्त के दो जिले - गढ़वा/पालामऊ तथा रोहतासगढ़ भोजपुरी-भाषी हैं। इस क्षेत्र में निवास करने वाले आदिवासियों की भाषा भी यही भोजपुरी है।लेकिन आदिवासियों के अपने जातीय प्रयोग भी हैं,जो इसी भोजपुरी में मिश्रित होकर सामने आतें हैं। इस परिक्षेत्र में भी धांगर अथवा उराँव अकेली ऐसी जाति जो दक्षिणी भोजपुरी का व्यवहार केवल अन्य जातियों के साथ सम्पर्क-भाषा के रूप में करती है,अन्यथा आपस में वह अपनी भाषा बोलती है। यह पहले ही कहा जा चुका है कि सोनभद्र जनपद में सोननदी

के उत्तर के भाग में पश्चिम - उत्तर की ओर अवधी तथा पूर्व - उत्तर की ओर भोजपुरी बोली जाती है। इस क्षेत्र का आदिवासी भी इन्हीं भाषाओं को संम्पर्क भाषा के रूप में स्वीकार करता है, लेकिन इस क्षेत्र में धागर, बसवार, खैरवार जाति के लोग काफी सख्या में हैं। इनमें कोलों की सख्या सबसे अधिक है। आज की तिथि में बसवार, खैरवार तथा कोल भी स्थानीय भाषा बोलते हैं,लेकिन इनका उच्चारण, स्वराघात,एव अभिव्यक्ति का तौर - तरीका थोडा अलग है। इस क्षेत्र में निवास करने वाली धागर जाति आपस में अपनी भाषा बोल रही है,लेकिन वह बहुत दूर तक भोजपुरी से प्रभावित हो गयी है। गभीर गवेषणा, विवेचना, एव विश्लेषण के बाद यह स्पप्ट है कि धागर जाति अकेली ऐसी जाति है जिसकी अपनी भाषा है और वह भी धीरे - धीरे लुप्त हो रही है। इस स्थिति में इस जाति की अपनी सास्कृतिक परम्परा, इसमें प्रचलित लोकशिल्प तथा लोकसाहित्य का सग्रह जितना आवश्यक है, उससे अधिक अपरिहार्य है इस जाति में प्रचलित भाषा-रूपों और व्याकरणिक कोटियों की सुरक्षा। क्योंकि वह समय दूर नहीं,जब औद्योगिक विकास तथा समानान्तर चलने वाली सस्कृति से प्रभावित होकर यह जाति,जनपद के अन्य आदिवासी जातियों की तरह अपनी पहचान भी खो रही है।

अध्याय 3

ध्वनिग्रामिक संरचना

3.1 स्वर ध्वनिग्राम

सोनभद्र जनपद में निवास करने वाली आदिवासी जाति उच्चारण की दृष्टि से विकसित समाज का प्रतिनिधि नहीं है। इस कारण सस्कृत भाषा में प्रयुक्त /ऋ/ अथवा /लृ/ ध्वनियाँ इसमें नहीं पायी जाती। धागर जाति कुल आठ स्वरों का प्रयोग करती है। धागर के अतिरिक्त शेष जातियों में /आ/, और /औ/ ध्वनियाँ प्राप्त हैं, जब कि धागर में इनका प्रचलन नहीं है। ये स्वर ध्वनियाँ स्वल्पान्तर युग्म बनाकर अर्थभेदक तो हैं, लेकिन इस तरह के बहुत उदाहरण प्राप्त नहीं हैं। ध्वनि रूप में /इ/, /ई/, /ए/, /ऐ/, /अ/, /ऊ/, /उ/, /ओ/, /औ/, तथा /आ/ स्वर विशेष रूप में प्रचलित हैं। मानक स्वर उच्चारण प्रक्रिया को ध्यान में रखा जाय तो इनका उच्चारण निम्नलिखित रूप में देखा जा सकता है।
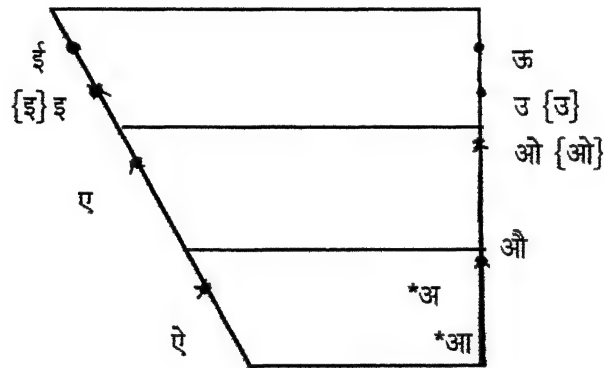
मूल स्वर - /अ/, /इ/ /ई/, /उ/, /ऊ/, /ओ/, /औ/

3.1.1 स्वर ध्वनिग्रामों का वितरण तथा उनके सहस्वन–

(१) /ई/- यह अवृत्ताकार, सवृत, दीर्घ अग्रस्वर है। प्रयोग की दृष्टि से यह शब्द के आदि, मध्य तथा अन्त्य तीनों स्थितियों में आता है।

धांगरी भाषा	खड़ी बोली रूप
ईरींगे	इनका
नीनिंग	आप ही
तन्नी	थोड़ा

(२) /इ/- यह अवृत्ताकार, सवृत, ह्रस्व अग्रस्वर है। इसका प्रयोग धागरों की बोली में शब्द के आदि, मध्य व अन्त तीनों में होता है।

धागरी भाषा	खड़ी बोली रूप
इबग्गे	इतना ही
इदितरा	इस ओर
पैरि	सबेरा

/इ /यह /इ/ का सहस्वन है तथा घोरावल तहसील में निवास करने वाले आदिवासियों में यह फुसफुसाहट की ध्वनि की तरह उच्चरित होता है। धागर जाति के लोग इस स्वर का प्रयोग नहीं करते हैं। अवधी भाषी क्षेत्र में निवास करने वाला खरवार अथवा बसवार आदिवासी, जब भी इस ध्वनि को बोलता है, तो आगे आने वाले व्यंजन से प्रभावित होकर यह स्वर लुप्त हो जाता है।

यथा -

भागि, भागि, - गवा, भाग्गवा

(३) /ए/- यह अर्ध-संवृत, अवृत्ताकार, अग्रस्वर है। यह धागरों में, शब्द के आदि, मध्य व अन्त तीनों स्थितियों में होता है।

धांगरी भाषा	खड़ी बोली रूप
एनम	ऐसे ही
कुकेर	लडकी
उबग्गे	उतना

(४) /ऐ/- यह अवृत्ताकार, अर्धसवृत अग्रस्वर है। धागर जाति का आदिवासी, प्राप्त उदाहरणों से ऐसा पता लगता है, कि इस ध्वनि का प्रयोग नहीं करता है। अन्य जातियों में यह ध्वनि प्राप्त है। लेकिन सरलीकरण की प्रवृत्ति के कारण /ऐ/, /अइ/ रूप में /औ/, /अउ/ रूप में बोला जाता है।

जैसे - /पइसा/,
/नउआ/
/कउआ/

(५)/अ/-यह अर्ध विवृत पश्चस्वर है। भोजपुरी तथा बघेली में इस ध्वनि का उच्चारण शब्दान्त में नहीं है। इस कारण सोन के दक्षिण निवास करने वाला आदिवासी, चाहे वह भोजपुरी बोलता है, या बघेली, शब्द के अन्त में, इस ध्वनि को नहीं बोलता। जनपद में निवास करने वाली धागर जाति भी इस ध्वनि का प्रयोग शब्द के प्रारम्भ तथा मध्य में ही करती है। भोजपुरी के कुछ क्रिया रूप अकारान्त हैं।

जैसे - चल
उठ
बइठ

यह खडी बोली में व्यंजनान्त रूप में अनादरार्थ प्रयोगों में व्यवहृत है-

जैसे - चल्, उठ्, बैठ्

आदरार्थ क्रियायें यहाँ भी स्वरान्त हैं, जैसे- चलो, उठो, बैठो। भोजपुरी के उल्लिखित रूपों का उच्चारण जब भी आदिवासी करता है, तो शब्दान्त में /ऊ/ अपने सवृत्त उच्चारण के साथ देखा जा सकता है। अन्यथा, इसका प्रयोग शब्द के प्रारम्भ में अथवा मध्य में प्रचलित है।

जैसे -

धागर जाति में	खड़ी बोली रूप
अड्डो	बैल
अल्ला	कुत्ता

अन्य आदिवासी जातियों में	
अनाज	अनाज
अकाल	अकाल
अपजस	अपयश

मध्य में -

धागर जाति में	खड़ी बोली रूप
पारवल	पत्थर
राजस	राजा

अन्य आदिवासी जातियों में	
घर	आवास
बर	दूल्हा

(६) /ऊ/- यह सवृत, पश्च वृत्ताकार स्वर है तथा आदिवासियों एव अन्य आर्यभाषी लोगों में शब्दों के प्रारम्भ, मध्य तथा अन्त में प्रयुक्त होता है। धागरों में सामान्तया इसका प्रचलन अन्त में नहीं है।

जैसे -

धागर जाति में	खडी बोली रूप
ऊयोन	रखना
पूना	नया

अन्य आदिवासी जातियों में

ऊख	ईख
बबूर	बबूल
कल्लू	कल्लू
घुरहू	घुरहू

(७) /उ/- यह दीर्घ /ऊ/ की अपेक्षा मानस्वर के उच्चारण क्रम में कम उच्चस्थानीय तथा संवृत पश्चस्वर है। इस स्वर का प्रयोग जनपद की सभी आदिवासी जातियों में शब्द के आदि, मध्य व अन्त में होता है।

जैसे -

धागर जाति में	खडी बोली रूप
उबग्गे	उतना
अन्नुम	उसमे
अम्बु / अम्म	पानी

अन्य आदिवासी जातियों में

उप्पर	ऊपर
उधार	उधार
कउआ	कौआ
सासु	सास
मासु	मॉस

(८) /आ/- यह विवृत,पश्चस्वर है,तथा इसका प्रयोग शब्द की प्रत्येक स्थिति में होता है।

जैसे -

धागर जाति में	खडी बोली रूप
आस	वह
नानस	नाना
एडपा	घर

अन्य आदिवासी जातियों में

आगी	आग
कपार	सिर
पइसा	पैसा

(६) /ओ/- यह संवृत पश्चस्वर है। यह जनपद के हर आदिवासियों में प्रचलित है तथा इसका प्रयोग शब्द के आदि, मध्य, अन्त तीनों ही स्थिति में होता है।

जैसे -

धागर जाति में	खडी बोली रूप
ओन्टा	एक
मनोय	मानो
नासगो	भाभी

अन्य आदिवासी जातियों में

ओसार	बरामदा
थोड़ा	थोडा
लकठो	एक मिठाई

(१०) /औ/- यह अर्धविवृत पश्चस्वर है। जनपद के समस्त आदिवासी,जो बघेली अथवा भोजपुरी बोलते हैं, इस स्वर का व्यवहार शब्द के प्रारम्भ, मध्य व अन्त में करते हैं।लेकिन धागर जाति इस स्वर का प्रयोग नहीं करती। सोनपार के दक्षिण में बोली जाने वाली भोजपुरी में /औरत/ या /चौपाया/ रूप प्रचलित हैं, लेकिन सोन के उत्तर यह आदिवासियों तथा अन्य लोगों में /अउ/ रूप में उच्चरित होता है। इस कारण यह यह कहा जा सकता है कि इस स्वर का प्रयोग जनपद की बहुसख्यक आबादी नहीं करती।

स्वल्पान्तरयुग्म–

ध्वनिरूप तथा ध्वनिग्रामिक रूप का निरूपण करने के लिए स्वल्पान्तरयुग्म भाषा के मूल कारक बनते हैं। धांगर के अतिरिक्त अन्य आदिवासियों में इन युग्मों की पहचान बडी सरल है।

जैसे -

/इ/	मिल
/ई/	मील
/अ/	कम, नम
/आ/	काम, नाम
/ई/	घोड़ी
/अ/	बंल
/आ/	बाल
/ए/	बोल
/ऐ/	बैल
/ए/	बेल, मेल
/ऐ/	बैल
/ई/	मील

स्वरों के ये युग्म, इनकी ध्वनिग्रामिक प्रक्रिया स्पप्ट कर देते हैं। जनपद में बोली जाने वाली धागरी योगात्मक भाषा है,जिसके रूपतत्व तथा सम्बन्धतत्व एक में मिले प्राप्त होते हैं, लेकिन इस भाषा की प्राप्त शब्दावली में इस तरह के युग्म नहीं प्राप्त हो रहे है। इस कारण उल्लिखित स्वर ध्वनिग्राम रूपमें प्रचलित हैं, यह कहने में कठिनाई है। अतः यही कहा जा सकता है कि धागर जाति में /अ/, /आ/, /इ/, /ई/, /उ/, /ऊ/, /ए/, /ओ/ तथा /आ/ स्वर ध्वनियाँ प्रयुक्त होती हैं।

स्वरों का वितरण और उनका प्रयोग इन आदिवासी जातियों में अलग - अलग दिखाई पडता है। धागर जाति में नासिक्य व्यजनों की कमी नहीं है, लेकिन इस जाति के लोग स्वरों को अनुनासिक नहीं करते। अनुनासिकता यहाँ अर्थभेदक भी नहीं है। जनपद में निवास करने वाली खैरवार, बसवार और गोड जातियाँ सामान्य स्वर को भी अनुनासिक करके बोलती हैं, लेकिन यह इनका जातिगत स्वभाव है।

स्वरों के उच्चारण, पूरे जनपद में एक जैसे नहीं है। सोनभद्र के बघेली अथवा अवधी भाषी क्षेत्र में जो स्वर अपने सहज मानक रूप में उच्चरित होते हैं, उनमें कुछ स्वरों का उच्चारण भोजपुरी भाषी क्षेत्र में विलम्बित रूप में बोले जाते है। /ऐ/ एव /औ/ स्वर उन्हीं लोगों द्वारा प्रयुक्त है जो शिक्षित हैं। भोजपुरी क्षेत्र में पढे - लिखे लोग भी इन स्वरों का मूल रूप में उच्चारण नहीं करते और यह पहले ही कहा जा चुका है कि जनपद की एकमात्र जाति धागर जो अपनी भाषा मूल रूप में आज भी बोल रहीं है, इन स्वरों का प्रयोग नहीं करती।

3.2 व्यजन ध्वनिग्राम

स्वर के अतिरिक्त भाषा में बोली जाने वाली ध्वनियाँ अधिकाशत. व्यंजन होती हैं। इन ध्वनियों में प्राणत्व के आधार पर अथवा ध्वनियों में विद्यमान घोषत्व के आधार पर अर्थ व्यतिरेक भी होता है। यदि प्राणत्व को आधार बनाकर व्यजनों का वर्गीकरण किया जाय तो स्पप्टत दो वर्ग बनते है-

(क)- महाप्राण व्यजन- फ्, भ्, थ्, ध्, ठ्, ढ्, छ्, झ्, ख्, घ्

यह गभीर विषय है कि धांगरों में महाप्राण ध्वनियों के उच्चारण की प्रवृत्ति नहीं है। सकलन में जो भी सामग्री प्राप्त हुई है, उसमें कठ्य महाप्राण /ख/ और /घ/ तो प्राप्त हैं, लेकिन अन्य महाप्राणों का प्रयोग ये आदिवासी नहीं करते। जनपद के शेष आदिवासियों में भोजपुरी अथवा स्थानीय बघेली/अवधी के प्रभाव के कारण हर वर्ग की महाप्राण ध्वनियाँ प्राप्त है।

(ख)- अल्पप्राण ध्वनियाँ - प्, ब्, ट्, द्, ड्, च्, ज्, क्, ग्

इनके अतिरिक्त म्ह, न्ह और ल्ह महाप्राण ध्वनियाँ भी आदिवासियों में प्रचलित है। जैसे- कान्ह (कधा) लेकिन धांगर जाति इस ध्वनि का प्रयोग नहीं करती।

जिस तरह व्यंजन ध्वनियाँ प्राणत्व के आधार पर अर्थभेद का कारण बनती है, उसी तरह घोषत्व के आधार पर भी व्यंजन अर्थभेदक हो जाते हैं। सोनभद्र जनपद में निम्नलिखित घोष ध्वनियाँ प्रयुक्त होती हैं-

अघोष- क्, ख्, च्, छ्, ट्, ठ्, त्, थ्, प्, फ्
ग्, घ्, ज्, झ्, ड्, ठ्, द्, ध्, ब्, म्

इन व्यजनों के अतिरिक्त ऐसी भी ध्वनियाँ प्राप्त हैं,जो घोषत्व अथवा प्राणत्व के आधार पर शब्दों का अर्थ नहीं बदलती हैं,लेकिन अपने स्वतत्र प्रयोग में ये अर्थभेदक हैं।

क- नासिक्य ध्वनियाँ - /म्/, /म्ह/, /न्/, /न्ह/, /ङ्/
ख- पार्श्विक ध्वनियाँ- /ल्/, /ल्ह/
ग- लुंठित ध्वनियाँ- /र्/
घ- अर्ध स्वर- /य्/, /व्/

व्यंजनों के उच्चारण स्थान तथा प्रयत्न को देखते हुए इन्हें निम्नलिखित रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है -

	द्वयोष्ठय	दन्त्य	वर्त्स्य	मूर्धन्य	वर्त्स्यतालव्य	कंठ्य	काकल्य
स्पर्श	प् ब् फ्, भ्		त्, द् थ्, ध्	ट्, ड् ठ्, ढ्		क्, ग् ख्, घ्	
स्पर्शसंघर्षी					च्, ज् छ्, झ्		
नासिक्य	म्	ण्	न्			ङ्.	
पार्श्विक			ल्				
लुंठित			र्	ड़्, ढ़्			
संघर्षी			स्				
अर्धस्वर	व् ,				य		

3.2.1 व्यजन ध्वनिग्रामो का वितरण

(१) /प्/- यह द्वयोष्ठ्य, स्पर्श, अल्प प्राण, अघोष व्यजन है तथा सारे आदिवासियों में शब्द के आदि, मध्य तथा अन्त में प्रयुक्त होता है।

जैसे -

धागर जाति में	खडी बोली रूप
पच्चा	पुराना
एडपा	घर
अन्य आदिवासी जातियों में	
पनही	जूता
कपार	सिर
बाप	पिता

(२) /फ्/- यह द्वयोष्ठ्य, स्पर्श, महाप्राण, अघोष व्यजन है। जनपद के आदिवासियों में यह शब्द के आदि, मध्य स्वरपूर्व स्थिति तथा शब्द के अन्त में प्रयुक्त होता है, लेकिन धागर इस व्यंजन का प्रयोग नहीं करते है।

जैसे -

फर	फल
साफ	स्वच्छ
फूफा	फूफा
गोफ	ऊपर

(३) /ब्/- यह द्वयोष्ठ्य, स्पर्श, अल्पप्राण, घोष व्यजन है तथा जनपद की सारी आदिवासियों में शब्द के प्रारम्भ, मध्य तथा अन्त में प्रयुक्त होता है।

जैसे -

धांगर जाति में	खडी बोली रूप
बाली	द्वार
खेबदा	कान
अम्बु/अम्भ	पानी
अन्य आदिवासी जातियों में	
बबूर	बबूल
कब्ब	कब

(४) /भ्/- यह द्वयोष्ठ्य, स्पर्श, महाप्राण, घोष व्यजन है तथा जनपद के आदिवासियों में यह शब्द के प्रत्येक स्थिति में आता है लेकिन थागर जाति के लोग इसका व्यवहार नहीं करते।

जैसे -

भोर	प्रात
गाभिन	गर्भवती
लाभ	लाभ

(५) /त्/- यह दन्त्य, स्पर्श, अघोष, अल्पप्राण व्यजन है तथा जनपद के आदिवासियों में यह शब्द की प्रत्येक स्थिति में आता है।

जैसे -

धांगरी जाति में	खड़ी बोली रूप
तीखिल	चावल
मेन्ताचसा	सुनाई

अन्य आदिवासी जातियों में

ताला	ताला
लता	लता

(६) /थ्/- यह अघोष, महाप्राण, वर्त्स्य स्पर्श व्यजन है। जनपद के आदिवासियों में यह शब्द के प्रत्येक स्थिति में आता है लेकिन, प्राप्त विवरणों के अनुसार थागर इसका व्यवहार नहीं करता है।

जैसे -

थरिया	थाली
माथ	माथ
हाथ्	हाथ

(७) /द्/- यह घोष, अल्पप्राण, वर्त्स्य, स्पर्श व्यजन है। वितरण की दृष्टि से इसका प्रयोग जनपद के हर आदिवासियों में शब्द के आदि मध्य व अन्त में होता है।

जैसे -

धांगरी जाति में	खडी बोली रूप
दहोय	भइया
खद्दर	लडका
रानिद	रानी

अन्य आदिवासी जातियों में

दाल	दाल
बादर	बादल

(८) /घ्/- यह घोष, महाप्राण, वर्त्स्य, स्पर्श व्यजन है। जनपद के सभी आदिवासियों में यह प्रत्येक स्थिति में होता है लेकिन प्राप्त सूचनाओं के अनुसार थागरों में इसका प्रयोग शब्द के मध्य में होता है।

जैसे -

थागर जाति में	खडी बोली रूप
लघरना	जलना

अन्य आदिवासी जातियों में

घास	घास
कन्धा	कन्धा
बाघ	बाघ

(६) /ट्/- यह अल्पप्राण, अघोष, मूर्धन्य स्पर्श व्यजन है। जनपद के सभी आदिवासियों में यह वितरण की दृष्टि से शब्द के प्रत्येक स्थिति में आता है।

जैसे -

थागर जाति में

टठगा	आम
बटुरा	मटर
पिट्टी	चटाई

अन्य आदिवासी जातियों में

टमाटर	टमाटर
मटर	मटर
जटा	केश

(१०) /ठ्/- यह मूर्धन्य स्पर्श, महाप्राण, अघोष व्यजन है। यह धागर जाति के अतिरिक्त आज आदिवासी जातियों में शब्द की प्रत्येक स्थिति में आता है।

जैसे -

ठोकर
कठोर
काठ
कठरा
लाठ्

(११) /ड्/- यह मूर्धन्य स्पर्श, अल्पप्राण, अघोष व्यजन है। यह शब्द के आदि, मध्य एव अन्त स्थिति में प्रयुक्त होता है।

जैसे

धागरी जाति में	खडी बोली रूप
ओन्डस	खाया
मडी	भात

अन्य आदिवासी जातियों में

डेराहुक	डरा हुआ
हुड्ड	लम्बी चीज

/ड/- यह /ड/ का सहस्वन है तथा यह शब्द के मध्य व अन्त में प्रयुक्त होता है।

जैसे -

एडपा	थर
गुड	गुड

अन्य आदिवासी जातियों में

पेड़	पेड
सडक	सड़क

(१२) /ढ्/- यह मूर्धन्य स्पर्श, महाप्राण, घोष व्यजन है। धागर जाति के आदिवासी इस ध्वनि का प्रयोग नहीं करते। शेष जातियों में यह शब्द के आदि के मध्य में प्रयुक्त होता है।

जैसे-

ढक्ना	ढक्कन
बुड्ढा	बूढा

/ढ/ यह /ढ/ का ही सहस्वन है तथा उत्क्षिप्त स्पर्श व्यजन है। इस ध्वनि का प्रयोग शब्द का प्रयोग शब्द के अन्त में प्रयुक्त दिखाई पडता है।

जैसे-

बाढि	बाढ
गाढ	गाढा

(१३) /च्/- यह तत्स्र्य, तालव्य, अल्पप्राण, अघोष व्यजन है। धागर जाति इस ध्वनि का प्रयोग शब्द के आदि व मध्य में करती है। अन्य जातियों में यह आदि, मध्य के साथ अन्त में भी प्रयुक्त होता है।

जैसे -

धागरी जाति में	खडी बोली रूप
चेरो	कल
चींचना	पोछना
मोच्चा	मुँह
अन्य आदिवासी जातियों में	
चाकि	चाक
अचार	अचार
पच्च	सीधे

(१४) /छ्/- यह अघोष, वर्त्स्य, महाप्राण, तालव्य व्यजन है। जनपद की धागर से भिन्न जातियों में इस ध्वनि का प्रयोग शब्द के आदि व मध्य व अन्त स्थिति में होता है।

जैसे -

छिउकी	चीटी
कछनी	कछनी
काछ	कांछ

(१५) /ज्/- यह तालव्य, अल्पप्राण, घोष स्पर्श व्यंजन है। धागर जाति के लोग आदि व मध्य में इसको प्रयुक्त करते हैं। अन्य जातियों में यह अन्त में भी प्रयुक्त होता है।

जैसे -

धांगर जाति में	
जरूर	अवश्य
इंजो	मछली

अन्य आदिवासी जातियों में

जाल	जाल
सजाय	सजा
गाज	गाज

(१६) /झ्/- यह घोष, महाप्राण, तालव्य व्यजन है। इस ध्वनि का प्रयोग केवल अन्य आदिवासी जातियाँ ही करती है। यद्यपि धागर महाप्राणध्वनियों का प्रयोग नहीं करते है लेकिन /झ/ ध्वनि अन्य जातियों के सम्पर्क के कारण इनमें प्रचलित है। यह जाति /ज/ ध्वनि को भी /झ/ की तरह बोलती है।

जैसे -

धांगर जाति में	खडी बोली रूप
झाझ	वाद्य यत्र
झने	जने की जगह प्रयुक्त

(१७) /क्/- यह अघोष, अल्पप्राण, कठ्य व्यजन है। धागर जाति के लोग प्रारम्भ व मध्य में प्रयुक्त करते हैं। अन्य जातियों में यह अन्त में भी प्रयुक्त होता है।

जैसे -

धांगर जाति में

किया	नीचे
ढेक्का	मटका

अन्य आदिवासी जातियों में

कपार	सिर
लकड़ी	लकड़ी
पाकल	पका

(१८) /ख्/- यह अघोष, महाप्राण, कठ्य, स्पर्श व्यजन है। जो आदिवासियों में शब्द के प्रत्येक स्थिति में होता है।

जैसे -

धांगर जाति में

खोखा	पिछला
नेंखंग	किसी का
नेखा	किसका

अन्य आदिवासी जातियों में

खरिया	खारा
राखि	राख
लख	देखों

(१६) /ग़/- यह सघोष, अल्पप्राण, कठ्य, स्पर्श व्यजन है तथा यह आदिवासियों में शब्द के आदि व मध्य में प्रचलित है।

जैसे -

धांगर जाति में	खडी बोली रूप
गुड्डी	गहरा
निगहा	आपको
सगे	साथ

अन्य आदिवासी जातियों में

गाइ	गाय
पगडी	पगडी
लंहगा	लंहगा

(२०) /घ/- यह सघोष, महाप्राण, कठ्य, स्पर्श व्यजन है। यह शब्द के प्रारम्भ व मध्य में धागर जाति में प्रयुक्त होता है। अन्य जातियों में इसका व्यवहार अन्त में भी होता है।

जैसे -

धागर जाति में

घेरमर	सब
लघरना	जलना

अन्य आदिवासी जातियों में

घाम	धूप
घंघरा	घाघरा
बाघ्	बाघ

(२१) /म/- यह द्वयोप्ठ, सघोष, अल्पप्राण, नासिक्य व्यजन है। धागर जाति में यह शब्द के आदि व मध्य में होता है। अन्य जातियों में इसका व्यवहार अन्त में भी होता है।

जैसे -

धांगर जाति में	खडी बोली रूप
मोच्चा	मुँह
नीम	तुम सब
मामुस	मामा

(२२) /न/- यह वर्त्स्य, सघोष, अल्पप्राण, नासिक्य व्यजन है। वितरण की दृष्टि से यह आदिवासियों में शब्द भी प्रत्येक स्थिति में पाया जाता है।

जैसे -

धागर जाति में

नानस	नाना
तन्नी	थोडा
नीन	तुम

अन्य आदिवासी जातियों में

परान्	प्राण
बान	बाण
नून्	नमक

(२३) /ल/- यह वर्त्स्य, पार्श्विक व्यजन है। जनपद की आदिवासियों में यह शब्द की प्रत्येक स्थिति में पाया जाता है।

जैसे -

धागर जाति में

लवा	मारना
नचाहेलरा	नाचने लगी
पाखल	पत्थर

अन्य आदिवासी जातियों में

लोटा	लोटा
लाल	लाल
चिल्लर	चिल्लर
बाल	बाल

(२४) /र/- यह वर्त्स्य, लुंठित व्यजन है। जनपद की आदिवासियों में यह शब्द की प्रत्येक स्थिति में पाया जाता है।

जैसे -

धागर जाति में	खडी बोली रूप
रादन	
एम्बराके	नहाकर
होरबरे	परसों
अन्य आदिवासी जातियों में	
रस्ता	रास्ता
खरर	सडक
जहर	जहर

(२५) /स/- यह वर्त्स्य, अघोष, सघर्षी व्यजन है तथा शब्द भी प्रत्येक स्थिति में आता है।

जैसे -

धागर जाति में	
सन्ने	छोटा
नासगो	भाभी
नानस	नाना
अन्य आदिवासी जातियों में	
सासु	सास
मसान	श्मशान
घास्	घास

(२६) /ह/- यह काकल्य, अघोष, सघर्षी व्यजन है तथा हर आदिवासी जाति इस शब्द का व्यवहार शब्द के आदि, मध्य व अन्त में करती है।

जैसे -

धागर जाति में	
हे हो	सुनो
रहीकेरा	रहा
मेहो	बकरी
अन्य आदिवासी जातियों में	
हर	हल
महीना	महीना
रहिला	चना
लाह	लाख

(२७) /व/- यह द्वयोष्ठ, सघोष अर्द्ध व्यजन है। वितरण की दृष्टि से यह शब्द के आदि में नहीं आता, केवल मध्य व अन्त में आता है। भोजपुरी क्षेत्र में आदिवासियों के साथ अन्य जनसख्या भी इस ध्वनि का व्यवहार विकल्प रूप में करती है तथा इसके स्थान पर /अ/ का प्रयोग होता है। शब्दान्त में /व/ /अ/ की तरह उच्चरित होता है।

जैसे -

दुवार	दुआर
ताव	ताउ

धांगरों मे यह शब्द के मध्य व अन्त में प्रयुक्त होता है।

जैसे-

लवा	मारना

(२८) /य/- यह तालव्य, सघोष, अर्द्ध व्यजन है। भोजपुरी क्षेत्र में /य/ की जगह /अ/ का प्रयोग भी विकल्प से होता है।

जैसे-

सियार	सिआर
घरिया	घरिआ

3.2.2 व्यंजन स्वल्पान्तर तथा उपस्वल्पान्तर युग्म

जनपद में निवास करने वाली तथा योगात्मक भाषा रूप का व्यवहार करने वाली अकेली जाति है - धागर। उल्लिखित व्यजन ध्वनि इस जाति में व्यापक रूप में प्रयुक्त हैं, लेकिन इनके ध्वनिग्रामिक रूप भी विवेचना के लिये कुछ स्वल्पान्तर युग्म तो मिल जा रहे हैं, अन्यथा ऐसे युग्मों का प्राय· अभाव है। इसलिये ये ध्वनियों अर्थभेदक भी है या नहीं, यह कहने में कठिनाई है, लेकिन अर्थभेदकता की प्रवृत्ति इनमें प्राप्त है।

जैसे -

नीन (तुम) तथा नीम (तुम सब) शब्दों में /न/ और /म/, प्रत्यय की तरह प्रयुक्त हैं। /न/ एकवचन बोधक प्रत्यय है, जबकि /म/ बहुवचन बोधक। प्रयोग की दृष्टि से दोनों ही स्वतन्त्र ध्वनियाँ है और अर्थभेदक भी है। ऐसी स्थिति में /न/ और /म/ को ध्वनिग्राम कहा जा सकता है, लेकिन जो भी शब्द सर्वेक्षण के आधार पर प्राप्त हैं, उनमें इस तरह के स्वल्पान्तर युग्मों की संख्या कम है।

धागर जाति की भाषा और उनके स्वल्पान्तर युग्म–

/च/	-	चाली	द्वार
/ब/	-	बाली	आँगन
/ख/	-	खेख	हाथ
/स/	-	खेस	धान
/ड/	-	खेड्ड	पैर
/र/	-	रानिद	रानी
/न/	-	नानिद	नानी
/ए/	-	एम्बस	पिता
/इ/	-	निम्बस	उसके पिता
/न/	-	नीन	तुम
		एन्	मैं
/म/	-	नीम	तुम सब
	-	एम	हम सब
/स/	-	ईस	यह (स्त्रीलिग)
	-	आस	वह (पुल्लिंग)
/द/	-	ईद	यह (पुल्लिंग)
	-	आद	वह (स्त्रीलिंग)
/ई/	-	ईबग्गे	इतना
/ऊ/	-	ऊबग्गे	उतना
/ए/	-	एन्ने	ऐसा
/अ/	-	अन्ने	वैसा
/क/	-	कन्ने	कैसा
/स/	-	कुक्कोस	लड़का
/र/	-	कुक्कोर	लडकी

/क/	-	काबग्गे	कितना
/ज/	-	जाबग्गे	जितना

/म/	-	मनोम	होंगे
/त/	-	मनोत	होंगी
/न/	-	ओन्दरोन	लाऊँ
/त/	-	ओन्दरोत	लायें
/द/	-	दहोय	भइया
/व/	-	बहोय	पिता
/ए/	-	एम्बा	मीठा
/ठ/	-	ठेम्बा	गुच्छा

- धागर जाति में प्राप्त स्वल्पान्तर युग्म **(Minimal Pair)** यह स्पष्ट करते हैं कि जनपद में अपने भाषिक प्रयोगों के लिए अब भी चुनौती बने हुए ये आदिवासी, ध्वनिग्रामिक संरचना से जुड़े हुए हैं, लेकिन कुछ बातें क्षेत्रीय भाषाओं अवधी, बघेली एव भोजपुरी से भिन्न हैं -

१. धागरों की भाषा में प्राणत्व के आधार पर अर्थभेद नहीं है। क वर्गीय महाप्राण इस भाषा में प्राप्त होते हैं, इसलिए यह तो नहीं कहा जा सकता कि ये आदिवासी महाप्राण ध्वनियों का प्रयोग नहीं करते। लेकिन अन्य वर्गों से सबंधित महाप्राण ध्वनियाँ इस जाति में न के बराबर हैं। अत कहा जा सकता है कि अल्पप्राण ध्वनियों का व्यवहार ही इस भाषा की मौलिक प्रवृत्ति है तथा जो महाप्राण ध्वनियाँ प्राप्त हुई हैं, प्राणत्व के आधार पर स्वल्पान्तरयुग्म में अर्थभेद नहीं करती हैं। ध्वनिग्रामिक संगठन में अर्थ-प्रक्रिया में इनका कोई महत्व नहीं है।

२ धागर जाति अघोष ध्वनियो के साथ सघोष ध्वनियों का भी व्यवहार करती है, लेकिन घोषत्व भी इस भाषा में अर्थभेदक नहीं है।

३. अनुनासिक ध्वनियों में केवल दो ही ध्वनियाँ प्राप्त है - /न/ और /म/। ये दोनों ही अर्थभेदक हैं, इसलिए इन ध्वनियों का बड़ा महत्व है। ये दोनों ध्वनियाँ स्वतंत्र रूप में भी प्रयुक्त हैं तथा

दोनों ध्वनि स्वतत्र पदग्राम भी हैं। प्रत्यय की तरह प्रयुक्त होकर ये ध्वनियाँ वचन-बोधक भी बनती हैं। जहाँ तक दीर्घता व अनुनासिकता का प्रश्न है,इन आदिवासियों में उच्चारण की प्रक्रिया अर्थभेदक नहीं है।

४ यहाँ यह विशेष उल्लेखनीय है कि जनपद में अन्य आदिवासी जातियाँ,जो बहुसख्या में भोजपुरी बोलती है अथवा अवधी या बघेली का व्यवहार करती हैं,उनमें प्राणत्व, घोषत्व, अनुनासिकता और दीर्घता आर्यभाषाओं से सीधे प्रभावित होने के कारण अर्थभेदक है।

जनपद की अन्य आदिवासी जातियाँ तथा उनमे प्रचलित स्वल्पान्तर युग्म

१. स्पर्श व्यंजन

(अ) कठय स्पर्श

/क्/	-	कंरी	लकडी
/ख्/	-	खंरी	खली
/ग्/	-	गंरी	नारियल
/घ्/	-	घंरी	घडी

(आ) तालव्य स्पर्श

चालि	चाल
छालि	छाल
जालि	जाल
झालि	झाल

(इ) मूर्धन्य स्पर्श

/ट्/	-	टाटि	टाट
/ठ्/	-	ठाटि	ठाट
/ड्/	-	डालि	डाल
/ढ्/	-	ढालि	ढाल

(ई) दन्त्य स्पर्श

/त्/	-	ताली
/थ्/	-	थाली
/द्/	-	दान
/ध/	-	धान

(उ) स्पर्श द्वयोष्ठ्य

/प्/	-	पर	गिरो
	–	पाप्	पाप
/फ्/	-	फंर	फल
/ब्/	-	बर	जलो
	-	बांप	पिता
/भ्/	-	भर	भरो

२. नासिक्य व्यंजन

/न्/	-	नानी	नानी
	–	कान	कान
/म्/	-	नामी	मशहूर
	–	काम	काम

३. लुंठित एव पार्श्विक ध्वनियाँ

/र्/	-	सार्	साला
/ल्/	-	साल्	वर्ष
/स्/	-	सार्	साला
/ल्/	-	लार्	लार

४. अर्ध स्वर

/य्/	-	यार	मित्र
/व्/	-	वार	हमला

3.3 खण्डेतर ध्वनिग्राम (Suprasegmental phoneme)

अवधी, बघेली एवं भोजपुरी बोलने वाले आदिवासी अनुनासिकता का व्यवहार करते हैं तथा यह अनुनासिकता अर्थभेदक होने के कारण स्वल्पान्तरयुग्म में अर्थभेदक है।

जैसे –	बास	एक तरह की लकडी
	बास	एक तरह की सुरभि

गाज फेन
गाँज ढेर

आदिवासियों, विशेषतया गोंड, खरवार व बसवार जातियों में सामान्य स्वरों को भी अनुनासिक करके बोलने की प्रवृत्ति है। आदिवासी अन्य स्थानीय वक्ताओं की तरह ही स्वरों का उच्चारण करते हैं, लेकिन भोजपुरी क्षेत्र क्रिया रूपों को जब स्वरान्त बनाता है तो शब्द के अन्त में प्रयुक्त /अ/ स्वर केवल क्रिया रूप में सवृत रूप में उच्चरित होता है, तथा यह अर्थभेदक होने लगता है।

जैसे -

चल् और चलˈ
जर् और जरˈ

इस स्थिति में /चलˈ/ और /जरˈ/ आज्ञार्थक क्रियायें हैं, जिसका अर्थ है - चलो तथा जलो। /जर्/ में बलाघात /ज/ पर है। इस कारण शब्द का अर्थ है - बुखार। /जरˈ/ में बलाघात /र/ पर है, जिसका अर्थ है - जलो। इस तरह यह बलाघात भी अर्थभेदक दिखाई पड़ता है। दीर्घता आदिवासियों में नहीं मिलती।

3.4 स्वर सयोग

स्वर सयोग और धागर जाति

धागरी भाषा कोलारियन समूह की भाषा है, तथा आज भी अपने योगात्मक रूप के साथ प्रचलन में है। जिस तरह भारतीय भाषाओं में प्राचीनतम भाषा सस्कृत में स्वर सयोग की प्रवृत्ति नहीं है, क्योंकि स्वर के बाद प्रयुक्त होकर स्वर, संधि प्रक्रिया के कारण रूपान्तरित हो जाता है, उसी तरह धांगर आदिवासियों की भाषा में स्वर सयोग नहीं है। भोजपुरी के प्रभाव के कारण जो शब्द इनमें प्रचलित हो गये हैं, उनमें /अउर/, अकेला ऐसा शब्द है जिसमें यह सयोग दिखाई पड़ता है। सर्वेक्षण के बाद जो सामग्री प्राप्त है, उसमें /अइया/ एकमात्र शब्द है जो धांगरों का अपना शब्द है, जिसका अर्थ है /वहाँ/। भोजपुरी भाषा में यह शब्द माँ अथवा सास के अर्थ में प्रयुक्त होता है।

स्वर-संयोग तथा जनपद की अन्य आदिवासी जातियाँ:

जनपद में निवास करने वाली प्रमुख जातियों में खरवार, बसवार, गोंड़, अगरिया व पनिका थोडी उच्चारण भिन्नता के साथ भोजपुरी अथवा बघेली का व्यवहार करते हैं। इनमें दो स्वर अथवा दो से अधिक स्वर भी एक साथ प्रयुक्त होते दिखायी पडते हैं।

अन्त्य स्वर संयोग

/इ/ /आ/	पइया	चावल का कीडा
/उ/ /आ/	पउआ	सेर
/आ/ /ऊ/	नाऊ	नाई
/ओ/ /इ/	होइ	हो
/ओ/ /उ/	होउ	हो
/ओ /आ/	खोआ	खोआ
/ओ/ /इ/	ओइ	स्वीकृति सूचक शब्द
/ऊ/ /ई/	सूई	सुई
/अ/ /ई/	दूइ	दो
/ई/ /आ/	दीआ	दीप
/आ/ /ई/	माई	माँ

स्वर संयोग मध्य स्थिति

/अ/ /इ/	भइल	हुआ
/ई/ /अ/	पीअर	पीला
	नीयरे	नजदीक
/इ/ /अ/	हरिअर	हरा
/अ/ /उ/	मउसी	मौसी

दो स्वर सयोग प्रारभिक स्थिति

/ओ/ /इ/	ओइसन	वैसा
/अ/ /इ/	अइसी	इधर से
	अइली	आया
/अ/ /उ/	अउर	और

तीन स्वर संयोग

आदिवासी भोजपुरी के प्रभाव के कारण ऐसे शब्दों का भी उच्चारण करते हैं, जिनमें तीन स्वर एक साथ प्रयुक्त होते हैं।

/अ/ /उ/ /अ/	मउअति	मौत
/अ/ /उ/ /आ/	कउआ	कौआ
/ओ/ /इ/ /उ/	ननिआउर	ननिहाल

/ओ/ /इ/ /आ/	चोइआ	चमडा
/अ/ /इ/ /आ/	पइआ	धान का कीडा

3.5 व्यंजन गुच्छ

व्यजन-गुच्छ किसी भी भाषा की मौलिक प्रवृत्ति है। गुच्छों का निर्माण या तो उच्चारण सुख के कारण होता है,या संधि प्रक्रिया के कारण। दो या दो से अधिक व्यजनों का एक साथ प्रयोग तथा उनके बीच में स्वर ध्वनि का न आना ही इस प्रक्रिया का मूल कारण है। बोलियों पर कार्य करने वाले डा० ग्रियर्सन ने यह माना है कि वर्गीय व्यजनों के गुच्छ किसी भी भाषा में अधिक बनते हैं, लेकिन इससे भिन्न स्थिति भी होती है। आदिवासियों में जो शब्द आगत हैं, तथा उनके मूल उच्चारण में गुच्छ बनता है, उनमें स्वरागम करने की प्रवृत्ति मिलती है, जैसे ब्लाक को /बलाक/ कहना। एक दूसरी प्रवृत्ति भी है। जिस व्यजन से मिलकर पूर्व व्यजन गुच्छ बनाता है, उसका लोप करके अंतिम ध्वनि का द्वित्व कर देना। जैसे - /कलेक्टर/ को /कलट्टर/ बोलना। ऐसे भी विदेशी आगत शब्द इन जातियों में आ गये हैं,जो गुच्छे से ही बने हैं,लेकिन अगर कोई सघर्षी ध्वनि प्रारम्भ में है, तो उसका लोप करके सरल रूप में शब्द के उच्चारण का प्रचलन है, जैसे - /स्टेशन/ को /टेशन/ कहना। सरलीकरण किसी भी भाषिक समुदाय की सहज प्रवृत्ति होता है।

सवर्गीय व्यजन गुच्छ

सामान्यतया सवर्गीय स्थिति में स्पर्श के साथ स्पर्श व्यजन ध्वनियाँ जुड़ती हैं या नासिक्य व्यजन के साथ नासिक्य ध्वनियाँ। यही स्थिति युग्मों की भी है। युग्म ध्वनियों में आदिवासियों में केवल दन्त्य 'स' उच्चरित है। इसलिये /स/, /स/ के साथ जुडकर गुच्छ बनाता है। स्पर्श, + नासिक्य, स्पर्श + उष्म, स्पर्श + अर्ध स्वर या नासिक्य + अर्ध स्वर मिलकर भी गुच्छ बनाते हैं। व्यजन-गुच्छ की स्थिति वितरण की दृष्टि से शब्द के आदि, मध्य, अन्त तीनों में सभव है, लेकिन जनपद के आदिवासी शब्द के आदि में व्यजन-गुच्छ का प्रयोग नहीं करते। सामान्यतया यह गुच्छ दो स्वरों के बीच में ही उच्चरित हो पाता है क्योंकि शब्दान्त में भी सयुक्त व्यजनों का उच्चारण संभव नहीं होता।

धांगर जाति तथा उसमें प्रयुक्त व्यजंन गुच्छ

कंठ्य स्पर्श + कंठ्य स्पर्श	-	कुक्कोस	लड़का
	-	लक्कम	देखा करता था

तालव्य स्पर्श + तालव्य स्पर्श	-	पच्चा	पुराना
	-	बिच्चै	बीच में
	-	मोच्चा	मुँह
मूर्धन्य स्पर्श + मूर्धन्य स्पर्श	-	अड्डो	बैल
दन्त्य स्पर्श + दन्त्य स्पर्श	-	ओन्दरोन	लाऊं
संघर्षी + सघर्षी	-	किस्स	सूअर
	-	गुस्सारदी	नाराज होती हो
पार्श्विक + पार्श्विक	-	अल्ला	कुत्ता
	-	खल्ली	चाची
	-	पल्ल	दाँत
नासिक्य + नासिक्य	-	कन्ने	किधर
	-	कन्नू	किसी में
	-	अम्म	पानी
	-	सन्ने	छोटा

भिन्न वर्गीय व्यजन गुच्छ

नासिक्य + स्पर्श	-	ओन्टा	एक
	-	ओण्डकन	खाया
	-	ओन्दरोन	लाऊं
	-	ऐम्बा	मीठा
नासिक्य + संघर्षी	-	खेन्सो	लाल

जनपद की अन्य आदिवासी जातियॉ तथा सवर्गीय व्यजन गुच्छ

कंठ्य स्पर्श + कठ्य स्पर्श	-	कक्का	चाचा
	-	पक्खा	घर का किनारा
	-	लग्गा	लकड़ी
	-	बग्घा	बाघ

तालव्य स्पर्श + तालव्य स्पर्श	-	चच्चा	चाचा
	-	लच्छी	लपेटी रस्सी
	-	धज्जी	चिंदा
	-	गुज्झा	टुकडे
मूर्धन्य + मूर्धन्य	-	खट्टा	खट्टा
	-	पट्ठा	मजबूत
	-	लड्डू	लड्डू
	-	बुड्ढा	बूढा
दन्त्य स्पर्श + दन्त्य स्पर्श	-	लत्ता	कपडा
	-	हत्था	हत्था
	-	गद्दी	गद्दी
	-	अद्धा	आधा
द्वयोष्ठ स्पर्श + द्वयोष्ठ स्पर्श	-	कुप्पा	कुप्पी
	-	ठप्पा	ठप्पा
	-	फुफ्फा	फूफा
	-	अब्बर	कमजोर
	-	गब्भा	गहराई
संघर्षी + संघर्षी	-	खिस्सा	किस्सा
	-	हिस्सा	भाग
पार्श्विक + पार्श्विक	-	गल्ला	अनाज
	-	हल्ला	हल्ला
लुंठित + लुंठित	-	कर्रा	भेड़िया
	-	भर्रा	छप्पर की लकड़ी
नासिक्य + नासिक्य	-	नन्ना	नाना
	-	लम्मा	लंबा

भिन्नवर्गीय व्यजन गुच्छ

भोजपुरी भाषी क्षेत्र में आदिवासियों में भिन्नवर्गीय गुच्छों का अभाव है। क्योंकि सरलीकरण की प्रवृत्ति के कारण ऐसे गुच्छों में स्वरागम हो जाता है, अत ऐसे गुच्छ प्रचलन में नहीं के बराबर हैं। जैसे- कुर्सी, बर्छी, जैसे शब्द कुरसी, बरछी रूप में उच्चरित होते हैं। स्पर्श ध्वनियों के कारण लुंठित ध्वनियों जहाँ खडी बोली में गुच्छ बना लेती हैं, वहीं भोजपुरीभाषी आदिवासियों में स्वरागम ही मूल प्रवृत्ति है।

जैसे - हरदी, बरधा।

आदिवासियों में प्रचलित इन व्यजन गुच्छों को एक सारणी के रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है। इस योजना का व्यवहार, सदर्भ अग्रांकित है-

धागर भाषा में प्रयुक्त व्यजन गुच्छ

	क	ख	ग	घ	च	छ	ज	झ	ट	ठ	ड	ढ	त	थ	द	घ	प	फ	ब	भ	न	म	स	ह	र	ल	य	व
क											X														X		X	
ख		X			X								X								X							
ग													X															
घ																												
च					X								X				X											
छ																												
ज		X																										
झ																												
ट																												
ठ																												
ड																												
ढ																												
त																												
थ																												
द													X															
ध																												
प				X																								
फ																												
ब																												
भ																												
न			X														X			X								
म						X																						
स			X																									
ह																												
र			X																X									
ल			X																									
य			X																									
व																												

अन्य आदिवासी जातियो मे प्रयुक्त प्रयुक्त व्यजन गुच्छ

	क	ख	ग	घ	च	छ	ज	झ	ट	ठ	ड	ढ	त	थ	द	ध	प	फ	ब	भ	न	म	स	ह	र	ल	य	व
क	X																											
ख																												
ग			X	X																								
घ			X																									
च					X	X																						
छ																												
ज							X	X																				
झ																												
ट									X	X																		
ठ																												
ड											X	X																
ढ																												
त													X	X														
थ																												
द															X	X												
ध																												
प																	X	X										
फ																												
ब																												
भ																												
न	X				X	X	X				X	X	X						X									
म											X		X	X			X				X	X	X			X		
स	X																											
ह																					X	X	X					
र	X															X	X	X					X					
ल	X																						X					
य	X										X						X					X						
व																												

अध्याय 4

संज्ञा

संज्ञा रूपतालिका

सज्ञा पद अपने गठनात्मक धरातल पर प्रकृति अथवा प्रातिपदिक के पश्चात् विभक्तियों के युक्त संक्रमण को स्वीकार करता है। इस तरह मूल अर्थबोधक प्रातिपदिक के बाद जब भी व्याकरणिक अर्थ प्रकट करने के लिये संज्ञा प्रातिपदिक के बाद विभक्तियां लगती हैं तो पद पूर्ण अर्थ की अभिव्यक्ति में सक्षम हो जाता है। मूल प्रातिपदिकों से केवल मूल के सत्व का बोध होता है, लेकिन मूल प्रातिपदिक को वाक्य में प्रयुक्त करने की क्षमता नहीं होती। लिग, वचन अथवा कारकीय स्थिति प्रकट करने के लिये जोडने वाली विभक्ति सत्व प्रधान इकाई अथवा प्रातिपदिक के साथ जुड़कर पद का निर्माण करती है। भोजपुरी क्षेत्र में ऐसे शब्द भी प्राप्त हैं जो पद धरातल तक शून्य विभक्ति से युक्त होते हैं, अर्थात पारपरिक रूप में प्राप्त विभक्तियॉ, इनके साथ अलग से जुडी नहीं दिखायी पड़तीं।लेकिन यह शून्यता भी लिग, वचन तथा कारक का व्याकरणिक अर्थ प्रकट करने में सक्षम होती है। अगर इस दृष्टि से प्रातिपदिकों का वर्गीकरण किया जाय तो दो स्थितियॉ सामने आती हैं -

क - सज्ञा प्रातिपदिक का मूल रूप

ख - सज्ञा प्रातिपदिक का व्युत्पन्न रूप

इन दोनों ही इकाइयों के बाद विभक्ति का सयोग होता है। संज्ञा प्रातिपादिक अपने प्रयोग में या तो स्वरान्त होते हैं या व्यजनात। पूरे परिक्षेत्र में जो भी आदिवासी जातियॉ निवास करती हैं अथवा भोजपुरी भाषी सवर्ण जाति के लोग रहते हैं, सामान्यतया शब्द के अन्त में /अ/ स्वर का प्रयोग नहीं करते। यह स्वर व्यंजनसंयोग से बनने वाले प्रातिपादिकों के अन्त में ही उच्चरित होता है। आदिवासियों में भाषिक दृष्टि से सबसे महत्वपूर्ण जाति धांगर सज्ञा प्रातिपादिकों के अन्त में ह्रस्व स्वरों का व्यवहार नहीं करती।

4. .क : धागर जाति तथा उनमें प्रयुक्त स्वरान्त प्रातिपदिक :

		(हिन्दी अर्थ)
/अ/-	प्रयोग में नहीं	
/आ/-	असमा	रोटी
	पागा	पगड़ी
	फड़ुआ	फावड़ा
/इ/-	प्रयुक्त नहीं	
/ई/ -	ऐंखई	पत्नी
	खल्ली	चाची
	ताची	बुआ

/उ/-	प्रयुक्त नहीं	
/ऊ/-	जम्बू	जामुन
/ए/-	प्रयुक्त नहीं	
/ओ/-	अड्डो	बैल
	नासगो	भाभी

स्वरान्त प्रयुक्त प्रातिपदिक पुल्लिग भी है, स्त्रीलिंग भी है। इसलिये जाति की शब्दावली के विश्लेषण से यह नहीं कहा जा सकता कि किसी विशेष स्वर में समाप्त होने वाले पद पुल्लिंग अथवा स्त्रीलिंग होते हैं।

स्वरान्त पुल्लिग प्रातिपदिक:

		(हिन्दी अर्थ)
/आ/-	मोच्चा	मुँह
	फड्डुआ	फावडा
	ठेक्का	मटका
/ओ/-	अड्डो	बैल

स्वरान्त पुल्लिग प्रातिपदिक:

/आ/-	असमा	रोटी
	पागा	पगड़ी
/ई/-	ताची	चाची
	एखई	पत्नी
/ओ/-	नासगों	भाभी

व्यंजनान्त प्रातिपदिक:

धांगर जाति में कुछ अपवादों को छोडकर व्यजनान्त प्रातिपदिकों का अभाव है। कुछ सज्ञा प्रातिपदिक ऐसे हैं, जो संस्कृत तत्सम हैं और धागर जाति में अपने मूल अर्थ में प्रचलित हैं। चूंकि इनमें उच्चारणगत परिवर्तन है,इसलिये इन प्रातिपदिकों को तद्‌भव कहा जा सकता है।

जैसे- /अम्प/ (पानी) संस्कृत रूप - अम्बु

बाल के लिये धांगरों में व्यंजनान्त सज्ञा प्रातिपदिक /कच/ प्रयुक्त है,जो सस्कृत से आया है। सामग्री संकलन के समय /खेख - हाथ/, /तीखिल - चावल/, /पाखल- पत्थर/ ऐसे प्राप्त शब्द हैं जो व्यंजनान्त हैं, अन्यथा प्राप्त संज्ञा प्रातिपदिकों के रूप अधिकाशतः स्वरान्त हैं।

4. खः जनपद की अन्य आदिवासी जातियाँ तथा उनमें प्राप्त सज्ञा प्रातिपदिक

जनपद की अन्य आदिवासी जातियाँ सज्ञा प्रातिपदिकों का व्यवहार मूल रूप में करती हैं। इन रूपों में लिग अथवा वचन का परिचय देने वाली विभक्तियाँ नहीं जुडतीं, अथवा इन प्रातिपदिकों को शून्य विभक्ति युक्त माना जा सकता है।

		(हिन्दी अर्थ)
जैसे-	घाम	धूप
	चाम	चमडा
	लात	पैर
	गोड	पैर

जनपद की आदिवासी जातियाँ ऐसे प्रातिपदिकों का भी व्यवहार करती हैं जिनमें व्युत्पादक परप्रत्यय को जोड़कर भी रूप निर्मित होता है तथा संज्ञा प्रातिपदिक का मूल रूप तथा व्युत्पन्न रूप साथ ही प्रयुक्त होता है।

जैसे -

मूल रूप - ऑखि, नाकि, मुँह
व्युत्पन्न रूप- अंखिया, नकिया, मुहँवा

स्वरान्त प्रातिपदिक

/अ/– जनपद के आदिवासी /अ/ स्वर का व्यवहार प्रातिपदिक के अन्त में नहीं करते, लेकिन जहाँ व्यजन सयोग मिलाते हैं, ऐसे स्थानों पर /अ/ का व्यवहार देखा जा सकता है।

जैसे- कान्ह (मिट्टी के भडार का कधा)

कंधे के अर्थ में कान्ह/कान्हि, दो रूप संपरिवर्तक रूप में प्रचलित है तथा गोड और बसवार इसे अकारान्त रूप में ही बोलते हैं।

/आ/– दादा, बाबा, कनया

दुद्धी तहसील में निवास करने वाला आदिवासी इनके स्थान पर कक्का, बबा रूप का उच्चारण करता है।

/इ/– आगि, राति, आंखि, कोसि

सोन के दक्षिण का आदिवासी इन रूपों को अकारान्त बोलता है।

/ई/– चाभी, माटी, धोती, गोजी, चाची

/ए/– दूबे, चौबे

/उ/– गांउ, आसु, सासु

/ऊ/– नाऊ, गोरू, बछरू

व्यंजनांत प्रातिपदिक (अघोषान्त)

जनपद के आदिवासियों में धागरों के अतिरिक्त अन्य जातियों में अल्पप्राण रूपों के महाप्राण रूप भी प्रचलित हैं। अत. स्पर्श व्यजनों में नासिक्य ध्वनियों में कुछ को छोड़कर शेष व्यजनों का व्यवहार सज्ञा प्रातिपदिकों के अन्त में मिलता है।

/क/–	कातिक्	एक महीना
	खटिक्	एक जाति
/ट/–	पेट्	पेट
	बेंट्	हत्था
	पाट्	पाट
/त/–	खेत्	खेत
	भात्	चावल
	जात्	पीसने का यत्र
/प/–	साप्	साप
	बाप्	बाप
/च/–	सोच्	सोच
	लोच्	मुलायम

व्यंजनांत प्रातिपदिक (सघोषान्त)

/ग/–	साग्	साग
	रोग्	व्याधि
	जोग्	योग

/ड/ड/– ड का व्यवहार सामान्यतया आदिवासी शब्दान्त में नहीं करता लेकिन /ड/ शब्दान्त में प्रयुक्त है।

जैसे-	पेंड	पेड़
	रेड	एक प्रकार का पेड
/द/–	लाद	पेट
	गाद	परत
/ब/–	जवाब	जवाब
/ज/–	अनाज	अनाज
	भतीज	भतीजा

महाप्राण प्रातिपदिक (अघोषान्त)

/ख/–	पाख	पक्ष
/ढ/–	काढ़	लकड़ी
	लाठ	रास्ता
/[illegible]/–	हॉथ	हाथ
	मॉथ	माथा
/फ/–	गोंफ	फुलगी
	भाफ	भाप
/छ/–	काछ	काछ

महाप्राण व्यंजनांत प्रातिपदिक (सघोषान्त)

/घ/–	बाघ	बाघ
	घाघ	घाघ

/ढ/– ढ का प्रयोग शब्दान्त नहीं है। इसके स्थान पर ढ सहस्वन का प्रयोग होता है।

/ध/– दुसाध — एक जाति
बाध — बाध (रस्सी)

/भ/– गाभ — अन्त में

/झ/– सांझ — सध्या
बाझ — बध्या

भोजपुरी क्षेत्र में जिन नासिक्य व्यंजनों का व्यवहार होता हैं उनमें /न/ और /म/ प्रमुख हैं। इनके अतिरिक्त अन्य नासिक्य ध्वनियों का प्रयोग आदिवासी नहीं करतें।

/न/– कान — कान
धान — धान

/म/– चाम — चमडा
घाम — धूप
साम — साम

सघर्षी व्यजनात प्रातिपदिक

/ह/– नह — नाखून
मुँह — मुँह

/ल/– जेल — जेल
तेल — तेल

/र/– घर — घर
जर — जर

सज्ञा प्रातिपदिक तथा उनके व्युत्पन्न रूप –

इस क्षेत्र में निवास करने वाला आदिवासी भोजपुरी भाषा के प्रभाव के कारण सज्ञा रूपों का व्यवहार उसके मूल रूप के साथ उसके विकृत रूप में भी करता है जिसमें लघुरूप, दीर्घरूप और दीर्घतम रूप भी प्राप्त हैं। जैसे - चमार - चमरा - चमरवा।

इन रूपों का व्यवहार परसर्गों के पूर्व होता है, लेकिन यह प्रवृत्ति धागरों में नहीं है। धागर जाति के लोग सज्ञा प्रातिपदिक के मूल रूप का ही व्यवहार करते हैं। धागरों के अतिरिक्त /आ/ या /वा/ जोड़कर रूप निर्मित होते हैं।

जैसे-	लोहार	लोहरा
	सोनार	सोनरा
	धर	धरवा
	खपड़ा	खपडवा
	गाय	गइया
	राखि	रखिया

इस तरह के परिवर्तनों में एक और प्रवृत्ति भी दिखाई पडती है। मूल प्रातिपदिक के अन्त में प्रयुक्त होने वाला दीर्घ स्वर प्रातिपदिक का दीर्घरूप बनाते समय ह्रस्व स्वर हो जाता है।

जैसे-	फरसा	फरसवा
	खपडा	खपडवा

अकारान्त, आकारान्त एवं व्यजनान्त प्रातिपदिकों के मूल लघुरूप जब संज्ञा प्रातिपदिकों के दीर्घरूप बनाने लगते हैं,तो उनके अन्त में /वा/ प्रत्यय की तरह प्रयुक्त होता है।

जैसे-	घर	घरवा
	फर	फरवा
	फरसा	फरसवा
	खपड़ा	खपड़वा

वे प्रातिपदिक, जो अपने मूल लघुरूप में इकारान्त हैं वे दीर्घरूप बनाते समय आकारान्त हो जाते हैं।

जैसे-	गाइ्	गइया
	राखि	रखिया

यहाँ यह विचारणीय है कि ऐसे प्रातिपदिकों का प्रथम दीर्घ स्वर सदैव ह्रस्व हो जाया करता है। यह स्थिति ह्रस्व अकारान्त तथा दीर्घ अकारान्त में भी है। /आ/ प्रत्यय जोडकर इनके भी दीर्घरूप बनते हैं। यदि ऐसे प्रातिपदिक स्त्रीवाची हैं तो दीर्घरूप बनते समय प्रत्यय के पूर्व स्त्रीवाची प्रत्यय /इ/ का आगम होता है तथा व्युत्पन्न रूप में मूल रूप का प्रथम दीर्घस्वर ह्रस्व हो जाया करता है।

जैसे-	भालु	भलुइया
	आलू	अलुइया
	सासु	ससुइया

जहाँ तक व्यंजनांत संज्ञा मूल प्रातिपदिकों का प्रश्न है, उनके बाद भी /वा/ प्रत्यय जुडता है, लेकिन यदि मूल प्रातिपदिक के अन्त में अनुनासिक ध्वनि है तो व्युत्पन्न प्रातिपदिक का अंतिम स्वर भी अनुनासिक हो जाता है।

जैसे-	काम	कमवा
	घाम	घमवाँ
	चाम	चमवां
	कान	कनवां

इस तरह दीर्घ रूप बनाने की प्रवृत्ति भोजपुरी के प्रभाव के कारण जनपद के प्रत्येक आदिवासी समुदाय में है। केवल धांगर जाति इसकी अपवाद है। धागर जाति के लोग संज्ञा प्रातिपदिक के मूलरूप का ही व्यवहार करते है।

स्वरान्त प्रातिपदिक (पुल्लिंग)

/अ/–	गिद्ध
/आ/–	बरदा
	बछ्वा
/इ/–	सामान्तया अप्राप्त
/ई/–	पानी
/उ/–	घाउ
/ऊ/–	नाऊ
/ए/–	दूबे
/ओ/–	कोदो

संज्ञा रूपों में /ऐ/ और /औ/ प्रातिपदिकों के अन्त में प्रचलित नहीं है।

व्यजनान्त प्रातिपदिक (पुल्लिग)

/क/–	कातिक
/ख/–	पाख
/ग/–	साग
/घ/–	बाघ
/च/–	खोंच
/छ/–	काछ
/ज/–	जहाज
/झ/–	झांझ
/ट/–	टाट
/ठ/–	काठ
/ड/ड़/–	डाड
/ढ/ढ/–	कोढ
/त/–	लात
/थ/–	हाथ
/द/–	मवाद
/ध/–	दुसाध
/प/–	नाप
/ह/–	गोह
/ब/–	गरीब
/भ/–	गाभ
/ल/–	गाल
/र/–	लार
/स/–	नास
/ह/–	लाह
/न/–	कान
/म/–	नाम

स्वरान्त प्रातिपदिक (स्त्रीलिग)

/अ/–	अप्राप्त
/आ/–	सरिआ
	बहिया
/इ/–	गाइ
	नाकि
	साँसि
/ई/–	ओसारी
	भाजी
	लकडी
/उ/–	सासु
	भालु
/ऊ/–	आलू

व्यजनात प्रातिपदिक (स्त्रीलिग)

इस क्षेत्र का आदिवासी सामान्तया स्त्रीलिग में व्यजनात प्रातिपदिकों का प्रयोग नहीं करता है।

....

4 ग : वचन

सामान्यतया व्याकराणिक स्थितियों के निर्वाह में सज्ञारूपतालिका अपने मूल रूप में अपने वचन का परिचय देती है लेकिन यह परिचय वाक्य स्तर पर ही संभव होता है। प्रातिपदिकों में जुड़ने वाली विभक्तियाँ व्याकरणिक स्थिति को स्पष्ट करते हुये लिग, वचन तथा कारकीय सरचना में सक्षम होती हैं। फिर भी सज्ञाओं में कितने ऐसे रूप प्राप्त होते हैं जिनमें विभक्ति दिखाई नहीं पडती, यानी शून्य विभक्ति से काम चलाया जाता है। आर्यभाषाओं में इस तरह प्रातिपदिकों के मूल अथवा विकृति रूप विभक्ति का सयोजन कर, पद निर्माण में सहायक होते हैं।

वचन बोधक विभक्तियों का सयोजन तथा धांगर जाति

धांगर जाति में वचन बोधक प्रत्यय के रूप में केवल दो प्रत्यय प्रयुक्त होते हैं-

एकवचन	बहुवचन
–स	–र

संज्ञा प्रातिपदिक के अन्त में इन्हें जोडकर पद बनता है, और यह पद वाक्य में प्रयुक्त होने की क्षमता धारण कर लेता है।

जैसे-

पुल्लिंग प्रातिपदिक

	एकवचन		बहुवचन	
	कुक्को –स ,	कुक्कोस (लडका)	कुक्को- र, कुक्कोर	(लड़के)
स्त्रीलिंग प्रातिपदिक	कुक्के,	(लडकी)	कुक्केर	(लडकिया)

धागर जाति में /–स/ प्रत्यय का व्यवहार पुल्लिग एकवचन के लिये होता है, जबकि /-र/ बहुवचन व्यक्त करके के लिये पुल्लिग व स्त्रीलिंग दोनो में प्रयुक्त है। धागर जाति स्त्रीलिग एकवचन में /–द/ प्रत्यय का व्यवहार करती है।

जैसे -

रानिद	रानी
नानिद	नानी
खईद	दुल्हन

यह ध्यान देने की बात है कि /–द/ प्रत्यय का व्यवहार समान रूप से स्त्रीवाची सर्वनामों के साथ भी होता है तथा /–स/ का प्रयोग पुरूषवाची सर्वनामों के साथ। पुरूषवाची सर्वनाम, अन्यपुरूष एकवचन एवं पुरूषवाची सर्वनाम स्त्रीवाची एकवचन दोनों के लिये क्रमशः /–स/ और /–द/ आबद्ध रूप विभक्तियों की तरह प्रयुक्त हैं।जबकि बहुबचन संज्ञा रूप तालिका में सर्वत्र /-र/ विभक्ति की तरह प्रचलित मिलता है।

अन्य आदिवासी जातियों तथा उनकी वचन विभक्ति प्रक्रिया:

अन्य आदिवासी जातियों में कुछ सज्ञा प्रातिपदिक ऐसे हैं जिनमें सख्यावाची विशेषण लगाने के बाद ही वचन का परिचय मिलता है।

जैसे - एक रोटी।
दूइ रोटी।
ढेरइ रोटी।

यहाँ रोटी पद में लिंगबोधक शून्यविभक्ति तो है लेकिन वचनबोधक इकाई उसमें समाहित नहीं है। सज्ञा रूप तालिका अपने मूलरूप में /न/, /वन/, प्रत्यय जोडकर बहुबचन बनाती है।

जैसे-

/न/-	कुक्कुर	कुक्कुरन
	बरदा	बरदन
	अदिमी	अदिमिन

ऐसे प्रयोगों में उच्चारणगत परिवर्तन दृष्टव्य हैं, जो संधि-प्रक्रिया का हिस्सा हैं। ऐसे संज्ञा प्रातिपदिक जिनमें व्यजन सयोग हैं, उनमें प्रत्यय जुडने के साथ एक व्यजन का लोप हो जाता है। इसी तरह जिन प्रातिपदिकों के अन्त में दीर्घ स्वर हैं, वे ह्रस्व हो जाते है।

/अन/- अन प्रत्यय का व्यवहार /न/ प्रत्यय के संपरिवर्तक रूप में होता है।

जैसे-

मछरी	मछरिन	/	मछरियन
आदमी	अदमिन	/	अदमियन

/वन/- ऐसे सज्ञा प्रातिपदिक जो दीर्घ रूप में प्रचलित होते हैं, उनके अन्त में /न/ परप्रव्यय /व/ के साथ प्रयुक्त होता है।

जैसे-

घोड़ा	-	घोडवा	-	घोड़वन
नाथा	-	नथवा	-	नथवन

4 घः कारकीय सरचना

संज्ञा का मूलरूप वाक्य में अन्यपदों के साथ सबध बनाते हुये जो रूपान्तर ग्रहण करता है, उसे कारक कहा गया है। यह रूपान्तरण सर्वनाम विशेषणों में भी होता है। गठन की इस प्रक्रिया में बाद में आने वाला प्रत्यय मूल रूप में भी ध्वन्यात्मक परिवर्तन करता है। इस कारण सज्ञा का मूलरूप तथा उसका विकारी रूप एक साथ देखा जा सकता है। आर्य भाषाओं में यह प्रवृत्ति आज की तिथि में सामान्य हो गयी है।

धागर जाति की भाषा व उसकी कारकीय सरचनाः

धागर जाति के प्राप्त भाषाई रूप और उनके विश्लेषण से यह स्पप्ट है कि यह जाति परसर्गो का व्यवहार करती है तथा प्रातिपदिक से लिगबोधक प्रत्यय, बचनबोधक प्रत्यय तथा कारकीय विभक्तियॉं जुड़कर सबको एक इकाई बना देती है। भाषा के प्राचीतम रूप ^. का प्रतिनिधि होते हुए भी धागरी में सस्कृत भाषा की तरह एक ही विभक्ति से लिंग, वचन, कारक का परिचय नहीं होता। यह एक मौलिक स्थिति है कि आधुनिक आर्यभाषाओं की तरह इस भाषा में भी व्याकरणिक अर्थ का बोध कराने वाली लिंग, वचन, कारक की प्रक्रिया में प्रयुक्त होने वाले अलग - अलग प्रत्यय एक ही इकाई का हिस्सा बनकर योगात्मक रूप में प्रयुक्त होते हैं। धागर जाति में कर्त्ता, कर्म, संप्रदान, सबध व अधिकरण के एकवचन और बहुवचन रूप को प्राप्त है, जिनके लिए स्वतंत्र परसर्ग प्रयुक्त होते हैं। करण तथा अपादान में भिन्नता नहीं है तथा इसके लिए /तुरू/ परसर्ग जोड़कर प्रसंग से अर्थ निकाला जाता है।

कर्त्ता	-स	-र
कर्म	-सिन	-रिन

करण के लिये /तुरू/, सप्रदान के लिये /गे/, संबंध के लिये /हा/, अधिकरण के लिये /नू/ परसर्ग जोडकर मूल सज्ञा प्रातिपदिक में बिना किसी परिवर्तन के एकवचन तथा बहुबचन दोनों रूपों में धागर जाति के लोग व्याकरणिक सदर्भो का निर्माण करते हैं।

जैसे-

	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	कुक्कोस (लडका)	कुक्कोर (लड़के)
कर्म	कुक्कोसिन (लडके को)	कुक्कोरिन (लड़कों को)
करण	कुक्कोसतुरू (लड़के से)	कुक्कोरतुरू (लडको से)

सम्प्रदान	कुक्कोसगे (लडके के लिये)	कुक्कोरगे (लडको के लिये)
अपादान	कुक्कोसतुरू (लड़के से)	कुक्कोरतुरू (लडको से)
संबध	कुक्कोसहा (लड़के की)	कुक्कोरहा (लडकों की)
अधिकरण	कुक्कोसनू (लड़के पर)	कुक्कोरनू (लडकों पर)

स्त्रीवाची रूपों में कारकीय प्रक्रिया परसर्गों के संगठन में पुल्लिग जैसी है। केवल कर्त्ता कारक रूप अलग हैं, जिसमें मूल प्रातिपदिक की भिन्नता इसे स्वतत्र आकार देती है।
जैसे-

स्त्रीलिंग	एकवचन	बहुवचन
	कुके	कुकेर

शेष रूप एकवचन तथा बहुबचन /सिन/, /तुरू/, /गे/, /हॉ/ तथा /नू/ परसर्ग जोडकर तैयार होते हैं।

जनपद की अन्य आदिवासी जातियां तथा उनकी कारकीय प्रकियाः

जनपद की अन्य आदिवासी जातिया स्थानीय भोजपुरी तथा बघेली का व्यवहार करती हैं। भोजपुरी बोलने वालों में सज्ञा के लघु, दीर्घ तथा मध्यम रूप प्राप्त हैं तथा इनके मूल रूप में शून्य विभक्ति का ही प्रयोग होता है। विकारी रूप का एकबचन शून्य विभक्ति से बनता है। संज्ञा के ये रूप पुल्लिग एकवचन अथवा स्त्रीलिग एकबचन में प्राप्त हैं। उनमें बहुबचन बनाते समय एकबचन से भिन्न विभक्तिया प्राप्त होती हैं। पूरे परिक्षेत्र में /क/, /रे/, /ने/, /के/, /क/, /से/, /में/ परसर्ग प्राप्त होते हैं।

/के/, /रे/, /ने/- यह परसर्ग सज्ञा तथा सर्वनामों के बाद आता है।

संज्ञा पद - अदमी परसर्ग /के/- अदमी के।

/रे/ तथा /ने/- परसर्ग संपरिवर्तक के रूप में प्रयुक्त हैं जो पुरूषवाची सर्वनाम, उत्तमपुरूष तथा निजवाची सर्वनामों के बाद प्रयुक्त होते हैं। जैसे - हमरे, अपने।

/में/- संज्ञा पदों के बाद आकर यह परसर्ग काल, अवस्था तथा अधिकरण पर प्रकाश डालता है।

/म/- इस परसर्ग का व्यवहार गोंड़ व बसवार करतें हैं। यह/में/ अर्थ में ही प्रयुक्त है।

जैसे- बील म घुसस।
(बिल में घुसा)

/ने/- अहीर तथा बसवार/ में/ के अर्थ में/ने/ का भी प्रयोग करता है।
जैसे - घरे ने
में का प्रयोग पूरे भोजपुरी भाषी क्षेत्र में है,जो सज्ञा तथा सर्वनाम दोनों के बाद प्रचलित है।
जैसे- घरे में
एम्में, ओम्में (इसमें, उसमें)

/से/- इस परसर्ग का प्रयोग सज्ञाओं में करण और संप्रदान दोनों स्थितियों में होता है।
जैसे- घरे से,
नाकी से

/क/- यह परसर्ग संज्ञा पदों के पश्चात् आता है। जैसे- लडकी क बाबू (लड़की के पिता)

/बदे/- इस परसर्ग का व्यवहार/लिये/ के अर्थ में पूरे भोजपुरीभाषी क्षेत्र में है और आदिवासी इसी अर्थ में इसका व्यवहार करता है।

जैसे- लडका बदे (लडके के लिये)

कारकीय रचना का प्राप्त संदर्भ इस बात की सूचना देता है कि आदिवासियों में हस्व स्वरान्त व दीर्घ स्वरान्त जो भी प्रातिपदिक रूप प्राप्त हैं अथवा व्यंजनात हैं, वे परसर्ग लगने के बाद या तो दीर्घ स्वरान्त हो जाते हैं, या अकारान्त रूप एकारान्त हो जाते हैं।

जैसे-

मूल प्रातिपदिक	परसर्ग - क	निर्मित रूप
भालु-	"	भालू क (गोड जाति)
गाइ-	"	गाई क दूध
घर-	"	घरे क लइका
साप-	"	सांपे क बच्चा

वे प्रातिपदिक जो मूलरूप में अकारान्त हैं, उनमें कोई परिवर्तन नहीं होता।
जैसे-

मूलरूप	परसर्ग - क	व्युत्पन्न रूप
घोडा		घोडा क सरिआ

पुल्लिग एव स्त्रीलिंग मूल एकवचन	मूल बहुबचन	विकारी एकबचन	विकारी बहुबचन
-आ	-आ	-आ	-अन्

इस वर्ग के अन्तर्गत उन प्रातिपदिकों को स्वीकार किया जा सकता है जो उल्लिखित विभक्तियों के साथ प्रयुक्त होते हैं। जैसे- बरधा, फरसा आदि।

पुल्लिंग			
मूल एकवचन	मूल बहुबचन	विकारी एकवचन	विकारी बहुबचन
०	०	-ए	-एन

इस वर्ग के अन्तर्गत वे प्रातिपदिक हैं जिनके अन्त में व्यजनसयोग प्राप्त हैं तथा जो विकारी रूप में ही परिवर्तन लेते हैं। जैसे- गिद्ध

पुल्लिग एव स्त्रीलिग			
मूल एकबचन	मूल बहुबचन	विकारी एकवचन	विकारी बहुबचन
-ई	-ई	-ई	-अन्

इस वर्ग के अन्तर्गत ईकारान्त पुल्लिग रूप आते है। जैसे- धोबी।

पुल्लिग एवं स्त्रीलिग			
मूल एकवचन	मूल बहुबचन	विकारी एकवचन	विकारी बहुबचन
-ऊ	-ऊ	-ऊ	-ऊन

इस वर्ग के अन्तर्गत वे प्रातिपदिक हैं, जो ऊकारान्त हैं। जैसे - नाऊ, बाबू, साधू। उल्लिखित विभक्तियां मूल प्रातिपदिकों के साथ जुड़कर पदों का निर्माण करती हैं। यह बताने की आवश्यकता नहीं है कि परसर्ग सदैव पदों के बाद ही जुड़ते हैं, जबकि विभक्तियां प्रातिपदिकों के साथ जुडकर पद का निर्माण करती हैं। पीछे जिन परसर्गो का उल्लेख हुआ है, उनका प्रयोग आदिवासी पदों के साथ करके भाषिक संरचना पूरी करता है।

अध्याय 5

सर्वनाम

सर्वनाम सज्ञाओं के प्रतिनिधि होते हैं तथा इनका व्यवहार सज्ञा के स्थान पर ही हुआ करता है। सर्वनामों का पद रूप विभक्ति प्रक्रिया से ही बनता है। पूरे परिक्षेत्र में सर्वनामों में दो ही रूप प्राप्त हैं- पुल्लिंग एव स्त्रीलिग। इसी तरह वचन को ध्यान में रखते हुये भी या तो एकवचन रूप प्रचलित हैं या बहुबचन। संज्ञा की तरह सर्वनामों में भी वाक्य-स्तर पर लिग-निर्णय की स्थिति मिलती है, लेकिन जनपद की धागर जाति इसका अपवाद है। धागरों की भाषा में सर्वनामों का लिंग निर्णय क्रिया के आधार पर नहीं होता। सस्कृत की तरह इस आदिवासी जाति के वक्ता भी सर्वनाम के मूल प्रयोग से ही लिंग निर्धारण करने में सक्षम हैं। दूसरे शब्दों में धांगरी के क्रिया-पदों का लिग संस्कृत भाषा के सार्वनामिक प्रयोग की तरह स्वंय में ही निर्धारित होता है। रूप, अर्थ एवं प्रयोग को ध्यान में रखते हुए पूरे परिक्षेत्र में प्राप्त सर्वनामों के ६ भेद हैं-

१. पुरूषवाची
२ निश्चयवाची
३ सबंधवाची
४ प्रश्नवाची
५. अनिश्चयवाची
६ निजवाची

धागरों की भाषा तथा उनमें प्रचलित सर्वनाम रूपः

5 1 1 पुरूषवाची सर्वनाम

(क) उत्तम पुरूष - मूल

	एकवचन	बहुवचन
	एन (मैं)	एम (हम)
विकारी	एग्गा (मुझको)	एमगा (हमको)
	एनतुरू (मुझसे)	एमतुरू (हमसे)
	एगहागे (मेरे लिये)	एमहागे (हमारे लिये)
	एंगहा (मेरा)	एमहा (हमारा)
	एगागे (मुझमें)	एमागे (हममें)

विभक्ति प्रक्रिया

कर्ता	एकवचन	बहुवचन
	-न	-म

मूल सर्वनाम /ए/ (मैं) के बाद उल्लिखित विभक्तियों के सयोग से एकवचन एवं बहुवचन रूप निर्मित होते हैं, लेकिन कर्त्ता कारक के अतिरिक्त अन्य कारकों का प्रयोग करते हुये धागर आदिवासी /ए/ मूल रूप के बाद /ग/ रूप जोडकर ही उसके बाद विभक्तियां प्रयुक्त करने का अभ्यूस्त है। इसी कारण /एंग/ अन्य कारकों में स्पप्ट सुनाई पडता है। यह रूप केवल एकवचन के साथ है। बहुवचन में सर्वत्र इसके स्थान पर /म/ जोड़कर फिर विभक्ति लगाई जाती है।

(ख) मध्यम पुरूष - मूल रूप

एकवचन	बहुवचन
नी- न (तुम)	नी- म (तुम सब)

कारकीय संरचना में मध्यम पुरूष में भी उन्हीं विभक्तियों का प्रयोग होता है,जो उत्तम पुरूष में प्रचलित हैं।

(ग) अन्य पुरूष

धागर जाति में अन्य पुरुष सर्वनाम का मूल रूप है /आ/, जिसके बाद /-स/ तथा /-द/ प्रत्यय प्रयुक्त होता है। /-स/ का प्रयोग पुल्लिग के लिये होता है,जबकि /-द/ या तो स्त्रीवाची है या पशुओं के लिये प्रयुक्त होता है। बहुवचन बोधक प्रत्यय अन्य पुरूष में उत्तम पुरूष तथा मध्यम पुरूष की तरह नहीं हैं। इनके स्थान पर /-र/ प्रत्यय का व्यवहार होता है। जैसे-

अन्य पुरूष	एकवचन	बहुवचन
पुल्लिग	आ - स (वह)	आ- र (वे)
स्त्रीलिग	एकवचन	बहुवचन
	आ- द (वह)	आ -र (वे)

अन्य पुरूष में भी अन्य कारकों में उन्हीं विभक्तियों का प्रयोग होता है, जो उत्तम पुरूष तथा मध्यम पुरूष में प्रचलित हैं।

पुरूषवाची सर्वनाम तालिका

	एकवचन	बहुवचन
उत्तम पुरूष	ए-	ए-
मध्यम पुरूष	नी-	नी-
अन्य पुरूष	आ-	आ-

सर्वनाम, बचन बोधक विभक्ति

	एकवचन	बहुवचन
उत्तम पुरूष	-न	-म
मध्यम पुरूष	-न	-म
अन्य पुरूष	-स	-र

व्युत्पन्न रूप

	एकवचन	बहुवचन
उत्तम पुरूष	एन	एम
मध्यम पुरूष	नीन	नीम
अन्य पुरूष (पु)	आस	आर
(स्त्री)	आद	आर

5 1 2 निश्चयवाची सर्वनाम

प्राप्त संदर्भों के अनुसार अपने गठनात्मक सदर्भ में निश्चयवाची सर्वनाम में उन्हीं रूपों का व्यवहार होता है जो पुरूषवाची अन्य पुरूष में प्राप्त हैं। इन्हें दो वर्गों में रखा जा सकता है-

क- निकटवर्ती तथा ख - दूरवर्ती

कः निकटवर्ती

(पुल्लिंग) एकवचन	बहुवचन
ईस (यह)	ईर (ये)

इसमें /ई-/ सर्वनाम है तथा /-स/ व /-र/ वचन बोधक प्रत्यय है।

(स्त्रीलिंग) एकवचन	बहुवचन
ईद (यह)	ईर (ये)

खः दूरवर्ती

	एकवचन	बहुवचन
(पुल्लिंग)	आस (वह)	आर (वे)
(स्त्रीलिंग)	आद्र (वह)	आर (वे)

5 1 3 संबधवाची सर्वनाम

एकवचन	बहुवचन
आसिन (जो)	आसिम (जो लोग)

5 1 4 प्रश्नवाची सर्वनाम

एकवचन	बहुवचन
ने (कौन)	X
एन्दरा (क्या)	X

5 1 5 अनिश्चयवाची सर्वनाम

क· पुरूषवाची

एकवचन	बहुवचन
नेखंग	X

ख· वस्तुवाची

तन्नी (कुछ)	X

5 1 6 निजवाची सर्वनाम

एकवचन	बहुवचन
एड (अपना)	X

उल्लिखित सर्वनामों में धागर जाति के लोग उन्हीं विभक्ति तथा परसर्गो का व्यवहार करते हैं, जो पुरूषवाची सर्वनामों के साथ प्रयुक्त हैं।

5 2 जनपद की अन्य आदिवासी जातियों में प्रचलित सर्वनाम

धांगर के अतिरिक्त शेष जातियाँ भोजपुरी तथा बघेली रूपों का व्यवहार करती हैं। अधिकाश जातियाँ भोजपुरी भाषी क्षेत्र में रहती हैं। इस कारण इनके भाषिकरूप भोजपुरी और बघेली से मिले-जुले हैं। जहाँ तक रूप और अर्थ तथा प्रयोगों की पृष्ठभूमि में सर्वनामों की भिन्नता का प्रश्न है, इन आदिवासियों में पुरूषवाची, निश्चयवाची, संबधवाची, अनिश्चयवाची, प्रश्नवाची, निजवाची सर्वनाम प्रचलित है।

5 2 1 पुरूषवाची सर्वनाम

क : उत्तम पुरूष

इस क्षेत्र में हम एकवचन में प्रयुक्त है लेकिन खैरवार /म/, बसवार /मंय/, गोड़ व पठारी /महुं/ रूप का एकबचन पुरूषवाची रूप में प्रयोग करता है तथा उनमें /हम/ तथा /हमन्/ बहुबच्चन रूप में प्राप्त है।

एकवचन	बहुवचन	
हम	हमन् /हमहन्/हमरन्	
म /मा	हबन	(धरकार व खरवार जाति)
मंय	हमरे /हमरन्	(बसवार व धरकार जाति)

जहाँ तक पद निर्माण प्रक्रिया का प्रश्न है, इन इकाइयों में कर्ता कारक में कोई अलग विभक्ति नहीं जुड़ती, केवल शून्य विभक्ति लगने के कारण यह इकाई स्वय में एक पद है, लेकिन अन्य कारकों में प्रयोग के समय मूल प्रातिपदिक /म/ या /मा/ में परिवर्तन प्राप्त है। हम के बाद केवल उन्हीं परसर्गों का व्यवहार होता है जो सज्ञा रूप में प्रचलित हैं। इस तरह उत्तम-पुरूष में होने वाले परिवर्तन उल्लिखित हैं:-

मूलकारक/विकारी कारक	मूल कारक/विकारी कारक
एकवचन	बहुवचन
हम	हमन्
हमा	हम
म / मो	X (गोड, धरकार जाति)
मय / म्वा	X

ख : मध्यम पुरूष

इस परिक्षेत्र में मध्यम पुरूष सर्वनाम में आदरवाची और अनादरवाची दोनों ही रूप प्रचलित हैं। अर्थ की प्रक्रिया में विशिष्टजनों के लिये आप/रउरे, सामान्यजनों के लिये।तू।तथा छोटे बच्चों, सामान्य लोगों अथवा स्त्रियों के लिये एकवचन में।तौंय। सर्वनाम का प्रयोग मूल रूप में प्राप्त है,जिसके बाद बहुबचन प्रत्यय जोडकर सर्वनाम के रूप व्युत्पन्न होते हैं।

निरादरार्थ

एकवचन	बहुवचन	
तोंइ	तोहन/तोन्हन	
तय	तुहरे	(खैरवार जाति)
तय/तहूं	तुहरने	(बसवार, गोंड जाति)
तू	तू पचे	(गोंड,पठारी,खैरवार-दुद्धी तहसील)

आदरार्थ

एकवचन	बहुवचन	
तूं	तू लोग/तूं लोगन	
तू	तू सभे	(दुद्धी तहसील के आदिवासी)
त	तोहरे	(बसवार जाति)
तंय	तुहरे	(अन्य जातियां)
तंय	तइए	

मध्यम पुरूष में सार्वनामिक रचना-प्रक्रिया के अन्तर्गत जब भी परसर्गों का व्यवहार होता है, मूल रूप में नीचे अंकित रूपान्तर हो जाते हैं।

मूल कारक/विकारी कारक	मूल कारक/विकारी कारक	
एकवचन	बहुवचन	
तू/तू	तू लोग/तू लोग	
तोह/तोह	X	
X /तह	तुह	(खैरवार जाति)
X /त्वा	X	(बसवार जाति)

गः अन्य पुरूष/निश्चयवाची

रूप की दृष्टि से पुरूषवाची अन्य-पुरूष तथा निश्चयवाची सर्वनामों के रूप एक जैसे हैं।

निकटवर्ती·

इस कोटि में /इ/ और /ए/, /न/ बहुवचनबोधक प्रत्यय जोडकर प्रयुक्त हैं। /ई/ के स्थान पर /हइ/ रूप भी प्रचलित है जिसके बाद बहुवचन बोधक प्रत्यय /न/ जुड़ता है तथा मध्य में प्रयुक्त होने वाला /इ/ स्वर /ए/ हो जाता है।

एकवचन	बहुवचन
ई	एन/एन्हन
हई	हेन/हेनन/हेन्हन

दूरवर्ती·

निकटवर्ती रूपों की तरह स्त्रीवाची तथा निरादरार्थ एकवचन एव बहुवचन रूप तथा पुरूषवाची आदरार्थ एवं बहुवचन रूप मिलते हैं।

एकवचन	बहुवचन	
ऊ	ओन्हनन/ओन्हन	
हऊ	होन्हन	
ऊ	उन्हन	(दुद्धी क्षेत्र)
ऊ	उनहने	(गोड़, पठारी जाति)
ऊ	ओ	(बसवार जाति)
ऊ	होकने	(खैरवार, धरकार जाति)
वह	ओइये	(गोंड, पठारी जाति)

5 2 2 संबंधवाचक सर्वनाम

	एकवचन	बहुवचन
	जे	जेन
संपरिवर्तक रूप		
	जवन	जवनन

5 2 3 प्रश्नवाची सर्वनाम

जनपद में आदिवासी जातिया तथा यहा के सवर्ण मनुष्यों के लिये तथा वस्तुओं के लिये अलग-अलग रूपों का व्यवहार करतें है-

क- मनुष्यों के लिए

	एकवचन	बहुवचन
सामान्य प्रयोग	के	केन
अनादरार्थ	कवन	कवनन

ख- वस्तुओं के लिये

	एकवचन	बहुवचन
	का	X
विकारी रूप		
	कवन	X
	कथू	X
	केथू/कथुआ	X

5 2 4 निजवाची सर्वनाम

एकवचन	बहुवचन
आपन	अपनन
अपुना	अपनुन (दुद्धी तहसील)
अपुआ	अपुअइ (खैरवार, बसवार जाति)

दुद्धी में निवास करने वाला आदिवासी राउर और रउआ का भी प्रयोग करता है।

5 2 5 **अनिश्यवाची सर्वनाम**

अनिश्चयवाची सर्वनामों में वस्तुओं तथा मनुष्यों के लिये अलग-अलग सर्वनाम रूप प्रचलित हैं।

मनुष्यों के लिए

एकवचन	बहुवचन
केउ	कवनों/कौनों

वस्तु . वाची

कुछ	X

तिर्यक संपरिवर्तक-

सपरिवर्तक क्षेत्र में बोले जाने वाले सर्वनामों के ऐसे रूप हैं, जो परसर्गों से प्रभावित होने के कारण रूप लेते है।

सर्वनाम पुरूषवाची

उत्तम पुरुष-	(हम)	तिर्यक रूप	परसर्ग	ए व व्युत्पन्न रूप
		हम-	-इ	हमइ
		हमा-	-र, -रे	हमार/हमरे
		हम-	-के	हमके
			-से	हमसे
	सर्वनाम-(म)	मो-	-र, -रे	मोर, मोरे
			-के	मौके
		त्वा-	-र, -रे	त्वार, त्वारे

मध्यम पुरूष

(तोई)	तो-	-र, -रे	तोर, तोरे
		-के	तोके
		-से	तोसे
		-पर	तोपर
(तू)	तोह-	-र,-रे	तोहरे
		-के	तोहके
		-से	तोहसे
	तुह-	-र, -रे	तुहरा, तुहरे
	त्वा-	-र	त्वार

अन्यपुरूष निश्चवाची			
(ए)	ए-	-के	एके
		-से	एसे
		-कर	एकर
		-में	एमें
		-पर	एपर
दूरवर्ती-(ऊ)	ओ-	-के	ओके
		-से	ओसे
		-कर	ओकर
		-में	ओमे
		-पर	ओपर
सबंधवाची सर्वनाम(जे)	जे-	-के	जेके
		-से	जैसे
		-पर	जेपर
		-कर	जेकर
प्रश्नवाची सर्वनाम(के)	के-	-के	केसे
		-से	केसे
		-पर	केपर
		-में	केमे
		-कर	केकर
संगतिमूलक सर्वनाम(ते)	ते-	-ते	तेते
		-से	तेसे
		-के	तेके
		-पर	तेपर

व्युत्पन्न बहुबचन रूपों की प्राप्ति के लिये तिर्यक संपरिवर्तक के बाद बहुबचन बोधक पर प्रत्यय न सयुक्त करने के पश्चात् परसर्गो का प्रयोग करते हैं। इस तरह बहुबचन रूप में तिर्यक रूप + बहुबचन बोधक पर प्रत्यय + परसर्ग का क्रम रहता है। यथा -

	तिर्यक रूप	बहुवचन बोधक प्रत्यय	परसर्ग	व्युत्पन्न रूप
के	के-	-न	-से	केनसे
	के-		-कर	केकर

5 3 1 सार्वनामिक विशेषण (धांगरजाति में)

सर्वनाम के प्रचलित रूप जब विशेषणों के पूर्व प्रयुक्त होते हैं तो एक नई व्याकरणित कोटि निर्मित होती है। इसे सार्वनामिक विशेषण कहा गया है। सार्वनामिक पदग्रामों में प्रत्यय लगाकर विशेषण बनाने की प्रवृत्ति लगभग सभी भाषाओं में है। इनसे या तो परिमाण का बोध होता है, अथवा किसी स्थिति या प्रणाली का।

(क)- परिमाण बोधक

जनपद में निवास करने वाली धांगर जाति निम्नाकित सार्वनामिक विशेषणों का व्यवहार करती है-

सर्वनाम	सार्वनामिक विशेषण	
ई	ईबग्गे	(इतना)
आ	आबग्गे/उबग्गे	(उतना)
का	काबग्गे	(जितना)

(ख)- प्रणाली बोधक

सर्वनाम	सार्वनामिक विशेषण	
ए	एन्ने	(ऐसा)
अ/आ	अन्ने	(वैसा)
क	कन्ने	(कैसा)

5 3 2 सर्वनामिक विशेषण तथा अन्य आदिवासी जातियां:

जनपद की अन्य आदिवासी जातिया जो बघेली तथा भोजपुरी रूप बोलती हैं उनमें सार्वनामिक विशेषणों के वही रूप प्राप्त है जो अन्य सवर्णों में प्राप्त है। इनमें भी या तो परिणाम बताने वाले या किसी प्रणाली का ज्ञान कराने वाले विशेषण रूप सर्वनामों के सहयोग से बनते है।

सर्वनाम	सार्वनामिक विशेषण
इ	अइसन
	असस (दुद्धी में)
ऊ	ओइसन
	ओसस (दुद्धी में)

जे	जइसन
	जस (दुद्धी में)
ते	तइसन
	तस (दुद्धी में)
परिमाण बोधक	
इ	एतना
ऊ	ओतना/तेतना
जे	जेतना
के	केतना

अध्याय 6

विशेषण

विशेषण रूप तालिका सज्ञा तथा सर्वनामों के पूर्व प्रयुक्त होकर उसकी अर्थ-प्रक्रिया को प्रतिबंधित करती है। जहाँ तक जनपद में रहने वाले आदिवासियों में प्रयुक्त विशेषणों का संबध है, धागर जाति में विशेषण अपने मूल रूप में ही प्रयुक्त होता है, जबकि धांगर से भिन्न जनपद के आदिवासी,जो भोजुपरी से प्रभावित हैं, अथवा भोजपुरी भाषा का ही जनपद का उत्तरी या दक्षिणी रूप व्यवहृत करते हैं, संज्ञा की तरह विशेषणों का व्यवहार भी लघु एव दीर्घ रूप में करते हैं।

जैसे- बड लड़का।

बडका लड़का।

गुरू रूप बनाते समय व्यंजनांत विशेषण में - अका प्रत्यय जोड़कर दीर्घ रूप बनता है।

जैसे- विशेषण	-अका	प्राप्तरूप
बड़्-		बडका
छोट्-		छोटका

विशेषणों के संपरिर्तक रूप भी प्राप्त हैं, जिनका प्रयोग अर्थ स्तर पर सुविधानुसार होता है।

जैसे- उज्जर/उजरे (उजला)

उज्जर कपडा

उजरे कपडा

6 1 सार्वनामिक विशेषण

पुरूषवाची सर्वनाम एवं निजवाची सर्वनामों के अतिरिक्त शेष सर्वनाम संज्ञा पदों के पूर्व आकर सार्वनामिक विशेषण बनाते हैं।

6 2 गुणवाची विशेषण

क- धागर जाति

गुण सूचक -

माख - (बुरा), कत्था- (अच्छा)

रगसूचक-

खेंसो- (लाल), पनेरा- (सफेद), अन्य रंगों के लिये शब्द प्राप्त नहीं

स्थान सूचक-

गड्डी- (गहरा), पतील (पतला), टेढगा- (टेढ़ा)

जुक्का -(तिरछा), इपा- (नीचा)

दशा सूचक-

पतील- (पतला), खैका- (सूखा), हेलहेल- (गीला)

खः अन्य आदिवासी जातियों में

गुणबोधक-

नीक, नेवर, सोझ, टेढ, बागुर

रगबोधक-

लाल, पीअर, हरिअर, उज्जर, करिआ

स्थानबोधक-

लम्मा, चाकर, ऊच, खाल, गहीर, साकर, टेढ

आकार बोधक-

गोल्लर, चाकर, खोखर

दशा बोधक-

दुबर, पातर, मोट, गाढ, गील, मोटोल, हेलहेल, हिली

6 3 संख्यावाची विशेषण

जहॉं तक इस श्रेणी के विशेषणों का प्रश्न है, धागर जाति के लोग ६ से अधिक सख्याओं का प्रयोग नहीं करते। 1 १६६६ में स्वीकृत इस प्रबन्ध की स्थापनाओं में कोई परिवर्तन नहीं आया है, लेकिन आज की तिथि में शिक्षित धांगर समीपवर्ती भाषा भोजपुरी या बघेली के प्रभाव से भोजपुरी में प्रचलित सख्यावाची का प्रयोग करने लगता है। यह एक सांस्कृतिक सक्रमण है जो अनुकरण के कारण जातियों की स्वाभाविक प्रवृत्ति बनता है। धागरों में जब अपनी भाषा की ६ से अधिक सख्यायें है ही नहीं तो उनमें सौ,हजार जैसी सख्याओं की कल्पना भी नहीं हो सकती। अपूर्णाक बोधकों में केवल चतुर्थांश बोधक के लिए शब्द है। इन्हें पूर्णांक बोधक के साथ जोडकर नया शब्द बनाने की प्रवृत्ति इस जाति॰ में नहीं है।

क. पूर्णांक बोधक (धांगर जाति में)

१. ओन्टा (एक)
२. एण / एंटाड़् (दो)
३ मूंन / मून्टाड़् (तीन)
४. नाख (चार)
५. पचे (पांच)
६ सुइये (छ)

ख. पूर्णांक बोधक (अन्य आदिवासी जातियों में)

अन्य आदिवासी जातियों में १०० तक सख्यायें प्राप्त हैं। सोन के उत्तरी भाग में जिन विशेषणों के अन्त में /र/ है, वह सवृत रूप में स्वरान्त उच्चरित होता है। यही सख्यायें सोननदी के दक्षिण थोड़े भिन्न उच्चारण के साथ बोली जाती हैं। /र/ के बाद /ह/ उच्चरित करने की प्रवृत्ति सोनपारी भोजपुरी और बघेली में है।

---

1 मिर्जापुर के आर्य [illegible]ओं का संकालिक अध्ययन- प्रस्तोता डा० मूल शंकर शर्मा, पेज - 120, इलाहाबाद विश्वविद्यालय में स्वीकृत शोध प्रबन्ध

जैसे-

इगार'	ग्यारह	इगारह
बार'	बारह	बारह
तेंर'	तेरह	तेरह

१	एक	३१	इकतीस
२	दूइ	३२	बत्तीस
३	तीनि, तीन	३३	तैतीस
४	चारि, चार	३४	चॅउतिस
५.	पांच	३५.	पैंतीस
६	छ	३६	छत्तिस
७	सात	३७	सैतिस
८	आठ	३८	अडतिस
६	नउ	३६.	ओनतालिस, उनतालिस
१०	दस	४०.	चालिस
११	इग्यारह, इग्यार'	४१.	एकतालिस
१२	बारह, बार'	४२	बयालिस
१३	तेरह, तेर'	४३.	तैंतालिस
१४.	चउद'	४४.	चउवालिस
१५	पनर'	४५.	पैंतालिस
१६	सोर'	४६	छियालिस
१७	सतर'	४७.	सैंतालिस
१८	अठार'	४८	अँडतालिस
१६	ओनइस	४६	उनचास, ओनचास
२०	बीस	५०.	पचास
२१.	एकइस	५१	एक्कावन
२२.	बाइस	५२	बावन
२३.	तेइस	५३	तिरपन
२४.	चउबिस	५४	चउवन
२५	पचीस	५५	पचपन
२६.	छब्बीस	५६.	छप्पन
२७	सत्ताइस	५७	सत्तावन
२८.	अठ्ठाइस	५८	अठ्ठावन
२६.	ओनतिस	५६.	उनसठ
३६.	तीस	६०	साठि

६१ इकसठि
६२ बासठि
६३ तिरसठि
६४. चौंसठि, चउसठि
६५ पैसठि
६६. छाछठि
६७. सडसठि
६८. अडसठि
६६. ओनहत्तरि
७०. सत्तरि
७१. एकहत्तरि
७२. बहत्तरि
७३ तिहत्तरि
७४ चउहत्तरि
७५ पचहत्तरि
७६. छिहत्तरि
७७ सतहत्तरि
७८. अठहत्तरि
७६. ओन्यासी
८० अस्सी
८१ एक्यासी
८२ बयासी
८३ तिरासी
८४. चौरासी
८५ पचासी
८६ छियासी
८७ सतासी
८८. अठ्ठासी
८६. नवासी
६०. नब्बे
६१. एकानबे
६२. बनाबे
६३ तिरानबे
६४. चौरानबे
६६. छानबे
६७ सतानबे
६८. अट्ठानबे
६६. निन्नयाबे
१०० सउ

अपूर्णांक बोधक

अपूर्ण सख्यावाचियों में धागर जाति केवल दो सख्यायें प्रयोग में लाती है

ओनकोचा-	आधा (½)
ओनटूका	चतुर्थाश (¼)

अन्य जातियों में खडी बोली के प्रचलित सारे रूप प्राप्त हैं।

पाउ	¼
आध या आधा	½
पवन	¾
सवाई	1¼
डेढ़	1½
अढाई	2½
साढे तीन	3½

पूर्णांक बोधक विशेषणों से प्रत्यय सयोग द्वारा क्रमवाची रूप बनते हैं।

धांगर जाति	अन्य जाति	खडी बोली रूप
ओन्टा	पहिल	पहला
एंण/एंटाड़्	दूसर	दूसरा
मून/मून्टाड़्	तीसर	तीसरा
नांखवा	चउथ	चौथा
पन्चे	पाचउ	पांचवा
सुइये	छठउ	छठवा
X	सातऊ	सातवा

चूंकि धागरों में सख्यायें ६ तक हैं इसलिये क्रमबोधक इससे आगे नहीं है। जबकि अन्य जातियों में- सर, व, ऊं, वॉं, प्रत्ययों का व्यवहार सपरिवर्तक रूप में निर्मित होते हैं।

जैसे-

दूसर
पाचउ
सतवा

इसी क्रम में प्रत्यय की भिन्नता द्वारा तिथियों के निर्माण की प्रवत्ति की देखी जा सकती है। धांगरों में तिथि के लिये अलग से कोई शब्द नहीं है। वे इसके लिये भोजपुरी क्षेत्र में प्रचलित रूपों का ही व्यवहार करते हैं। इससे यह अनुमान हो सकता है कि प्रारम्भ में इस जाति में तिथियों की कोई संकल्पना नहीं थी। भोजपुरी भाषी लोगों की तरह इस जनपद की सारी आदिवासी जाति संस्कृत में

प्रचलित तद्भव रूपों का प्रयोग करती हैं।

एक्कम
दूइजि
तीजि
चउथि
पंचिमी
छट्ठि
सत्तिमी
अस्टिमी
नउमी
दसिमी
एकादसी
दुआसि
तेरसि
चतुरदसी
पुनवासी

गुणात्मक संख्यावाची

विशेषणों के ये रूप पूर्णांक संख्यावाची विशेषणों के आगे गुन- गुना प्रत्यय जोडकर बनता है। कहीं /-न/ प्रत्यय जोड़कर भी आदिवासी काम चलाते हैं।

जैसे-

विशेषण	प्रत्यय	व्युत्पन्न रूप
दूइ	-न	दून
	-गुन	दूगुन

धागर जाति अपनी मूल संख्या में गुना जोड़कर रूप निर्मित करती है।

जैसे-	एण गुना	दो गुना
	नाख गुना	चौगुना

अन्य जातियों में प्रचलित रूप उल्लिखित प्रत्ययों द्वारा ही बनते हैं।

विशेषण	प्रत्यय	व्यतपन्न रूप
	-न /-गुन/-गुना	
दूइ		दून, दूगुन, दूगुना
तीनि		तीगुन, तिगुना
चारि		चउगुन, चउगुना

आवृत्ति अथवा किसी वस्तु की परत व्यक्त करने के लिये धागरों में कोई शब्दावली नहीं हैं। वे गुना प्रत्यय जोड़कर ही काम चलाते हैं, लेकिन सोन के उत्तर रहने वाले आदिवासी पूर्ण सख्यावाची के बाद /हर/ प्रत्यय जोड़कर रूप गढते हैं। /हर/ के स्थान पर /सर/ प्रत्यय भी जुडता है।

विशेषण	प्रत्यय	व्युत्पन्न रूप
एक	हर, /हरा/	एकहर /एकहरा/
दुइ		दोहर /दोहरा/
तीन		तेहर /तेहर/

यहीं /ठे/ और /गो/ निपात की तरह प्रयुक्त हैं जो संख्यावाचियों के बाद जुड़ते हैं। सोननदी के उत्तर /ठे/ तथा दक्षिण में /गो/ रूप प्रचलित है।

जैसे-

एक ठे।

एक गो।

/गो/ प्रत्यय जुड़ने के बाद संख्यावाची की अघोष ध्वनि सघोष हो जी है।

जैसे- एग्गो

6 4 **परिमाणवाची विशेषण**

मूल सर्वनाम में /तन्/ प्रत्यय जोडकर परिमाणवाची विशेषण के निर्माण की प्रक्रिया प्रचलित है।

जैसे-

सर्वनाम	प्रत्यय	व्यतपन्न रूप
ई	तन्	एतना
उ		ओतना

धांगर /बग्गे/ रूप जोड़कर इस रूप का गठन करते हैं।

सर्वनाम	निर्मित रूप
ई	ईबग्गे
ऊ	ऊबग्गे

6 5 **क्रमवाची विशेषण**

पूर्णांक संख्यावाची विशेषण में क्रम बोधक प्रत्यय /ल/, /सर/ जोडकर आदिवासियों में रूप प्रचलित हैं।

		प्रत्यय	व्युत्पन्न रूप
जैसे-	एक	-ल	पहिल
	दूई	-सर	दूसर
	तीन	-सर	तीसर

यहाँ ध्यान देने की बात है कि पर प्रत्यय लगने के कारण पूर्णांक बोधक इकाई का अंतिम स्वर या व्यंजन लुप्त हो जाता है।

66 अनिश्चित संख्यावाची विशेषण

यह विशेषण उन रूपों का प्रतिनिधित्व करता है, जिसमें संख्या की कोई निश्चितता नहीं होती तथा इसके द्वारा अधिकांशतया मात्रा का ही बोध होता है। धागर जाति जो अपनी विशिष्ट रचना-प्रक्रिया के लिये सपूर्ण पूर्वाचंल में एक चुनौती है, उसमें भी ये विशेषण उपलब्ध हैं।

जैसे-

धागर जाति	अन्य आदिवासी	हिन्दी अर्थ
अउर	अउर	और
होरमर	सब	सब
होरमर	कूलि/कुल्ली	कुल
बग्गे	ढेरई	ज्यादा
तन्नी	कम	कम
	तन्निक	थोडा
	घुच्चिक	अतिशय कम

अध्याय 7

क्रिया

7.1 सहायक क्रिया

भारतीय भाषाओं की यह मूल प्रवृत्ति है कि उसमें कृदन्तों तथा सहायक क्रियाओं के योग से काल-रचना सम्भव होती है। जनपद में निवास करने वाले आदिवासी बहुसंख्यक रूप में /ह/ /रह/तथा /बा/ सहायक क्रियाओं द्वारा वाक्य-रचना पूरी करते हैं। जहाँ तक धागर जाति का सबंध है, उनमें ये रूप प्रचलित नहीं हैं। धागरों में सहायक-क्रिया का केवल एक ही रूप है, वह है /रास/ जिसका प्रयोग उ० पु०, म० पु०, अ० पु० के एकवचन तथा बहुवचन में समान रूप से होता है। केवल इन रूपों के पूर्व प्रयुक्त होने वाली, संज्ञा अथवा सर्वनामों की स्थिति द्वारा ही इनका लिंग, वचन, कारक तैंय होता है। /रास/ का प्रयोग, धांगर वर्तमान निश्चयार्थ /है/ के अर्थ में करते है।

जैसे-

क : वर्तमान निश्चयार्थ

	एकवचन	बहुवचन
उ० पु०	एन रास	एम रास
	(मैं हूँ)	(हम है)
म० पु०	नीन रास	नीम रास
	(तुम हो)	(तुम सब हो)
अ० पु०	आस रास	आर रास
	(वह है)	(वे हैं)

उल्लिखित प्रकरण में क्रिया रूप में कोई भिन्नता नहीं है।

क्रिया रूप और जनपद की अन्य आदिवासी जातियाँ

जनपद की अन्य आदिवासी जातियों में /ह, /रह, /बा धातुओं में प्रत्यय जोड़कर सहायक क्रियायें बनती हैं। /रह/ रूप का प्रयोग भूत निश्चयार्थ में /बा/का वर्तमान निश्चयार्थ में प्रयोग में आता है। -ला प्रत्यय काल बोधक हैं, इसके स्थान पर अन्य संपरिवर्तक भी जनपद में प्रयुक्त होते हैं।

वर्तमान निश्चयार्थ

उत्तम पुरूष

एकवचन	बहुवचन	
हई	हई	(सोन के उत्तर आदिवासियों में)
हिय	हिंय	(सोन के दक्षिण आदिवासियों में)
ही	अहीं	(सोन के दक्षिण बसवार, खरवार)
हौं	ही	(कोल तथा अन्य जातियों मे)

मध्यम पुरूष

मध्यम पुरूष स्त्रीलिंग निरादरार्थ एकवचन में मूलरूप के बाद -ए जोड़कर तथा आदरार्थ बहुवचन में -व प्रत्यय जोडकर आदिवासियों के बीच में क्रिया रूप बनते हैं।

निरादरार्थ पुल्लिग	एकवचन	बहुवचन	
	हव	हवं	(सोन के उत्तर में)
	हौंरवं	हौंरवन	(सोन के दक्षिण में)

निरादरार्थ स्त्रीलिंग	एकवचन	बहुववचन
	हये	हइउ

जहाँ तक /रह/ सपरिवर्तक के धातु-रूप का प्रश्न है, वह अलग इकाई बनाता है। इसके साथ अन्य पुरूष में जो रूप निर्मित होते हैं, उनके उदाहरण नीचे अंकित हैं।

	एकवचन	बहुवचन
पुल्लिंग	ह	हवं - हंवइ
स्त्रीलिग	ह	हईं

√बा धातु में उन्हीं प्रत्ययो को जोडकर क्रिया पद बनते हैं।

उत्तम पुरूष

पुल्लिग एव स्त्रीलिग	एकवचन	बहुवचन	
	बाई	बाईं	(सोन के उत्तर में)
	बाटी, बाड़ी	बडन	(सोन के दक्षिण में)

मध्यम पुरूष आदरार्थ

	बायं	बायं	(सोन के उत्तर)
	बाड/बडं	बाड/बडं	(सोन के दक्षिण)
स्त्रीवाची निरादरार्थ			
	बाये	बाये	(सोन के उत्तर)
	बाडू/बडू	बाडू/बडू	(सोन के दक्षिण)

अन्य पुरूष पुल्लिग	बा	बाय
स्त्रीलिंग	बाइ	बाईं

√बा धातु के साथ प्रयुक्त विभक्तियों की तालिका

	एकवचन	बहुबचन
उ० पु० पुल्लिग	–ई –ड़ी	–ई –डी
म० पु० पुल्लिंग	–य –ड	–य –डंन
अ० पु० पुल्लिग	–०	–य

	एकवचन	बहुबचन
उ० पु० स्त्रीलिग	–ई	–ई
म० पु० स्त्रीलिग	–ए –डू	–ए –डू
अ० पु० स्त्रीलिग	–आ –बडी	–ई –बड़िन

खः भूत निश्चययार्थ
(धांगर जाति)

धागर जाति भूत निश्चयार्थ क्रियाओं में √रह धातु का व्यवहार करती है। यह धातु इसी रूप में अन्य आदिवासियों तथा पूरे भोजपुरी क्षेत्र में भी प्रचलित है। केवल धागर इसके साथ अपनी विभक्तियों अथवा प्रत्ययों का व्यवहार करते हैं। क्रिया-रूप को गढ़ने में भूत निश्चयार्थ के लिये √चक विभक्ति प्रयुक्त है, जिसके बाद जुडता है, बहुबचन-बोधक प्रत्यय। इस तरह धातु के साथ काल बोधक एव वचन बोधक प्रत्ययों का अलग - अलग, लेकिन संश्लिष्ट व्यवहार करते हुये धांगर क्रियापद गढता है।

	एकवचन	बहुवचन
उ० पु०	रह - एचक- न	रह- एचक- म
	रहेचकन (मैं था)	रहेचकम (हम थे)
म० पु० (पु.)	रह- चक- य	रह-चक-य
	रहचकय (तुम थे)	रहचकय (तुम सब थे)

म० पु० (स्त्री)	रह- चक- ई	रह-चक-ई
	रहचकी (तुम थी)	रहचकी (तुम सब थी)

अन्य पु० निश्चयार्थ में /चक/ विभक्ति में प्रयुक्त /क/ का लोप दिखाई पड़ता है।

अन्य पु (पु)	रह- च- स	रह-च-र
	रहचस (वह था)	रहचर (वे थे)
(स्त्री.)	रह - च - आ	रह - च - आ
	रहचा (वह थी)	रहचा (वें थी)

(जनपद की अन्य जातियों में)

जनपद में निवास करने वाली अन्य जातिया √रह धातु के बाद क्रिया विभक्ति जोडकर भूत निश्चयार्थ रूपों का निर्माण करती हैं। अलग - अलग जातियों में भिन्न प्रत्यय लगाकर रूपों के निर्माण की प्रवृत्ति इनमें पाई जाती है।

पुल्लिग	एकवचन	बहुवचन
उ० पु०	-एचक् - न	-एचक - म
म० पु०	-चक् - य	-चक् - य
अन्य पु०	-च् - स	-च् - र

	एकवचन	बहुवचन
स्त्री० उ० पु०	-एचक् - न	-एचक - म
म० पु०	-चक् - ई	-चक् - ई
अन्य पु०	-च् - आ	-च् - आ

(अन्य आदिवासी जातियों में रूप)

अन्य पुरूष में प्रयुक्त विभक्तिया

पुल्लिंग	एकवचन	बहुवचन
	-ल	-नं
सोन से दक्षिण	-लन् -ौ	-लन् -ौ
व्युत्पन्न रूप	रहल् रहलग् हैं	रहनं रहलन रहैं

अन्य पुरूष स्त्रीलिंग क्रिया विभक्ति	एकवचन	बहुवचन
सोन से दक्षिण	-लि -लिन् -इल	-नी -लिन् -लिंन
व्युत्पन्न रूप अन्य पुरूष स्त्रीलिग	रहलि रहलिन रहिल	रहनी रहलिन रहलिन

मध्यम पुरूष- पुल्लिग विभक्तिया
(सोन के दक्षिण)
(गोड, पठारी, अगरिया)

-अलु'	-अन'
-अलु	-अलँ'
-औ	-आ

व्युत्पन्न रूप	एकवचन	बहुवचन
	रहलं'	रहनं'
	रहल	रहलँ
	रहै	रहैं

मध्यम पुरूष
स्त्रीलिग (विभक्ति)
सोन के दक्षिण

एकवचन	बहुवचन
-अले	-अले
-लिउ	-लिउ
-अलु	-अल

व्युत्पन्न रूप	एकवचन	बहुवचन
	रहले	रहले
	रहलिउ	रहलिउ
	रहलू	रहलू

उत्तम पुरूष (पुल्लिंग)
विभक्तिया (सोन केदक्षिण)

-ली	-ली
-ली	-ली
-हैं/[illegible]	-ऐ, औ

व्युत्पन्न रूप	एकवचन	बहुवचन
	रहली	रहली
	रहली	रहली
	रहौ, रहैं	रहौं

घः वर्तमान संभावनार्थ (धांगर जाति)

धागर जाति में संभावनार्थ रूपों का गठन करते हुए क्रिया में प्रारम्भ में /मं-/ का आदेश करने की प्रवृत्ति है।/चकी/रूप भूतनिश्चयार्थ की तरह बना रहता है,तथा अन्त में बचनबोधक विभक्ति जुड़ती है।

विभक्ति

		एकवचन	बहुवचन
उ० पु०		म- चक- न	मं-चक - म
म० पु०		मं-चक - म	म-चक- य
अन्य पु०	पु.	मं-च- स	मं-च - र
	स्त्री.	मं- च-आ	म-च-आ

व्युत्पन्न रूप	एकबचन	बहुबचन
उत्तम पु०	मचकन	मंचकन
	(मैं होता)	(हम होतें)
	मचकय	मचकय
	(तुम होते)	(तुम सब होते)
	मचस	मंचस
	(वह होता)	(वे होते)
	मचा	मंचा
	(वह होती)	(वे होती)

जनपद की अन्य आदिवासी जातियां

/ह धातु के बाद अंकित विभक्तियों का सयोग कर जनपद में निवास करने वाली खैरवार, बसवार आदि जातियां पदों का निर्माण करती हैं।

संभावनार्थ विभक्तियां		एकवचन	बहुवचन
	अ० पु०	–ओइ	–ओइह/ओइ
	म० पु०	–ओया	–ओया
	उ० पु०	–ओई	–ओई

व्युत्पन्न रूप	एकवचन	बहुवचन
	होइ	होंइ
	होया	होया
	होईं	होंई

घः भूत संभावनार्थ – धांगर जाति

जनपद में निवास करने वाली धांगर जाति सभावनार्थ रूप का प्रयोग तो करती है, लेकिन धातु रूप पूर्णतः भिन्न हैं। /राना/ धातु शून्य विभक्ति के साथ तीनों पुरूषों तथा दोनों ही वचनों में प्रयुक्त है।

धागर जाति में प्रचलित रूप	एकवचन	बहुवचन
उत्तम पुरूष	(एन) राना (मैं होता)	(एम) राना (हम होतें)
मध्यम पुरूष	(नीन) राना (तुम होते)	(नीम) राना (तुम सब होते)
अन्य पुरूष	(आस) राना (वह होता)	(आर) राना (वे होते)
	(आद) राना (वह होती)	(आर) राना (वे होतीं)

अन्य आदिवासी जातिया

अन्य आदिवासी जातिया √ह धातु के बाद विभक्तियों का व्यवहार करती है। क्षेत्र तथा जाति की भिन्नता के कारण विभक्तिया भी भिन्न हैं। इस कारण व्युत्पन्न रूप भी अलग - अलग हैं।

भूत संभावनार्थ

विभक्तियां (पुल्लिंग)	अन्य पुरूष	एकवचन	बहुवचन
	(सोन के उत्तर)	-ओत्	-ओतं
	(सोन के दक्षिण)	-ओइतन	-ओइतन
	(बसवार जाति)	-ओत्यं	-ओत्यं
	(कोल,गोंड,खैरवार)	-ओत्यू	-ओत्युन
		-ओत्	-ओतें

		एकवचन		बहुवचन
व्युत्पन्न रूप	(वह होता)	होत	(वे होते)	होतं
		होइतंन		होइतन
		होत्यं		होत्यं
		होत्यू		होत्यू
		होत्		होतें

अन्य पुरूष (स्त्रीलिंग)

विभक्तियां		एकवचन	बहुवचन
	(सोन के उत्तर)	-ओति	-ओतीं
	(सोन के दक्षिण)	-ओत्	-ओतिन
	(बसवार जाति)	-ओत्यू	-ओत्यु
	(कोल,गोंड़,खैरवार)	-ओही	-ओहीं

व्युत्पन्न रूप	(वह होती)	होति	(वे होती) होतीं
		होत्	होतिन
		होत्यू	होत्यू
		होत्	होहीं
मध्यम पुरूष (पुल्लिंग)			
	(सोन से उत्तर)	-ओंत	-ओत
	(सोन दक्षिण)	-ओइत	-ओइत
	(बसवार जाति)	-ओत्य	-ओत्य'
	(भूइयार)	-अस्	-अवा
	(खैरवार,कोल,गोड़,पठारी)	-आ	-वा

व्युत्पन्न रूप	एकवचन	बहुबचन
पुल्लिग	होत	होतँ
सोन से दक्षिण	होइत	होइतं'
	होत्य'	होत्यं'
	हस	हवा
	हा	हा

मध्यम पुरूष (स्त्रीलिंग)	ओति	ओतीं
विभक्तियां		
(सोन से दक्षिण)	-ओइती	-ओइतिन
(खैरवार)	-ओत्यू	-ओत्यू
(खैरवार, गोंड़)	-अस	-अस

व्युत्पन्न रूप	होति	होतीं
	होइती	होइती
	होत्यू	होत्यू
	हस्	हस

चः भविष्य निश्चयार्थ

विभक्तिया

अन्य पुरूष		
(सोन के उत्तर)	ओई	ओइहन
(खरवार, बसवार)	ओहीं	ओहीं
(गोंड)	ओई	ओइहीं

व्युत्पन्न रूप		होई	होइहं
		होई	होइहन
		होहीं	होहीं
		होई	होइहीं
मध्यम पुरूष	(सोन के उत्तर)	होब्या	होब्या
पुल्लिग	(सोन के दक्षिण)	होइब्	होइब
		होबे	होब्या
स्त्रीलिग	(सोन के उत्तर)	होबे	होब्या
	(सोन के दक्षिण)	होइब	होइब्
	(बसवार, गोंड)	होबी	सेबी
उत्तम पुरूष		होब	होब
		होइब	होइब
	(खैरवार, बसवार)	हौं	हों

जहाँ तक भविष्य निश्चयार्थ का प्रश्न है √ह/ धातु में /ओब/ प्रत्यय जोडकर सारे रूप बनते हैं।

7 2 क्रिया रचना

क- क्रिया रचना की व्याकरणिक स्थिति और धांगर जाति

यद्यपि धांगर जाति की भाषा आर्य भाषाओं से मेल नहीं खाती, फिर भी उसकी क्रिया रचना के रूप सस्कृत की तरह योगात्मक हैं, तथा कृदन्तीय रूपों का अभाव सा दिखाई पडता है। धागर संस्कृत के निकट धातुओं का प्रयोग करते हैं। जैसे - बोलने के लिये/वाचक/ लजाने के लिये /लजेरदस/ आदि। ये प्रत्यय, जो पुरूष अथवा वचन का बोध करने के लिये संज्ञा तथा सर्वनामों में प्रयुक्त हैं, उन्हीं का व्यवहार धातुओं के बाद करके धांगर क्रिया - पदों का गठन करते हैं।

7.2 क-1

वर्तमान कालिक क्रिया रचना

धांगर जाति √मोक्ख (खाना), √एसस (तोड़ना), √बाद (कहना), √बचरे (आना), √तुदा (उड़ेलना), √बिता (भूनना), √तुरिया (लपेटना), √चइया (भीगना), √चाखा (बोना), √चींव (पोछना), जैसी धातुओं के बाद प्रत्ययों से काल रचना करती है।

	एकवचन	बहुवचन
अन्य पु०	आस बादस (वह बोलता है)	आर बादर (वे बोलते हैं)
म० पु०	नीन बाचकय (तुम बोलते हो)	नीम वाचकय (तुम सब बोलते हो)
उ० पु०	एन वाचकन (मैं बोलता हूँ)	एम वाचकम (हम बोलते हैं)

इस तरह यह स्पष्ट है कि √-बाच धातु के बाद अन्य पुरुष एकवचन में /-स/ तथा बहुवचन में /-र/ विभक्ति प्रयुक्त होती है। मध्यम पुरूष में /-कय/ विभक्ति का व्यवहार एकवचन तथा बहुवचन दोनों में होता है। अन्य पु० एकवचन में /-न/ तथा बहुवचन में /-म/ विभक्ति का प्रयोग करके वर्तमान कालिक रूप बनते हैं। इस आदिवासी जाति के लोग प्रत्येक धातु में वर्तमान-कालिक क्रिया रचना में इन्हीं विभक्तियों का प्रयोग करते हैं, तथा पद निर्मित होते हैं।

7 2 क-2

भूत कालिक क्रिया-रचना

भूतकाल में धातुए ज्यों की त्यों हैं तथा पुरूष एव वचन बोधक प्रत्यय भी समान हैं। केवल /एरा/ शब्द का प्रयोग धातु के पहले होता हैं। /एरा/ था के अर्थ में है। शेष रूप वर्तमान कालिक क्रियाओं की तरह हैं। जिनसे पुरूष एवं वचन का परिचय मिलता है। जहाँ तक स्त्रीलिंग रूपों का प्रश्न है, उनके लिये सर्वनाम भी अलग हैं, साथ ही क्रिया विभक्तियाँ भी भिन्न हैं। भूतकालिक क्रिया रचना में कुछ धातुओं के पहले /-क/ विभक्ति जोडने की भी प्रवृत्ति है।

जैसे-

वह बोलता है।	आस बाचस।
वह बोलता था।	आस एरा बाचकस।

√वाच धातु में जुडने वाला /-स/ प्रत्यय पुरूष एवं लिंग बताता है, जबकि /-क/ उसे भूतकालिक रूप देता है।

भूतकाल	एकवचन	बहुवचन
अन्य पु०	आस एरा ओंदस (वह पीता था)	आर एरा ओंदर (वे पीते थे)
मध्यम पु०	नीन एरा ओंदकय (तुम पीते थे)	नीम एरा ओंदकय (तुम सब पीते थे)
उ० पु०	एन एरा ओंदकन (मैं पीता था)	एम एरा ओंदकम (हम पीते थे)

7 2 क-3

भविष्य काल

धांगर जाति में धातुओं की लंबी संख्या है। जैसे -

√चूतद	(सोना)	√लागि	(देखना)
√मोक्खद	(खाना)	√केरका	(जाना)
√एसद	(तोड़ना)	√रहच	(रहना)
√नाद	(कहना)	√चाख	(बोना)
√बचरे	(आना)	√ओंद	(पीना)
√चोंच	(उठना)	√बाच	(बोलना)
√चोंख	(रोना)	√चइया	(भींगना)
√मोक्ख	(खाना)	√बिता	(भूनना)
√लजेर	(लजाना)	√तुंदा	(उडेलना) आदि
√लवा	(मारना)		

इन धातुओं के बाद /-ओ/ प्रत्यय जोडकर भविष्यकाल बनता है। जहाँ तक पुरूष एवं वचन का सबध है,उसके लिये काल बोधक प्रत्यय /-ओ/ के बाद उन्हीं प्रत्ययों का व्यवहार होता है, जो वर्तमान काल में प्रयुक्त होते हैं।

	एकवचन	बहुवचन
	काल बोधक प्रत्यय/बचन बोधक प्रत्यय	काल बोधक प्रत्यय/बचन बोधक
उ० पु०	-ओ/न	-ओ/म
म० पु०	-ओ/कय	-ओ/कय
अन्य पु०	-ओ/स	-ओ/र

व्युत्पन्न रूप

	एकवचन	बहुवचन
उ० पु०	ओंदोन (खाऊंगा)	ओंदोम (खायेगें)
म० पु०	ओंदोकय (खाओगे)	ओंदोकय (खाओगे)
अन्य पु०	ओदोस (खायेगा)	ओंदोर (खायेगें)

72 ख-

जनपद के अन्य आदिवासी तथा उनकी क्रिया-रचना

आधुनिक भारतीय आर्यभाषओं की ही भांति भोजपुरी तथा बघेली बोलने वाले धांगर से भिन्न आदिवासी क्रिया-रचना कृदन्तों का व्यवहार करते हुये क्रिया रूप बनाते हैं, तथा क्रिदन्तीय रूपों के बाद सहायक क्रिया/मूल क्रिया का व्यवहार करते हैं।

72 ख- 1

वर्तमान कालिक क्रिया

वर्तमान काल में क्रिया के बाद-अत् प्रत्यय जुड़ता है।

धातु	प्रत्यय	व्युत्पन्न रूप
√कर्	-अत्	करत
√उठ	"	उठत
√बैठे	"	बैठत/बइठत
√जर्	"	जरत

72 ख- 2

भूतकालिक क्रिया-रचना

मूल धातु में /-अल/ प्रत्यय जोडकर भूतकालिक कृदन्त बनते हैं।

धातु	प्रत्यय	व्युत्पन्न रूप
√कर	-अल	करल
√उठ	"	उठल
√बैठ	"	बइठल
√जर	"	जरल

जहाँ तक स्त्रीवाची रूपों के निर्माण का प्रश्न है, व्युत्पन्न रूपों के बाद /इ/ प्रत्यय जोडकर स्त्रीवाची रूप बनते हैं।

वर्तमान कालिक कृदन्त	करति
	जरति
भूतकालिक कृदन्त	करलि
	जरलि

7 2 ग-

क्रियार्थक संज्ञा

मूल धातु के बाद /-ब/ प्रत्यय जोड़कर जनपद के आदिवासी क्रियार्थक संज्ञायें बनाते हैं।

धातु	प्रत्यय	व्युत्पन्न रूप
√चल	-ब	चलब
√उठ	"	उठब
√बैठ	"	बइठब
√जर	"	जरब

जहाँ तक स्त्रीवाची सज्ञाओं का प्रश्न है, व्युत्पन्न पुल्लिग रूप के बाद /-ई/ प्रत्यय जोड़कर रूप बनते हैं।

जैसे-

धातु	व्युत्पन्न रूप
√रो	रोइबि
√जा	जाइबि

सोन के उत्तर के आदिवासी धातु रूप में -अन् प्रत्यय जोड़कर भी क्रियार्थक संज्ञायें बनाते हैं।

धातु	प्रत्यय	व्युत्पन्न रूप
√रो	-अन	रोअन
√पीट	"	पीटन
√माग	"	मांगन

7.3- क्रिया-रूपतालिका और काल-रचना

साधारण काल (अथवा मूलकाल)

काल-रचना की इस प्रक्रिया में क्रिया का केवल एक ही रूप प्रस्तुत होता है और वही समापिका क्रिया होती है। इस रूप का निर्माण धातुओं के बाद क्रिया विभक्तिया जोड़कर होता है। भाषा के जिन रूपों में क्रिदन्तों के प्रयोग के साथ क्रिया के रूप गठन की प्रवृत्ति विद्यमान रहती है, उसमें क्रिदन्तों के बाद सहायक क्रियायें आती हैं, तथा विभक्तियों का प्रयोग सहायक क्रिया के बाद ही होता हैं। बोलियों में सामान्यतया सहायक क्रियायें ही समापिका क्रियायें होती हैं तथा मूल काल का निर्माण इन्हीं द्वारा सभव हो पाता है।

सामान्य वर्तमान काल

धांगर जाति

	एकवचन	बहुवचन
उ० पु०	एन रास (मैं हूँ)	एम रास (हम हैं)
म० पु०	नीन रास (तुम हो)	नीम रास (तुम सब हो)
अन्य पु०	आस रास (वह है)	आर्ई रास (वे सब हैं)

भूत सामान्य, भविष्य संभावनार्थ, भविष्य सामान्य एव भविष्य विधेयार्थ में मूल-काल के रूप प्राप्त हैं तथा मूल धातु में विभक्तियों का संयोग करके उनके रूप निर्मित होते हैं। भूत सामान्य में नीचे अंकित विभक्तियां जुडकर काल रचना करती हैं।

जैसे √रह धातु (था) के अर्थ में प्रयुक्त है। इसके लिये काल-रचना-प्रक्रिया में नीचे अंकित विभक्तियां प्रयुक्त होती है।

	एकवचन	बहुवचन
उ० पु०	-चकन	-चकम
म० पु०	-चकय	-चकय
अन्य पु०	-चस	-चर

व्युत्पन्न रूप

	एकवचन	बहुवचन
उ० पु०	रहचकन (मैं था)	रहचकम (हम थे)
म० पु०	रहचकय (तुम थे)	रहचकम (तुम लोग थे)
अन्य पु०	रहचस (वह था)	रचहर (वे थे)

भविष्य निश्चयार्थ

	एकवचन	बहुवचन
उ० पु०	एन मनोन (मैं हूगां)	एम मनोम (हम होगें)
म० पु०	नीन मनोय (तुम होगे)	नीम मनोय (तुम सब होगें)
अन्य पु०	आस मनोस (वह होगा)	आर मनोस (वे होगें)

भूत निश्चयार्थ

भूत निश्चयार्थ के रूप निर्माण में धांगर जाति धातु के बाद कालबोधक /   / प्रत्यय प्रयुक्त करती है। जहाँ तक बचनबोधक अथवा पुरूषबोधक प्रत्ययों का प्रश्न है वे वहीं है जो अन्य कालों में प्रयुक्त होत हैं। जैसे- धातु काद (जाना) मोक्ख (खाना) अपने भूतकालिक अर्थ में /केर/ तथा /मंड/ आदेश के साथ प्रयुक्त होती है और इसके बाद वचन एवं पुरूषबोधक प्रत्यय जुड़कर रूप व्युत्पन्न होता है।

	एकवचन	बहुबचन
उ० पु०	एन केरकन (मैं गया)	एम केरकम (हम गये)
म० पु०	नीन केरकय (तुम गये)	नीम केरकय (तुम सब गये)
अन्य पु०	आस केरस (वह गया)	आर केरर (वे गये)

भूत संभावनार्थ

धागर जाति में वर्तमान समावनार्थ के लिये प्रत्येक पुरूष में केवल एक ही रूप प्रयुक्त है,वह है /राना/ जिसका अर्थ है/होता/। पुल्लिंग एवं स्त्रीलिग दोनों में ही यह रूप समान रूप प्रयुक्त है।

	एकवचन	बहुबचन
उ० पु०	एन राना (मैं होता)	एम राना (हम होते)
म० पु०	नीन राना (तुम होते)	नीम राना (तुम सब होते)
अन्य पु०	आस राना (वह होता)	आर राना (वे होते)

भविष्य निश्चायार्थ

धागर जाति भविष्य निश्चयार्थ रूप का निर्माण धातु के बाद /-ओ/ प्रत्यय जोडकर करती है। /-ओ/ कालबोधक प्रत्यय है। इस प्रत्यय के बाद लिंग एव बचन बोधक प्रत्यय जुड़ते है तथा ये प्रत्यय वहीं हैं जो अन्य सदर्भो में प्रयुक्त होते हैं।

जैसे- धातु (मोक्ख) + कालबोधक प्रत्यय - ओ + बचन बोधक प्रत्यय - स

= निर्मित रूप मोक्खोस

वह खाता है आस मोक्खस

वह खायेगा आस मोक्खोस

	एकवचन	बहुवचन
उ० पु०	एन मोक्खोन (मैं खाउगा)	एम मोक्खोम (हम खायेगें)
म० पु०	नीन मोक्खोय (तुम खाओगें)	नीम मोक्खोय (तुम सब खाओगें)
अन्य पु०	आस मोक्खोस (वह खायेगा)	आर मोक्खोर (वे खायेगें)

जनपद में निवास करने वाली अन्य आदिवासी जातियों की भाषा में काल रचना-प्रक्रिया

जनपद में निवास करने वाली अन्य आदिवासी जातियाँ साधारणकाल या मूलकाल का रूप गठित करते हुए सहायक क्रियाओं का व्यवहार नहीं करतीं। सहायक क्रियायें यदि समापिका किया की तरह प्रयुक्त दिखती हैं,तो इनका व्यवहार मूल काल में ही होता है।

जैसे-

वर्तमान सामान्य

	एकवचन	बहुवचन
उ० पु०	हई	हई
म० पु०	हव	हव
अन्य पु०	हं	हवें

वर्तमान निश्चयार्थ

वर्तमान निश्चयार्थ में केवल निषेध मूलक स्थिति में मूलकाल के रूप उपलब्ध हैं। इसके लिए नीचे अंकित विभक्तियां धातु के बाद प्रयुक्त होती हैं। यहाँ ध्यान देने की बात है कि धांगर जाति में पुरूष एवं बचन बोधक प्रत्यय धातुओं के बाद अलग-अलग, एक साथ प्रयुक्त होता है, जबकि अन्य जातियों में धातु के बाद प्रयुक्त होने वाली विभक्ति में पुरूष एव वचन बोधक स्थिति सुरक्षित है।

वर्तमान निश्चयार्थ में प्रयुक्त विभक्ति

पुल्लिंग	एकवचन	बहुवचन
उ० पु०	-इति	-इति
म० पु०	-तं	-त
अन्य पु०	-इ/त्	-त
स्त्रीलिग	एकवचन	बहुवचन
उ० पु०	-इति	-इति
म० पु०	-ते	-तिउ
अन्य पु०	-इ/ति्	-तीं

व्युत्पन्न रूप

पुल्लिग	एकवचन	बहुवचन
उ० पु०	-खाइति	-खाइति
म० पु०	-खातं	-खात
अन्य पु०	-खाइ/खात्	-खात
स्त्रीलिग	एकवचन	बहुवचन
उ० पु०	-खाइति	-खाइति
म० पु०	-खाते	-खातिउ
अन्य पु०	-खाइ/खाति्	-खातीं

वर्तमान आज्ञार्थ

वर्तमान आज्ञार्थ रूपों का निर्माण करते समय सोन नदी के उत्तर तथा दक्षिण दोनों ही जगह निवास करने वाली अन्य आदिवासी जातिया पुरूष भेद के साथ प्रत्ययों का व्यवहार करती हैं।

	एकवचन	बहुवचन
उ० पु०	-ईं	-ईं
म० पु०	-उ/अ	-अ
अन्य पु०	-उ	-उँ

व्युत्पन्न रूप

	धातु	एकवचन	बहुवचन
उ० पु०	√उठ	उठीं	समान रूप से प्रयुक्त
	√चल	चलीं	"
	√खा	खाईं	"

मध्यम पुरूष- म० पु० में आदरार्थ एव निरादरार्थ दोनों ही रूप प्रचलित हैं। इस कारण दो विभक्तिया सदर्भों के अनुरूप अलग - अलग प्रयुक्त होती हैं। निरादरार्थ रूपों में /उ/ और /आ/ दो विभक्तियाँ एकबचन में प्रचलित हैं।

धातु	एकवचन	बहुवचन
√चल	चलु	चल
√खा	खो	खा
√सूत	सूतु	सूत
√जा	जो	जा

म० पु० में आदरार्थ प्रयोग में भिन्नता है। सोन के उत्तर तथा दक्षिण इस प्रयोग की भिन्नता के कारण ही क्रिया-रूप अलग हैं। जहाँ सोन के उत्तर ए० व० तथा बहुवचन दोनों में ही /ई/ विभक्ति प्रयुक्त होती है,वहीं सोन के दक्षिण /उ/ और /उन/ रूप धातु के बाद जुड कर क्रिया-रूप निप्पन्न होता है।

सोन के उत्तर

		व्युत्पन्न रूप	
आदरार्थ	म० पु० धातु	एकवचन	बहुवचन
	√चल	चली	समान रूप
	√खा	खाई	"
	√उठ	उठी	"
	√कर	करी	"

सोन के दक्षिण

एकवचन	बहुवचन
-उठू	उठुनु
-चलूं	चलुनु
-करू	करुनु
-खाउ	खाउ

अन्य पुरूष

अन्य पुरूष के रूप एकवचन में /उ/ तथा बहुवचन में /उं/ प्रत्यय बनते हैं।

एकवचन	बहुवचन
चलउ	चलउं
खाउ	खाउं
सुतुउ	सूतउं
करउ	करउं

भूत निश्चायार्थ

केन्द्रीय बोली में धातु के बाद /-ल/ जोड़ने की प्रवृत्ति भोजपुरी प्रभाव के कारण सामान्य है। काल-रचना प्रक्रिया में भूत निश्चयार्थ के लिये विभक्तियाँ /ल/ के बाद ही जुड़ती हैं।

जैसे-

(उ० पु०) धातु	एकवचन	बहुवचन
√खा	खइली	खइली
√चल	चलली	चलली

	एकवचन	बहुवचन
म० पु० (अनादरार्थ)	गइले	गयल
सोन के दक्षिण	गइल	गइल
आदरार्थ	गयल	गयन
सोन के दक्षिण	गइल	गइन

सोन के उत्तरी क्षेत्र में एकवचन में /एसि/ तथा बहुवचन में /एनि/ जोडकर भी रूप बनते हैं। इन प्रत्ययों का व्यवहार सामान्यतया सकर्मक क्रियाओं के बाद ही होता है।

व्युत्पन्न रूप

खइलेस	खइलेन
पियलेस	पियलेन

सोन के दक्षिण क्षेत्र में जहाँ बघेली का प्रभाव है वहाँ /खाइस/ और /खायेसि/ रूप भी प्रचलित मिलता है।

भूत संभावनार्थ

जनपद में निवास करने वाली अन्य आदिवासी जातियाँ भूत सभावनार्थ रूपों का गठन वर्तमान-कालिक कृदन्त की तरह करती हैं। इसके लिये धातु में /-इति/ प्रत्यय का प्रयोग सोन के उत्तर तथा /-अति/ प्रत्यय का प्रयोग विभक्ति की तरह सोन के दक्षिण में आदिवासी करते हैं। सोन के उत्तर ए० ब० तथा बहुबचन रूपों में अन्तर नहीं है। जबकि सोन के दक्षिण विभक्ति का अन्तिमस्वर

अनुनासिक रूप में उच्चरित होता है।

उ० पु०	एकवचन	बहुवचन
सोन के उत्तर	देखिति	देखिति
	खाइति	खाइति
सोन के दक्षिण	देखती	देखतीं
	खइती	खइतीं

म० पु० में चूंकि सर्वनामों में आदरार्थ एवं अनादरार्थ दोनों ही रूप प्रचलित हैं, इसलिये क्रिया-पदों के निष्पन्न रूप इन भिन्नताओं के कारण भी अलग मिलते हैं तथा सोन के उत्तरी क्षेत्र तथा दक्षिणी क्षेत्र में रूपगत भिन्नता विद्यमान है।

	एकवचन	बहुवचन
म० पु०		
सोन के उत्तर (अनादरार्थ)	देखते	देखते

(आदरार्थ)	देखत	देखत
सोन के दक्षिण	देखत	देखत

इन रूपों में सोन के दक्षिण स्त्रीवाची रूपों में भी भिन्नतायें हैं।

देखते	देखते

सोन के दक्षिण निवास करने वाले आदिवासियों में देखतें और देखत्ये रूप भी प्राप्त हैं।

अन्य पुरूष-

अन्य पु० के रूप भी सोन के उत्तर तथा दक्षिण अलग - अलग हैं।

	एकवचन	बहुवचन
सोन के उत्तर	देखत	देखत
सोन के दक्षिण	देखतिस	देखतिन
(स्त्रीवाची)	देखत	देखतिन

भविष्य निश्चयार्थ

भविष्य निश्चायार्थ रूपों का निर्माण सोन के उत्तर में धातु के बाद /-ब/ प्रत्यय जुड़कर तथा दक्षिण में /-इब/ प्रत्यय जोड़कर उत्तम पुरूष में होता है।

सोन के उत्तर

	धातु	एकवचन	बहुवचन
	√जा	जाब	जाब
	√खा	खाब	खाब
	√उठ	उठब	उठब
सोन के दक्षिण	√जा	जाइब	समान
	√खा	खाइब	"
	√उठ	उठिब	"

सोन के दक्षिण निवास करने वाले गोंड एकवचन और बहुवचन दोनों में ही /जाब्यउ/ रूप का प्रयोग करते हैं।

मध्यम पुरूष - सोन के उत्तरी अचल में मध्यम पुरूष में अनादरार्थ तथा स्त्रीवाची संदर्भ के अन्तर्गत क्रिया रूप भिन्न हैं।

	एकवचन	बहुवचन
	जाबे	जाब्यिउ/जाब्या
सामान्य	जाब्या	जाब्या
सोन के दक्षिण	जाबू	जाबू

सोन के दक्षिण रहने वाले खैरवार, बसवार /जाबी/रूप का प्रयोग करते हैं, जबकि सुदूर दक्षिण /जइब/एवं /जइबं/ रूप क्रमशः एकवचन एवं बहुवचन में प्रयुक्त हैं

एकवचन	बहुवचन
जइब	जइबं

7.4 सयुक्त काल

सयुक्त काल में दो क्रियायें एक साथ आती हैं। सहायक क्रिया के पूर्व क्रिदन्तीय क्रियाओं का प्रयोग करके क्रिया रचना निष्पन्न करने की प्रवृत्ति आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं में मिलती है। जिन सहायक क्रियाओं के पूर्व क्रिदन्तीय प्रयोग लगाने की प्रवृत्ति है, उनमें या तो वर्तमान-कालिक क्रिदन्त पहले प्रयुक्त होते हैं, या तो भूतकालिक क्रिदन्त।

संयुक्त काल तथा धांगर जाति की काल रचना प्रकिया:

यह विचारणीय है कि धागर जाति की क्रिया रचना अभी प्राचीन भाषाओं जैसी है। इस कारण क्रिया विभक्तियां धातु से जुड़कर ही प्रयुक्त होती हैं, यानी आधुनिक भारतीय आर्य-भाषाओं की तरह धातु के बाद काल व वचन बोधक विभक्ति के बीच युक्त सक्रमण है। आधुनिक आर्यभाषाओं की तरह मुक्त संक्रमण नहीं। इस कारण धांगर जाति वर्तमान कालिक अथवा भूतकालिक क्रिदन्तों के व्यवहार द्वारा क्रिया रचना नहीं करती।

सयुक्त काल तथा जनपद की अन्य आदिवासी जातिया:

सोनभद्र जनपद में निवास करने वाली धागर जाति से भिन्न जातियां जैसे-बसवार, खरवार, गोंड, पनिका तथा कोल जातिया जो धीरे-धीरे अपनी मूल भाषा भूल चुकी हैं, आर्य भाषाओं के प्रचलित रूप के अन्तर्गत भोजपुरी तथा बघेली क्रियाओं का व्यवहार करती हैं। इन जातियों में उच्चारणगत भिन्नतायें मिलती हैं, जबकि क्रियारूप वे हीं है जो सोन के दक्षिण व उत्तर आज व्यवहृत हो रहे हैं। वर्तमान प्रयोगों में कृदन्तों का व्यवहार करते हुए क्रिया रचना की प्रवृत्ति इन आदिवासियों में जनपद में अन्य सवर्ण जातिया की ही तरह विकसित हो गई हैं। वर्तमान काल में /बा/, /ह/ सहायक क्रियाओं के पूर्व तथा भूतकाल में √रह धातु के बाद /-ल/ प्रत्यय जुडकर व्युत्पन्न /रहल/ के पूर्व वर्तमान कालिक कृदन्त अथवा भूतकालिक कृदन्त का प्रयोग करते हुये क्रिया रचना निष्पन्न होती है।

7 4 (क)
अपूर्ण वर्तमान निश्चयार्थ

यह काल रचना पुल्लिंग एव स्त्रीलिग में अलग-अलग है। मूल सहायक क्रिया /ह/ के बाद वचन बोधक प्रत्यय जोड़कर तथा स्त्रीलिग में स्त्रीवाची प्रत्यय जोड़कर वर्तमान निश्चयार्थ के रूप गठित होते हैं। यह ध्यान देने की बात है कि पुल्लिंग प्रयोगों में कृदन्त अपने मूल रूप में प्रयुक्त होते हैं, जबकि स्त्रीलिंग में कृदन्त में भी स्त्रीवाची प्रत्यय /इ/ जोड़ने के बाद ही सहायक क्रिया प्रयुक्त होती है।

	एकवचन	बहुवचन
अन्य पुरूष (पु०)	जात ह	जात हवं
	गिरत जात ह	गिरत जात हवं
	बइठत ह	बइठत हवं
	करत ह	करत हवं

झटके से बोलते समय सहायक समापिका क्रिया /ह/ के अन्त में आने के कारण क्रिदन्त में प्रयुक्त होने वाला अल्पप्राण व्यजन महाप्राण रूप में ही उच्चरित होकर सामान्य उच्चारण में व्यवहृत होता है।

जैसे- खाथ।

जाथ।

	एकवचन	बहुवचन
अन्य पुरूष (स्त्री०)	जात ह	जात हईं
	गिरति जाति ह	गिरति जाति हईं
	बइठति ह	बइठति हईं
	करति ह	करति हईं
	खाति ह	खाति हईं

सम्पूर्ण प्रक्रिया में धातु के बाद /त/ प्रत्यय का व्यवहार अपूर्णकाल के लिये हुआ है।

	एकवचन	बहुवचन
म० पु० (पु०)	खात हये	खात हव
(सोन के उत्तर)		
(सोन के दक्षिण)	खात बड़ें	खात बड़ें
(खैरवार, बसवार)	खाथस।	खाथस
(गौंड)	खातहौस (खाथौस)	खातहौस

भूतकालिक कृदन्त एवं वर्तमानकालिक क्रिया के योग से पूर्ण वर्तमान निश्चयार्थ का निर्माण हुआ करता है।

उ० पु० (पु०)	एकवचन	बहुवचन
(सोन के उत्तर)	हम खात हई। (खाथई)	हम्मन खात हई
(सोन के दक्षिण)	खात हिय (खाथिय)	खात हिय

(ख) भूत निश्चयार्थ

भूत निश्चययार्थ रूप के निर्माण में धातु के बाद /ल/ प्रत्यय जोडकर रूप निर्माण की प्रक्रिया सोन के उत्तर तथा दक्षिण में अन्य आदिवासी जातियों में प्रचलित है। भूतकालीन सहायक समापिका क्रिया /रह/ के बाद भी /ल/ जोड़ते हैं। /ल/ में एकवचन का अर्थ भी निहित है। बहुवचन में /ल/ के स्थान पर /न/ का प्रयोग होता है। स्त्रीवाची रूप का निर्माण करते समय कालबोधक प्रत्यय के बाद /इ/ प्रत्यय का व्यवहार लिंग निर्धारण के लिये होता है।

	एकवचन	बहुवचन
अन्य पु० (पु०)	गयल रहल	गयल रहनं
(सोन के उत्तर)(स्त्री)	गइल रहलि	गइलि रहनी
(सोन के दक्षिण)	गइन रहस	गइल रहनं

		एकवचन	बहुवचन
म० पु०	(पु०)	गयल रहलं	गयल रहल
	(स्त्री)	गइल रहले/रहलिउ	गयल रहले/रहलिउ
उ० पु०		गयल रहली	गयल रहली

भूतकालिक कृदन्त एवं सहायक किया

अन्य आदिवासियों में /ह/ अथवा /बा/ सहायक क्रिया के पूर्व भूतकालिक कृदन्त जोड़कर संयुक्त काल का निर्माण होता है।

		एकवचन	बहुवचन
अन्य पु०	(पु०)	गयल ह	गयल हव
	(स्त्री)	उठल ह	उठल हवं
म० पु०		सूतल हव	सूतल हव
(स्त्री)		सूतल हये	सूतल हयें
उ० पु०		गयल हई	गयल हई

भविप्य निश्चयार्थ

भूतकालिक कृदन्त के साथ सहायक क्रिया जोडकर यह रूप निर्मित होता है।

भूत निश्चयार्थ (अपूर्ण)

वर्तमान कालिक कृदन्त एव सहायक क्रिया के योग द्वारा भूत निश्चययार्थ विभिक्तिया को जोड़कर इस रूप की प्राप्ति होती है।

वर्तमान निश्चयार्थ (अपूर्ण)

वर्तमान कालिक कृदन्त एवं सहायक क्रिया का योग करके वर्तमान निश्चययार्थ विभिक्तियां का संयोजन कर यह रूप गठित होता है।

	एकवचन	बहुवचन
उ० पु०	जाथई	जाथई
(खैरवार, बसवार)	जाथों	जाथौं
म० पु०	जाथव	जाथव
सोन के दक्षिण	जाथय	जाथय
(खैरवार, बसवार)	जाथौस	जाथौस
अ० पु०	जातथ	जातइथ
(खैरवार,बसवार)	जाथस	जाथन

भविप्य कालिक कृदन्त तथा सहायक किया

सहायक क्रिया के पूर्व भविप्य कालिक कृदन्त को जोड़कर भविप्य सभावनार्थ रूप बनते हैं। धातु के बाद /ए/ प्रत्यय भविप्यकालिक रूप बताता है।

	एकवचन	बहुवचन
उ० पु०	जाये के होई	जाये के होई
म० पु०	"	"
अन्य० पु०	"	"

7 5

प्रेरणार्थक किया

वाक्य रचना में जहाँ कर्ता क्रिया संपादित करने की प्रेरणा देता है, उसे प्रेरणार्थक क्रिया कहते हैं। मूल धातु में /वउ/ प्रत्यय जोड़कर प्रेरणार्थक रूप ये जातियां बनाती हैं।

सामान्य क्रिया	खइलेसि
प्रेरणार्थक क्रिया	खियवलेस

अध्याय 8

क्रिया विशेषण

भाषा गठन में प्रचलित वे रूप जो विशेषण अथवा क्रिया पदों के पूर्व आकर भाषिक अर्थ को प्रतिबंधित करते हैं, उन्हें क्रिया विशेषण कहते हैं। इन रूपों का व्यवहार वाक्य में बिना किसी ध्वन्यात्मक परिवर्तन के होता है। अर्थ के अनुसार क्रिया विशेषणों को चार वर्गों में बांटा जा सकता है।

१. काल वाचक

२. स्थान वाचक

३. परिमाण वाचक

४. रीति वाचक

8.1 काल वाचक क्रिया विशेषण

अन्य आदिवासी जातियां

आजु
कालि
परऊँ
तब
तबझे
सबेरे
अब
अबझे
फेर/फुनि
पाछे
अब
एकदायें
कइउबेरी
हरदायें

धांगर जाति

इन्ना	-	आज
चेरो	-	कल
पैरी	-	सुबह
माखा	-	रात
होरबरे	-	परसों
अक्कून	-	अव
कामरी	-	कब

8.2 स्थानवाचक किया विशेषण

अन्य आदिवासी जातियां

इहा
उहा
जहा
कहाँ
आगे/आगर
पाछु/पाइ (सोन के दक्षिण)
ऊपर/उपरे
खाले
खाली
बस
अउर

धांगर जाति

मुंध	-	आगे
खोखा	-	पीछे
मैया	-	ऊपर
किया	-	नीचे
बीच्चै	-	बीच में
इसन	-	यहाँ
अइया	-	वहाँ
इतरा	-	इधर
उतरा	-	उधर

8.3 परिमाणवाचक किया विशेषण

अन्य आदवासी जातिया

अधिक
कम
एतना
ओतना
जेतना/जेतरा (सोन के दक्षिण)
केतना/केतरा
बराबर

धांगर जाति

इबग्गे	-	इतना
उबग्गे	-	उतना
काबग्गे	-	कितना
जा बग्गे	-	जितना
सब	-	भेरमर

8.4 रीतिवाचक क्रिया विशेषण

अन्य आदिवासी जातिया

अइसे
जइसे
तइसे
धीरे
एकमेक
उल्टा
बिल्कुल
सही

धांगर जाति

एन्ने	-	ऐसा
नेखा	-	जैसा
अन्ने	-	वैसा
कन्ने	-	कैसा

8.5 नकारात्मक प्रत्यय

अन्य जातियां- न, ना, जीन, मति

धांगर जाति- मा

8.6 समुच्चय बोधक

पद रचना करते समय एक पद से दूसरे पद को जोडने के लिए इनका व्यवहार होता है। इनकी कई श्रेणिया हैं-

संयोजक

अन्य जातियां- अउर, अ, पुनि

धांगर जाति- अउर,

विभाजक-

अन्य जातियां- के

धांगर जाति- गे,

विरोधक-

अन्य जातियां- पै, पर, बाकी

धागर जाति- नू

8.7 विस्मयादि बोधक

पूरे जनपद में विस्मयादि बोधकों की सख्या सीमित है। हाइं, मइया रे, बाप रे, धन्नि, अग्गे जैसे शब्द यहाँ विस्मय के अर्थ में प्रयुक्त होते हैं।

------ -- ----------------------

अध्याय 9

प्रत्यय

शब्द-रचना अथवा पद-रचना प्रक्रिया में प्रातिपदिक महत्वपूर्ण इकाई होते हैं तथा इन इकाइयों द्वारा शब्दकोशीय अर्थ पूर्णतया प्रकट होता है, लेकिन प्रातिपदिक प्रत्ययों के बिना पद नहीं बना पाते तथा वाक्य में प्रयुक्त होने की क्षमता इनमें नहीं रहती। इस तरह शब्द का वह अंश जो स्वतंत्र रूप में अर्थ व्यक्त करने में सक्षम नहीं होता तथा जो मूल प्रकृति, व्युत्पन्न प्रकृति तथा प्रकृति के साथ जुड़कर अर्थवान होता है, उसे प्रत्यय कहा गया है। प्रसिद्ध भाषा शास्त्री के. एल. पाइक प्रत्यय की परिभाषा देते हुये लिखते हैं- " प्रत्यय वह पदग्राम है जो ध्वन्यात्मक एवं व्याकरणिक रूप से उस पदग्राम पर निर्भर रहता है जिससे वह जुडता है। वह पदग्राम तथा पदग्रामों के समूह जिस पर वह आश्रित रहता है, के प्रत्ययार्थ को परिवर्तित करता है। " 1 अपनी अर्थ-बोधकता के आधार पर इन प्रत्ययों की दो श्रेणिया हो सकती है-

क- व्युत्पादक प्रत्यय
ख- व्याकरणिक प्रत्यय

व्युत्पादक प्रत्यय प्रातिपदिकों या धातु के पहले या बाद में जुड़कर एक नई प्रकृति निष्पन्न करते हैं। इनकी तुलना में व्याकरणिक-प्रत्यय प्रातिपदिकों या धातुओं के बाद आकर संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण तथा क्रियापद बनाते हैं। ये प्रत्यय कहाँ से जुड़ रहे हैं, इनका भी महत्व है। व्युत्पादक प्रत्यय नये शब्द बनाते हैं तथा इनका प्रयोग शब्द के पूर्व अथवा बाद में होता है। व्याकरणिक प्रत्ययों को सदैव विभक्ति कहा गया है। अपने प्रसिद्ध ग्रंथ ' हिन्दी प्रत्यय विचार में डा० मुरारी लाल उप्रेती विभक्ति एव परसर्ग का भी अन्तर स्पष्ट करतें है। उनका मानना है- " विभक्ति एवं परसर्गों में सामान्य अन्तर इतना ही है कि दोनों धातु तथा प्रातिपदिकों के पश्चात ही प्रयुक्त होतें हैं। विभक्तियां पदों का निर्माण करती है जबकि परसर्गों का प्रयोग सदैव पदों के बाद होता है।"

सोनभद्र जनपद में निवास करने-वाली आदिवासी जातियों की पद संरचना प्रक्रिया पर यदि गभीरता से विचार किया जाय तो यह स्पष्ट है कि वक्ताओं के सामाजिक स्तर तथा जनसंपर्क के प्रभाव के कारण शब्द प्रयोगों की जो भी स्थिति बनती है, उपसर्गों अथवा प्रत्ययों की भिन्नतायें भी उन्हीं के अनुरूप हैं। जहाँ तक व्याकरणिक प्रत्ययों का प्रश्न है, विभक्तियाँ भाषा के गठन की एक अनिवार्य प्रक्रिया हैं। इस तरह संरचना में चाहे संज्ञा पद बन रहे हों,या सर्वनाम या विशेषण पद अथवा क्रिया-पद, विभक्तियां पद निर्माण की अपरिहार्य आवश्यकता हैं। यह कई बार कहा जा चुका है कि जनपद में निवास करने-वाले आदिवासियों में धांगर जाति की भाषा पूर्णतः योगात्मक है, तथा संज्ञा पद, सर्वनाम पद, विशेषण पद अथवा क्रिया पद का निर्माण करते समय यह जाति जिन विभक्तियों का व्यवहार करती है, ऐसे आबद्ध रूप संज्ञा, सर्वनाम तथा विशेषण में समान हैं तथा इन विभक्तियों की

---

1 आउट लाइन आफ लिग्विस्टिक एनालिसिस - के. एल. पाइक, पेज - ५४

व्याख्या यथास्थान की जा चुकी है। काल भेद के अनुसार धांगर जाति के लोग जिन क्रिया विभक्तियों का प्रयोग करते हैं, ऐसे रूप भी सुनिश्चित हैं। यही स्थिति अन्य आदिवासी जातियो की है। इनके अतिरिक्त व्युत्पादक प्रत्ययों की बडी संख्या भी है जो मूल प्रकृति से व्युत्पन्न प्रकृति का निर्माण करती है। ऐसे प्रत्यय देशी, विदेशी, संस्कृत तथा तत्सम हैं। कुछ ऐसे भी रूप भी प्रचलित हैं जो मध्यकालीन आर्यभाषाओं के परिवर्तन के परिणाम स्वरूप नया प्रत्यय बना लेते हैं।

जैसे-

लौहकार से - लोहार
स्वर्णकार से - सोनार

इन तद्भव' रूपों में प्रयुक्त /आर/ ,जो प्रत्यय की तरह दिख रहा है,वह /कार/ का तद्भव रूप है और कार्य सस्कृत में प्रत्यय नहीं है। कुछ ऐसे भी प्रत्यय प्राप्त हैं,जिनकी मूल प्रकृति संस्कृत की है और प्रत्यय भी तत्सम। यह व्युत्पादक रूप शब्द के पहले जुड़कर एक नई प्रकृति गढ़ने में सक्षम हैं।

जैसे-

गम - दुर्गम
 - दुर्गति

शेषरूप सामान्यतया तद्भव हैं और नयी प्रकृति के गठन में सक्षम हैं।

जनपद में प्रयुक्त व्युत्पादक प्रत्यय :

व्युत्पादक प्रत्यय पदग्रामिक सरचना का भाग होते हैं तथा धातु या प्रातिपदिक के पहले या बाद में जुड़कर एक नया रूप व्युत्पन्न करते हैं।

9.1 पूर्व प्रत्यय

इस क्षेत्र की बोलियों में निम्नांकित पूर्व प्रत्ययों का व्यवहार मिलता है-

१ /अ/— यह अभावबोधक पूर्व प्रत्यय संज्ञा के पूर्व आकर संज्ञा तथा विशेषण के पूर्व आकर विशेषणों का निर्माण करता है।

सज्ञा -	भाव	- अभाव
	काज	- अकाज
विशेषण-	छूत	- अछूत
	कलंकी	- अकलंकी

२. /अन्/— यह पूर्व प्रत्यय संज्ञा, विशेषण तथा क्रिया विशेषणों के पूर्व प्रयुक्त होता है, तथा नया रूप बनाता है।

जैसे-

अन - मन	-	अनमन
अन्- मेल	-	अनमेल
अन - पढ़	-	अनपढ़

३ /उ/– यह पूर्व प्रत्यय या तो स्थिति की सूचना देता है या दिशा की, तथा तद्भव रूपों में ही प्रयुक्त है।

जैसे -

तरि - उतरि

भरि - उभरि

भोजपुरी भाषी क्षेत्र में अभाव के अर्थ में भी इस पूर्व प्रत्यय का प्रयोग देखा जाता है।

जैसे-

उ- दन्त - उदन्त (वह पशु जिसे दात न जमा हो)

४ /ओन्/– यह पूर्णांक बोधक सख्यावाचियों के पूर्व प्रयुक्त होता है तथा एक कम का अर्थ प्रकट करता है।

जैसे - ओनइस

५ वे शब्द जो सस्कृत से आकर बोलियों में प्रयुक्त है, उनमें प्रयुक्त सस्कृत के उपसर्ग भी आ गये है।

जैसे - कु, नि, सु आदि

इनसे कुचाल, निरबस, सुकाल जैसे रूप बनकर सामान्यतया प्रचलित हैं।

६. कुछ विदेशी शब्द भी बोलियों में प्रचलित हैं, उनके कारण बे-, दर- जैसे उपसर्ग भी पूर्व प्रत्ययों की तरह चल रहे हैं। सामान्यतया धागर जाति में प्रत्ययों की यह प्रक्रिया प्रचलित नहीं है। जहाँ ऐसे शब्द इनमें मिल भी जाते हैं, वे स्थानीय आर्य भाषाओं के प्रभाव का परिणाम हैं।

9.2 व्युत्पादक परप्रत्यय

परप्रत्यय प्रातिपदिकों को अथवा धातुओं के बाद जुडते हैं तथा नई प्रकृति व्युत्पन्न करते हैं। इस तरह व्युत्पन्न प्रकृति के बाद जुड़कर व्याकरणिक प्रत्यय अथवा विभक्तिया पद रचना में सहायक बनती हैं।

धातु से संज्ञा पद बनाने वाले परप्रत्यय

१. -वाह

√चर धातु के बाद इसे जोडकर संज्ञा पद बनता है।

जैसे- चरवाह

सज्ञा के बाद भी जोड़कर संज्ञा रूप बनता है।

जैसे- हर - वाह - हरवाह

२ -वइया

धातु में जोडकर संज्ञापद बनता है।

जैसे- सूत - सूतवइया।

३ -अका

धातु के बाद जोडकर इससे सज्ञारूप बनाया जाता है।

जैसे - बइठ - अका - बइठका

४. -अक

धातु के बाद इसे जोड़कर संज्ञारूप बनता है।

५. ती-

धातु के बाद इसे जोडकर सज्ञारूप बनता है।

जैसे -√बढ - ती - बढ़ती

सज्ञा के बाद जुड़कर संज्ञा बनाने वाले व्युत्पादक प्रत्यय

१. **/आ/**- भूत - आ - भुताह

२. **/ई/**- आह तथा वा प्रत्यय जोड़कर व्युत्पन्न रूपों के बाद यह प्रत्यय जुडता है, तथा नया रूप बनाता है।

जैसे - चरवाह - ई - चरवाही

३. **/आरि/**- संज्ञा रूपों के बाद जुडकर नया रूप व्युत्पन्न होता है।

जैसे- दूध - दूधारि

४. **/आउर/**- सज्ञा के बाद जोडकर नया संज्ञा पद बनता है तथा स्थान का परिचय देता है।

जैसे -

नानी	-	ननिआउर
काकी	-	ककिआउर

५ **/आड़ी/**- संज्ञा तथा क्रिया विशेषणों के बाद जोड़कर नये रूप निष्पन्न होते हैं।

जैसे -

आगे	-	अगाडी
पाछे	-	पछाड़ी
खेल	-	खेलाडी

६. **/अउती/**- संज्ञा में प्रयोग कर नया संज्ञा रूप बनता है।

जैसे-

मान	-	मनउती
बाप	-	बपउती

७. /**अउरी**/– संज्ञा पदों के बाद जोडकर नये सज्ञा पद बनते हैं।

जैसे-

हाथ	-	हथउटी
चूना	-	चुनउटी

८. /**आई**/– संज्ञा तथा विशेषण के बाद जोडकर नये संज्ञा रूप बनते हैं।

जैसे-

लइका	-	लइकई
बूढ	-	बुढाई

९ /**आस**/– विशेषण के बाद जोड़कर संज्ञा रूप बनते हैं।

जैसे-

मीठ	-	मिठास

१० /**अइला**/– संज्ञा में जोडकर विशेषण रूप बनते हैं।

जैसे-

घर	-	घरइला

११. /**हड़ा**/– सज्ञा के बाद जोड़कर सज्ञा रूप व्युत्पन्न होता हैं।

जैसे-

घीउ	-	घीबहडा

१२ /**हर**/– संज्ञा में प्रयोग कर सज्ञा रूप बनता हैं।

जैसे-

मूड	-	मुडहर
गोड	-	गोडहर

१३ /**ही**/– सज्ञा में जोड़कर संज्ञा तथा विशेषण रूप बनते हैं।

जैसे-

खूटा-	ही-	खुटही
नून	ही-	नुनही

१४. /**गर**/– सज्ञा में जोड़कर विशेषण रूप निर्मित होते हैं

जैसे-	राखि	-	राखिगर
	आंखि	-	अंखिग

विशेषणवाची व्युत्पादक परप्रत्यय

१. /इत/- धातुओं तथा सज्ञा रूपों के बाद जोडकर इससे विशेषण रूप बनते है।

ओझा- इत - ओझइत

लाठी- इत - लठ्इत

२. /हा/- संज्ञा में जोड़कर विशेषण रूप बनता है।

गांठि- हा - गंठिहा

दक्खिन- हा - दखिनंहा

३ /उड़/- सज्ञा, धातु तथा क्रिया विशेषणों के बाद जोडकर इससे विशेषण रूप बनते हैं। जैसे-

राखि - रखउड़

माज - मजउड

पाछ - पछउड

४ /ऊंछ/-सज्ञा के बाद जुड़कर विशेषण रूप बनते है।
जैसे-

तेल - तेलऊँछ

५. /ठा/- विशेषण के बाद जुड़कर यह विशेषण रूप बनाता है।
जैसे-

सूख - सुखठा

६. /था/- पूर्णांकबोधक विशेषणों के बाद इसे जोड़कर, क्रमवाची विशेषण बनते है।
जैसे-

चारि - था - चउथा

७. /सर/सरा/- दो तथा तीन पूर्णांक बोधकों के बाद इसे जोड़कर क्रमवाची विशेषण रूप बनते है।

जैसे- दूई - सर - दुसर

तीन - सर - तीसर

दू - सरा - दूसरा

तीन - सरा तिसरा

८ /वां/- पूर्णांक बोधक पांच से विभाजित होने वाली सख्याओं के बाद जुडकर यह क्रमवाची बनाता है।

जैसे-

पंचवा

चालीसवां

सौंवा

९. हरा/सरा/बरल-

पूर्णांक बोधक विशेषणों के बाद इन्हें जोड़कर आवृतिवाची विशेषण बनते है।

जैसे-

इकहरा

दुसरा

तेवरल

9.3 व्याकरणिक पर प्रत्यय

संज्ञा, सर्वनाम तथा विशेषण, साथ ही धातुए अपने मूल रूप के बाद विभक्तियों का प्रयोग करके पदों का निर्माण करती हैं। विभक्तियां की चर्चा इन प्रकरणों में स्वतत्र रूप से हो चुकी है। पदों के बाद प्रयुक्त होने वाली कुछ ऐसी इकाइया भी हैं, जो परसर्ग नहीं हैं, लेकिन इनका प्रयोग अवधारण के लिए अर्थ पर बल देने के लिए होता है। संस्कृत व्याकरण शास्त्र इन्हें निपात कहता है। ऐसे प्रत्ययों का विवरण नीचे अंकित है।

१ /त/- इसका प्रयोग निश्चय के अर्थ में होता है।

सज्ञा - भात त चूरि गयल।

सर्वनाम- हम त न खाब।

क्रिया विशेषण- नेवर त लागी।

क्रिया - आयल त बांय।

सूति त गयल।

२ /उ/- इसका प्रयोग सज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया विशेषण तथा क्रियाओं के बाद होता है।

सज्ञा - लइकउ त जात।

सर्वनाम- इहउ, उहउ।

विशेषण- कइसउ, जइसउ।

क्रिया विशेषण- अवहिउ, तबहिउ।

क्रिया- खवइअउ।

३. /इ/- इसका प्रयोग संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया विशेषण एवं क्रिया पदों के बाद होता है।

सज्ञा -	नाम	-	नावइ
सर्वनाम-	हम	-	हम्मइ
विशेषण-	छोटा	-	छोटकइ
क्रिया विशेषण-	आगे,	-	आगइ
	पाछे -		पाछइ
क्रिया-	आवत -		अउतइ
	जात -		जातई

४ /ह/- यह इ का संपरिवर्तक है तथा यह संबंध बोधक स्थिति बनाता है।
जैसे-

गाइ क बच्चा।
गाइह क बच्चा

यहा ह, ही के अर्थ में प्रयुक्त है।

५. /ठे/गो/- सख्यावाची विशेषणों के पश्चात् इसका प्रयोग होता है। ठे सोन के उत्तर तथा गो, सोन के दक्षिण में प्रचलित है।

जैसे - एक ठे, दूइ ठे, तीनि ठे
एकगो, दुगो, तीन गो।

... .

परिशिष्ट

धागर जाति की शब्दावली

अ

अन्नुम	-	उसमें
अड़डो	-	बैल
अल्ला	-	कुत्ता
असमा	-	रोटी
अम्म	-	पानी
अन्ने	-	वैसा
अइया	-	वहाँ
अक्कून	-	अब
अमरवी	-	सब्जी

आ

आस	-	वह (पु०)
आद	-	वह (स्त्री)
आसके	-	उसका
आतम्बस	-	उसके पिता
आसिम	-	जो
आर	-	वे

इ

इजो	-	मछली
इन्ना	-	आज
इतरा	-	इधर
इया तक	-	यहाँ तक
इसन	-	यहाँ
इंजना	-	खड़ा होना
इदितरा	-	इस ओर

ई

ईरीगे	-	इनको
ईबम्मे	-	इतना ही
ईद	-	यह (स्त्री)
ईस	-	यह (पु०)

उ

उबग्गे	-	उतना
उतरा	-	उधर
उइयख	-	खयका

ऊ

अयोन	-	रखना

ए

एगहा	-	मेरा
एमहा	-	हमारा
एग्गा	-	मुझको
एंण	-	दो
एकना	-	चाल
एम्बरना	-	नहाना
इजकाचता रई	-	रोका गया
एनम	-	ऐसे ही
एगडीं	-	बहन
एबस	-	बाप (अपने)
एदादस	-	भाई
एगदीदी	-	बडी बहन
एनाजोस	-	बाबा
एगमेटस	-	बहनोई
एण	-	दो
एम्बा	-	मीठा

ओ

ओन्टा	-	एक
ओन्डकन	-	खाया
ओन्दरोत	-	मुझको
ओनोन	-	खाउंगा
ओनोस	-	खायेगा
ओक्कना	-	बैठना
ओरोख	-	नाखून
ओसगा	-	चूल्हा
ओनरो	-	पीना

क

कुकेर - लडकिया
कुक्कोस - लड़का
किया - नीचे
क्स्सि - सुअर
कच - बाल
कोकोरो - मुर्गा
कामरी - अब
कुडता - उबालना
काना - जाना
कोहा - बड़ा
कुकेर - लड़की
कुक्कोर - लडके
किरना - शीतल
कूल - पेट
केडा - केला

ख

खुलरौको - खुल जायेगी
खोखा - पिछला
खद्दर - लडका
खेबदा - कान
खल्ली - चाची
खईद - दुल्हन
खेख - हाथ
खेद - पैर
खाड - नदी
खेस - धान
खेर - मुरगी
खेंसो - लाल
खेया - मरना
खज्ज - मिट्टी
खल्ल - खेत
खन्न - आँख
खैका - सूखा

च

चेरो	-	कल
चींचना	-	पोंछना
चाली	-	आंगन
बाली	-	दुआर
चोंक्ना	-	उठना
चींवा	-	चूजा
चिठगा	-	पीपल
चिच्व	-	आग
चिया	-	पिलाना
चइयां	-	भीगना
चाखा	-	बोना
चींचना	-	पोंछना
चींखदन	-	रोना
चपटे	-	त्वचा

ज

जम्बू	-	जामुन

ट

टठगा	-	आग
टिनी	-	मधुमक्खी

ड

डोको	-	टोकरी

ठ

ठेक्का	-	मटका

त

तीखिल	-	चावल
तिंगली	-	मक्खी
ताची	-	बुआ
तुदा	-	उड़ेला

द

दहोय	-	भईया

न

नासगो	-	भाभी
नानस	-	नाना
नींनिंग	-	आप ही
नखंग	-	किसी का
नेखा	-	किसका
निगहा	-	आपको
नीन	-	तुम
नीम	-	तुम सब
नेई	-	साप
निम्बस	-	उसके पिता
नूजाली	-	पीड़ा
ने	-	कौन
ननादै	-	करना

प

पच्चा	-	पुराना
पूना	-	नया
पारवल	-	पत्थर
पैरि	-	सबेरा
पल्ल	-	दांत
पड़या	-	जाडा
पागा	-	पगड़ी
पचे	-	पांव
परिमिया	-	काटना
पान	-	बैर
पद्दा	-	गांव
पड़दन	-	गाना

ब

बेरखा	-	बिल्ली
बटुरा	-	मटर
बचेरकन	-	आना
बिता	-	भूनना
बरचस	-	आना
बाचकन	-	बोले

भ

भइयसिन	-	बच्चे को

म

मनोय	-	मानों
मेन्ताचसा	-	सुनाई
मामुस	-	मामा
मेहो	-	बकरी
मडी	-	चावल
मोच्चा	-	मुँह
माखा	-	रात
मुक्कर	-	स्त्री
मेटर	-	पुरूष
मानी	-	सरसों
ओढइला	-	मोर
मन्न	-	पेड
मून	-	तीन
मोक्खोय	-	खाना
मुधता	-	अगला

र

रहचय	-	देखते रहे
रानिद	-	रानी
रादन	-	है
राजस	-	राजा

ल

लधरना	-	जलना
लवा	-	मारना
लुरिया	-	लपेटना

व

बाड़ा	-	बरगद
वरना	-	आना

स

सन्ने	-	छोटा
सुइये	-	छ

ह

होखरे	-	परसों

मैं खाता हूँ	-	एन मोखदन।
हम खाते हैं	-	एम मोखदम।
तुम खाते हो	-	नीन मोखदय।
तुम खाती हो	-	नीन मोखदी।
वह खाता है	-	आस मोखदस
वे खाते हैं।	-	आर मोखदर।
वह है	-	आस रास
मैं हूँ	-	एन रास
तुम हो	-	नीन रास
मैं देख रहा हूँ	-	एन एरादन
हम देख रहे हैं	-	एम एरादम
तुम देख रही हो	-	नीन एरादी
तुम देख रहे हो	-	नीन एरादय
वह देख रहा है	-	आस एरादस
वह था	-	आस रहचस
वह थी	-	आद रहचा
तुम थे	-	नीन रहचक्य
मैं था	-	एन रहचक्न
हम थे	-	एम रहचक्म
वह गया	-	आस केरस
वे गये	-	आर केरर
वे गईं	-	आद केरा
तुम गये	-	नीन केरक्य
मैं गया	-	एन केरक्न
हम गये	-	एम केरक्म
वह देखता था	-	आस एरा लग्यिस
वे देखते थे	-	आर एरा लग्यिर
वह देखती थी	-	आद एरा लग्यिा
तुम देखते थे	-	नीन एरा लवक्य

मैं देखता था	-	एन एरा लक्कन
हम देखते थे	-	एम एरा लक्कम
उसने देखा है	-	आस एरका रास

वे होते	-	आर राना
वह होता	-	आस राना
तुम होते	-	नीन राना
तुम सब होते	-	नीम राना
हम होते	-	एम राना
मैं होता	-	एन राना

वह हुआ	-	आस मंचस
वे हुये	-	आर मंचर
तुम हुये	-	नीन मचक्कय
तुम सब हुये	-	नीम मंचक्कय
मैं हुआ	-	एन मचक्कन
हम हुये	-	एम मंचक्कम

वह देखता रहता था	-	आस एरनू रहचस
वे देखते रहते थे	-	आर एरनू रहचर
तुम देखते रहते थे	-	नीन एरनू रहचक्कय
तुम सन देखते रहते थे	-	नीम एरनू रहचक्कय
मैं देखता रहता था	-	एन एरनू रओम
हम देखते रहते थे	-	एम एरनू रओम

मैंने देखा होता	-	एन एरका होले
तुमने देखा होता	-	नीन एरका होले
उसने देखा होता	-	आस एरका होले

मैं देखता होता	-	एन एरदन मनोन अने।
तुम देखते होते	-	नीन एरदय मनोय अने
वह देखता होता	-	आस एरदस मनोस अने
वे देखते होते	-	आर एरनर मनोर अने।

वह देखता रहता	-	आस एरनुम रौस अने
वे देखते रहते	-	आर एरनुम रौर अने

तुम देखते रहते	-	नीन एरनुम रौय अने
मैं देखता रहता	-	एन एरनुम रौन अने
हम देखते रहते	-	एम एरनुम रौम अने

वह खायेगी	-	आद ओनो
वह खायेगा	-	आस ओनोस
वे खायेगें	-	आर ओनोर
तुम खाओगे	-	नीन ओनोय
तुम सब खाओगे	-	नीम ओनोय
मैं खाऊँगा	-	एन ओनोन
हम खायेगें	-	एम ओनोम

तुमनें देखा होगा	-	नीन एरकादय मनो
मैंने देखा होगा	-	एन एरकादन मनो
उसने देखा होगा	-	आस एरकादस मनो
हमने देखा होगा	-	एम एरकादम मनो

वह होगा	-	आस मनोस
वे होगें	-	आर मनोर
मैं हूगा	-	एक मनोन
हम होगें	-	एम मनोम
तुम होगें	-	एन मनोय
वे सब होंगे	-	एम मनोय

उसने देखा होगा	-	आस एरियस मनो
मैंने देखा होगा	-	आस एरियस मनो
तुमने देखा होगा	-	नीन एरकय मनो
हमने देखा होगा	-	एक एरकम मनो

वह देखती होगी	-	आद एरी मनो
तुम देखते होगे	-	नीन एरकय मनो
वह देखता होगा	-	आस एरा मनों
मैं देखता होंउगा	-	एन एरदन मनो
हम देखते होंगे	-	एम एरदम मनो

तुम बोलो	-	नीन चाल नना।
वे बोले	-	आर चाल नंचर
वह बोला	-	आस चास नचस
हमने खाया	-	एम ओंडकम
तुमने खाया	-	नीन ओंडकय
उसने खाया	-	आस ओन्डस
मैंने खाया	-	एन ओंडकन
जाना पड़ा	-	कलागे मंवा
भागना चाहता हूँ	-	नेहा चहादन
शायद ठहरे	-	सझत रूकोरस
मैंने तोडा	-	एन एस्सकन
उस (पु०) ने तोड़ा	-	आस एस्सस
(स्त्री) ने तोड़ा	-	आद एस्सा
उन लडको ने तोड़ा	-	आ खद्दर एस्सर
जल्दी आना	-	हाली एंग करके।
बना- बनाया	-	कमरका- कमरकग
आज की रात बडी डरावनीथी-		इबता माखाऊथेर एलकताना लेखा रहचा।
इसतक	-	इदीउत्ते
उन तक	-	आस उत्ते
हमारे जैसा	-	नमहा लेखा
जिस किसी का	-	नेखा दिम
पैर का घाव	-	खेद ता खादी
डूब मरो	-	मुल्खा के खेया कला
बच्चे को लिटा दो	-	भइयासिन किदाचिया
वह तोड़ता है	-	आस एसदस
कौन जाती है	-	ने कई
मैं सुनंगा	-	एन मेनोन
मैं गाता हूँ	-	एन पड़दन
मैं सोता हूँ	-	एन चूतदन
मैं तुमसे प्यार करता हूँ	-	एन निमहतुस प्यार नंदन।
तुम दोनों	-	नीन इुन्नेझने आने
हम बनाते हैं	-	एम कमदम
हम बोले	-	एम बाचकम
तुम बोली	-	नीन बाचकी
तुम बोले	-	नीन बाचकय
करना होगा	-	ननामे मनो

	-	एम्बराकय
नहाकर	-	असमा मोक्की
रोटी खाई	-	मडी औंड़कन
भात खाया	-	आस रामसतुरू खखरस मनो
वह राम से मिला होगा	-	आस एगागे मनो।
उसे दौड़ाना पड़ेगा	-	एगहा तुरू मा रहिकेरा
हमसे न रहा गया	-	एन मा ओंदन
मैं नहीं पीता	-	एगजी तैया
दादी ने भेजा	-	बिच्छी द परिमिया मनो
बिच्छू ने काटा होगा	-	ओक्करा
बैठे रहो	-	एरका कई
देखा हुआ	-	इस एस्सस
इसने तोड़ा	-	नोकरानी चींखलिया।
नौकरानी रोती थी	-	एन चींखदन
हम रो रहे हैं	-	खद्दर एगहा बात मना
बच्चे मेरी बात सुन लो	-	सन्ने एंगडी के ननद बीमार रई।
छोटी बहन की ननद बीमार है	-	जी घबड़ारी
जी घबडाता है	-	आद नचाहेलरा
वह नाचने लगी	-	आसगे खाना मापची
उसको भोजन नहीं पचता	-	मक्का तुरू बात खुलरौक्को
पूछने से बात खुल जायेगी	-	लाला तीखिल का भाव तुरू बीस दै
लाला चावल किस भाव बेचते हो	-	नींगहा ते ता अड्डू बढ़िया री
तुमसे तो पशु अच्छे हैं	-	मुलेखना सगे तन्नी सा सहारा
डूबते को तिनके का सहारा	-	चिच लहारा ली
आग जल रही है	-	चदरा नू छींट लक्की रई
चादर पर छींटे पड़ी है	-	एंगहा दाहिन खेख चिलगा लगती
मेरी दाहिनी हथेली खुजला रहीहै	-	आस शिकारीसीन ओन्टा कहनी मेन्ताचसा
उसने शिकारी को एक कहानी सुनाई	-	एन किनारेनू इज्जकक्कन
मैं किनारे पर खड़ा था	-	बुखारतुरू तीनों अने बीमार रानर
बुखार से तीनों जन बीमार है	-	घीउ मोखोय होले मोटारोय अन्ने
घी खा लोगों तो तगड़े हो जाओगे	-	खईद घूंघटतुरू एरसिया
दुल्हन घूंघट से देख रही थी	-	अक्कुन आस मा बरचस
क्या वे अभी नहीं आयें	-	आस बरोस होते निगहतुरू मिलओन चिओन।
वह आयेगें तो भेंट करा दूंगा	-	अक्तुर एन्दरा चाहदय।
और क्या चाहते हो।	-	अगर पुइना होते अकाल मा मनो अनके।
यदि वर्षा न होती तो अकाल न पड़ता	-	आद निगहा तुरू लजरी।
वह तुमसे लजाती है	-	

वह तुमसे लजाती है	-	आद निगहातुरू लजरी।
वह तुमसे लजाता है	-	आस निगहातुरू लजेरदस।
पॉव में दर्द होने लगा	-	खेद्दनू नुजाहेलरा।
गॉव के गॉव जल गये	-	पद्दा के पद्दा उलिया केरा।
मोहन तुम क्या कर रहे हो	-	मोहन नीन ऐंदरा ननादय।
उसने यह पशु सत्तावन रूपये में खरीदा	-	आस अड्डू सत्तावन रूपिया नू उड्डयस
वह दांतो से चबाता है	-	एम पल्ल तू चबदत
तुम तो मजाक-मजाक में नाराज हो जाती हो	-	नीन त मजाक-मजाक नू गुस्सारदी कादी
तू ला	-	नीन उदरा
मैं लाऊँ	-	एन ओन्दरोन
हम लायें	-	एम ओन्दरोम
चटाई पर बैठिये	-	पिट्टी नू ओक्का
सुनार ने जेवरगढ दिये	-	सुनारस जेवर गढचस केमा चिच्चस
उससे दवाई नहीं पी जायेगी	-	आस तुरू दवाई मा ओनरो
यह गगरा भर लें तो चलें	-	इ गगरन नींदोन होले कौन
आंगन में पानी छिडको	-	चाली नू अम्म छिडका
मेरा एक भाई होता तो बडा सुख होता	-	एंगहा ओन्टा भाइस राना होला बडा सुख रओ अनेक
चार हफ्ते हो गये तुमने भाडा नहीं दिया	-	हफ्ता मचा केरा नीन भाड़ा मा चीच्च के नहीं दिया
तुम मेरी मदद क्या करोगे	-	नीन ऐंगहा सहायता एन्दरा ननोय
जहॉ तुम वहॉ हम हैं	-	कइया नीन रादय अइया एन हूँ रादन
हम आये और तुम उठे तक नहीं	-	ऐन क्चेरकन अउर नीन मा चोंचकय
अगर मेरे पास होता तब भी न देता	-	अगर एंगहादय राना होले तन्नो मा चीओन अनके
वह घर पर नहीं था	-	आस एड़पा नू मा रहचस
पहली पत्नी मर गई	-	पहिले ता खईद केच्चा केरा

अन्य आदिवासियों मे प्रचलित अपनी शब्दावली

टेंगल	-	झाका	(चेरो)
माटो	-	बहनोई	
डउकी	-	लडकी	
डउका	-	लड़का	
कतह	-	कहाँ	
झरिक	-	फेकना	
गुठियाइब	-	बात करना	
खुलखुल	-	घूंघट	
अने	-	लोग	
एडरा	-	नर	
मयारी	-	मादा	
कोपर	-	घुटना	
एनसोत	-	ये	
ओनसोत	-	वे	
परबिन	-	सकता	
महुन	-	मैंने	
तहुन	-	तुमने	
दीया	-	दीमक	
एन्ने	-	इधर (खरवार)	
मा	-	हम	
ता	-	तुम	
पारिह	-	सकता	
माहिन	-	मैंने	
तहुन	-	तुम भी	
डेरी हाथ	-	दाया हॉथ	(गोड़)
एहलंग	-	इस ओर	
ओहलग	-	उस ओर	
कनया	-	दुल्हन	
मइया	-	लड़की	
नरेटी	-	गला	
बेहरी	-	बारी	
वह बोली	-	ओहू बोलिस	(गोड़) सोन के दक्षिण
उन लड़को ने तोड़ा	-	उ लड़कन मन टोर दिहिन	(गोड़)
हम देखते रहते	-	महुन देखत रहतौं	(गोड़)
वह था	-	ओइ रहतिस	

कौन जाती है – कउन जाथी

तू बोलता है – तो गोठ पालस

मैनें तोडा – मा टोरलू

कहाँ जा रहे हो – कतह जाला (चेरो)

कहाँ जा रही हो – कतह जास

दरोगा आया है – दरोगा ओल बाट

गये थे – गोल बाटी

वह खिडकी से झांका – उ गली ले टेंगल

सब गये – कुलझें गइनीन

जाऊंगा तो ले आऊंगा – जइम त ले आइम

सुला दो – झनगाय दे

मैं सुनुगां – मोय सूतम

मैं जाउंगा – मोय जइम

मैंने देखा होगा – महुन देखनू

वे थे – सोनसोत रहले

मैंने तोडा – महिन तोड़े (खरवार)

किसी के लिये – केकरो खातिन

वह देखा करता था – उ देखत रल्ह (थरुआर)

वह देखा करती थी – उ देखत रन्हिउ

मैंने देखा होगा – मा देखत बनो

तुम देखती होगी – ता देखत रल्हिस

मैं देखता होता – मा देखत रल्हिउ

वे देखते रहे – उसब देखत रन्ह

वे देखती रही – उसब देखत रन्हिन

मैं होता – म रहतो

मैं होती – म रहतिउ

वह है – उ लागै

तुम हो – त लागस

तुम होगी – तब रल्हिस

हम होगें – म रन्हों

मैं हूंगी – म रन्हिउ

पुस्तक सूची

1 A Course ın Modern lınguıctıcs - Hockett - Oxford Publıcatıon - New Delhı

2 Language ın Culture and Socıety - Dell Hymes - Allıed Publıcatıon Pvt Lımıted Bombay

3 The Trıbe and castes of North Western Indıa Vol 2,3,4 - W Crooke - Cosmo Publıcatıon Delhı

4 Prımıtıve Indıa - Vıtold De Golısh - George G Hesep Co Ltd London.

5 Out lıne of lıngustıc Analysıs - Block and Trager - Lıngustıc Socıety of Amerıca

6 Hıstory of Caste ın Indıa - S V Ketker - Rawat publıcatıons Jaıpur

7 Trıbe and castes of the Central provınces of Indıa - R V Russell and Hıra Lal Vol 1, 2 - Cosmo Publıcatıon Delhı

8 Lınguıstıc Survey of Sadar Sub Dıvısıon of Manbhumı and Sınghbhumı - Vıshwanath Prasad - Bıhar Rastra Bhasha Parıshad Bıhar

9 Out Lıne of lınguıstıc Analysıs - K L Pıke

10 भारतीय जन सस्कृति – डी एन मजूमदार, अपाला प्रकाशन – मुद्रण सहकारी समिति लिमिटेड लखनऊ ।

11 उत्तर प्रदेश की जनजातियॉ – अमीर हसन – उत्तर मध्य सास्कृतिक केन्द्र इलाहाबाद ।

12 सोन के पानी के रग – देव कुमार मिश्र

13 अवधी का विकास – डा0 बाबूराम सक्सेना

14 भोजपुरी का उद्भव व विकास – डा0 उदय नारायण तिवारी

15. मानव और सस्कृति – यूमिलान कोमलेम – प्रगति प्रकाशन मास्को

16 मीरजापुर डिस्ट्रिक गजेटियर (अग्रेजी संस्करण)

17 पत्रिकाए – लिंग्विस्टिक्स, भाषा, उत्तर प्रदेश